वर्ष 2024-25

शिखा

महाविद्यालय पत्रिका

शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय

शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर

सम्बद्ध : सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

www.sppgcollege.co.in, E-mail : shivpatipgcollege@gmail.com, sppgcollege604@gmail.com

परमपूज्य स्व. राजा शिवपति सिंह जी

संस्थापक

शैक्षिक क्रान्ति के कुशल प्रणेता, हे युग दृष्टा तुम्हें नमन।
शिवपति सिंह शोहरत के लाल, हे ज्ञान प्रकाशक तुम्हें नमन।

राजा योगेन्द्र प्रताप सिंह
प्रबन्धक

प्रो. अरविन्द कुमार सिंह
प्राचार्य

सम्पादक मण्डल

डॉ. धर्मेन्द्र सिंह
मुख्य संपादक

डॉ. अरविन्द कुमार सिंह
सह-संपादक

डॉ. राम किशोर सिंह
सह-संपादक

डॉ. प्रवीण कुमार
सह-संपादक

डॉ. अजय कुमार सिंह
सह-संपादक

प्राचार्य की कलम से ..

सन्तुलित शिक्षा एवं विवेकशील युवाशक्ति पर ही राष्ट्र की प्रगति तथा देश का विकास निर्भर करता है। शिक्षा से ही हमें ज्ञान की प्राप्ति होती है तथा शिक्षा ही उन्नयन का मूल है। शिक्षा ऐसी हो जिससे न केवल राष्ट्र बल्कि सम्पूर्ण मानवता भी लाभान्वित हो। शिक्षा से ही बौद्धिक स्थायित्व तथा आत्मबल का संचार होता है जिससे हम संकटों तथा चुनौतियों का शमन करते हैं।

भारतीय शिक्षा सत्य, अहिंसा और सहिष्णुता के आदर्शों पर पुष्पित–पल्लवित होती रही है। भौगोलिक दृष्टि से संसाधनों से परिपूर्ण हिमालय की तराई का यह क्षेत्र अज्ञानता, अशिक्षा से व्याप्त था। अशिक्षा के अंधकार की व्याप्ति को दूर करने के लिए, शोहरतगढ़ राजघराने के अनमोल रत्न 'राजा शिवपति सिंह जी' ने शिवपति महाविद्यालय की स्थापना सोद्देश्य किया। यह संस्थान अपने स्थापना काल से ही अनुशासन प्रिय तथा कर्तव्यनिष्ठता के लिए प्रख्यात रहा है और राष्ट्र के लिए आदर्श नागरिक बनाने में अपना अमूल्य योगदान देता रहा है।

शैक्षिक संस्थान की पत्रिका का प्रकाशन केवल परम्पराओं का अनुपालन ही नहीं होता अपितु यह संस्थान के चरित्र का प्रकाशन होता है तथा वर्ष–प्रतिवर्ष होने वाले परिवर्तन, उपलब्धियों के प्रेरणा परक तरीके से बताता है। पत्रिका सामान्य विषय के पाठ्यक्रमों से इतर महाविद्यालय की साहित्यिक–सांस्कृतिक क्षमताओं की अभिव्यक्ति है।

छात्र–छात्राओं द्वारा प्रेरित सभी रचनाओं का संकलन एवं सभी का मुद्रण व प्रकाशन संभव नहीं हो सकता। अप्रकाशित रचनाकारों से आग्रह है कि वे हताश न हों तथा अपनी रचना को परिमार्जित करें। सफलता अवश्य मिलेगी।

पत्रिका का प्रकाशन सामूहिक प्रयास से ही संभव होता है और मैं सम्पादक मण्डल का धन्यवाद दूँगा जिनके अथक प्रयास, बहुमुखी ज्ञान से पत्रिका का वर्तमान स्वरूप सामने है। विद्वान प्राध्यापकों ने अपनी रचनाओं से पत्रिका को गुरुता प्रदान की। पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी शिक्षक–शिक्षणेत्तर छात्र–छात्राओं को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। मुद्रण सम्बन्धित या मानवीय त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थना के साथ शिवा पत्रिका को पाठकों के कर कमलों में अर्पित करता हूँ।

धन्यवाद !

शिक्षा

वर्ष 2024-25

सम्पादक मण्डल

मुख्य-सम्पादक

डॉ. धर्मेन्द्र सिंह

सह-सम्पादक

डॉ. अरविन्द कुमार सिंह

डॉ. राम किशोर सिंह

डॉ. प्रवीण कुमार

डॉ. अजय कुमार सिंह

संरक्षक

श्री राजा योगेन्द्र प्रताप सिंह

प्रबन्धक

प्रो. अरविन्द कुमार सिंह

प्राचार्य

शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय

सम्बद्ध : सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर

शिवा

महाविद्यालयी पत्रिका
शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय
शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर (उ.प्र.)

सत्र : 2024-25

प्रकाशक :
प्रो. अरविन्द कुमार सिंह
प्राचार्य
शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय
शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर

मुख्य सम्पादक
डॉ. धर्मेन्द्र सिंह

संरक्षक
श्री राजा योगेन्द्र प्रताप सिंह (प्रबंधक)
प्रो. अरविन्द कुमार सिंह (प्राचार्य)
शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय
शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर (उ.प्र.)

पत्रिका का सर्वाधिकार – महाविद्यालय के पास संरक्षित
– रचनाओं का समस्त उत्तरदायित्व लेखकों, रचनाकारों और संकलनकर्ताओं का

मुद्रक :
कमल आफसेट प्रिन्टर्स
दुर्गाबाड़ी, गोरखपुर
मो. 9451462653

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	लेखक/संकलनकर्ता	पृष्ठ सं.
1.	प्राचार्य की कलम से	डॉ. अरविन्द कुमार सिंह	
2.	सम्पादकीय	डा. धर्मेन्द्र सिंह	4
3.	शोहरतगढ़ संक्षिप्त परिचय	पंकज सिंह	5
4.	महाविद्यालय का संक्षिप्त इतिहास	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह	6
5.	प्राचार्य अनुक्रम		7
6.	महाविद्यालय परिवार		8
7.	संकाय	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह	10
8.	प्रयोगशाला	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह	10
9.	सेमिनार	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह	11
10.	राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)	डॉ. राम किशोर सिंह	12
11.	नैक (NAAC)	मेजर मुकेश कुमार	13
12.	छात्रावास एवं पुस्तकालय	डॉ. राम किशोर सिंह/डॉ. धर्मेन्द्र सिंह	14
13.	उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय		15
14.	पुण्यश्लोका अहिल्याबाई होल्कर	प्रो. अरविन्द कुमार सिंह	17
15.	निंदक नियरे राखिये	डॉ. अजय कुमार सिंह	23
16.	ठोस अवशिष्ट प्रदूषण	डॉ. विनोद कुमार सिंह	25
17.	NCC and Personality Development	प्रो. मुकेश कुमार	27
18.	वैदिक साहित्य की रूपरेखा	डॉ. सत्यनारायण दास	28
19.	भारत में भूगोल का विकास	डॉ. शिष्ट पाल सिंह	31
20.	Structural Transformation Safety	प्रो. मुकेश कुमार	34
21.	Nanomaterials	डॉ. उमाशंकर प्रसाद यादव	35
22.	Famous Stories in Mathematical History	देवेन्द्र सिंह	36
23.	Social Media Addiction & Students	डॉ. प्रवीण कुमार	38
24.	Indian Knowledge System	श्री शशि शेखर मिश्रा	41
25.	Laser Defence System	डॉ. राम किशोर सिंह	43
26.	डिजिटल अरेस्ट	अश्वनी कुमार सिंह	45
27.	साहित्य में संस्कृति	डॉ. जयनारायण त्रिपाठी	49
28.	निर्धनता उन्मूलन में मनरेगा की भूमिका	दीपक मणि तिवारी	50
29.	Effect of Detergent on Aquatic Animals	श्वेता उपाध्याय	51
30.	सपनों की रात	शिवांश तिवारी	52
31.	भगवद्गीता की वर्तमान जीवन में प्रासंगिकता	डॉ. तुषार रंजन	53
32.	जन्मदिवस	शिवशंकर गुप्त	54
33.	पिता	शयरीन खातून	55
34.	बेटी बचाओ बेटी बचाओ	नगीता	56
35.	भोज्य पदार्थों में मिलावट	सोमनाथ	58
36.	नारी शक्ति	अनुष्का गोस्वामी	60
37.	Indian Education System	अबू शौद आलम	61
38.	Women Empowerment	प्रियंका यादव	62
39.	दोस्ती पर कविता	पूर्णिमा पाण्डेय	63
40.	प्लाज्मा (पदार्थ की चौथी अवस्था)	विवेक कुमार शुक्ल	64
41.	नारी तुम केवल श्रद्धा हो	सोनाक्षी चौधरी	65
42.	रह जाता कोई अर्थ नहीं	दीपा चौरसिया	65
43.	शिक्षक पर कविता	बबिता चौधरी	65
44.	हमारे जीवन में ओजोन परत के लाभ	बबिता चौधरी	66
45.	मेरा प्यारा बस्ता	अनुष्का दीक्षित	66
46.	नारी शक्ति को समर्पित कविता	अंजली चौधरी	67
47.	बड़ी खुबसूरत होगी तू ऐ! नौकरी	शालिनी वर्मा	68

सम्पादकीय

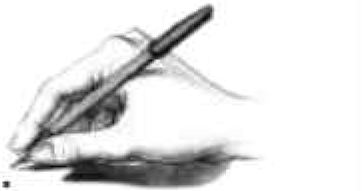

अपनी बात.....

महाविद्यालय की पत्रिका महाविद्यालय का दर्पण होता है जिसमें महाविद्यालय का इतिहास, भूगोल, वर्तमान, उपलब्धियाँ सभी का समावेश होता है तथा महाविद्यालय की सांस्कृतिक सर्जना का उद्‌घोष होता है। महाविद्यालय की पत्रिका छात्र/छात्राओं में अन्तर्निहित क्षमता तथा व्यक्तित्व निर्माण का सर्जक होता है। महाविद्यालय के सूत्रवाक्य 'विद्या ददाति विनयम' अर्थात विद्या से विनय मिलता है, और विद्या वही है जो मुक्ति दिलाती है, सा विद्या या विमुक्तये' मुक्ति अज्ञान से, अंधकार से, अकर्मण्यता से।

किसी भी महाविद्यालय का परम उद्देश्य संस्कारवान, संस्कृतिनिष्ठ एवं देशप्रेम युक्त नागरिक बनाना होता है जिससे आत्मनिर्भर स्वराष्ट्र की कल्पना साकार हो सके।

महाविद्यालय की पत्रिका 'शिवा' के मुख्य सम्पादक के दायित्वों का सफल निर्वहन कर सकूँ ऐसी मेरी अभिलाषा है। महाविद्यालय के छात्र/छात्राएँ, शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर बंधुओं ने अपनी रचनाओं से पत्रिका को अलंकृत किया है।

मैं प्राचार्य प्रो. अरविन्द कुमार सिंह जी को धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूँगा जिनके कुशल मार्गदर्शन, दूरदर्शिता तथा कर्मठता से शिवा पत्रिका का प्रकाशन सम्भव हो सका तथा महाविद्यालय शैक्षिक उन्नयन की तरफ अग्रसर है।

पत्रिका का प्रकाशन सामूहिक प्रयास से ही सम्भव हो सका। मैं सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों डा. अरविन्द कुमार सिंह, डा. राम किशोर सिंह , डा. प्रवीण कुमार व डा. अजय कुमार सिंह का आभारी रहूँगा जिनका सहयोग मिला जिससे पत्रिका परिमार्जित, परिष्कृत स्वरूप में आपकी मीमांसा हेतु प्रस्तुत है।

पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष व परोक्ष सहयोग करने वाले सभी शिक्षक–शिक्षणेत्तर सहयोगियों का हृदय से आभार तथा गलतियों के लिए क्षमा प्रार्थना के साथ पत्रिका विद्वान पाठकों के कर कमलों में अर्पित करता हूँ।

डा. धर्मेन्द्र सिंह

मुख्य सम्पादक

शोहरतगढ़ : संक्षिप्त परिचय

प्राचीन शाक्य गणराज्य तथा कालान्तर में बस्ती जनपद के उत्तरी भू-भाग के रूप में चाँदापार (वर्तमान - शोहरतगढ़) गरीबी एवम् अशिक्षा का केन्द्र बन गया था परन्तु राजा शिवपति सिंह जी के उत्थान पश्चात् चाँदापार विकास तथा प्रगति के रास्ते पर चल पड़ा।

प्राचीन चाँदापार प्रगति के चतुर्मुखी रथ पर बैठकर शोहरतगढ़ के रूप में कायान्तरित हो चुका है। शोहरतगढ़ की भोगौलिक स्थिति 27° 23'34"N तथा 82°57'24"E और समुद्रतल से 92 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

रेलमार्ग से शोहरतगढ़ गोरखपुर से पश्चिम में 91 किमी की दूरी पर तथा गोण्डा से 131 किमी उत्तर पूर्व स्थित है। राष्ट्रीय राजमार्ग सं.730 शोहरतगढ़ से होकर गुजरती है।

29 दिसम्बर 1988 से पूर्व शोहरतगढ़ (प्राचीन - चाँदापार) बस्ती जनपद का अभिन्न भू-भाग था पर उ0 प्र0 राज्य के 75 वें जनपद- सिद्धार्थनगर के गठन के साथ ही यह सिद्धार्थनगर जनपद में समाहित हो गया और इसे जनपद सिद्धार्थनगर की पाँच तहसीलों में सबसे बड़ा तहसील होने का गौरव भी मिला। एक जिला एक उत्पाद के अर्न्तगत विश्व प्रसिद्ध काला नमक चावल का उत्पादन भी इस शोहरतगढ़ तहसील में सबसे ज्यादा है।

यहाँ की जनसंख्या 35,000 से अधिक है जिसमें 52% पुरुष तथा 48% महिलाओं की जनसंख्या है। यहाँ की साक्षरता लगभग 60% है जो कि राष्ट्रीय गुणांक 59.5% से अधिक है। इसमें पुरुष साक्षरता 67% तथा महिला साक्षरता 51% है।

पंकज सिंह
कार्यालय अधीक्षक

महाविद्यालय
स्थापना का संक्षिप्त इतिहास

महाराजा शिवपति सिंह जी द्वारा स्थापित शिवपति एजूकेशनल ट्रस्ट द्वारा उच्च शिक्षा की महत्ता के दृष्टिगत शिवपति महाविद्यालय (1964) की नींव रखी गई । उच्च शिक्षा के उच्चतम् मानकों की अवधारणा, समाज तथा देश को अनुशासित, कर्तव्यनिष्ठ एवम् ईमानदार नागरिक देना ही इस महाविद्यालय का संकल्प है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1960 की धारा 2 (एफ) एवम् 12 (बी) के अन्तर्गत इस महाविद्यालय को मान्यता प्राप्त हुई तो इसके पावन, पवित्र उद्देश्यों को मानों पंख लग गये । इस महाविद्यालय की स्थापना का मूल उद्देश्य उच्च विचार, आदर्शों तथा सिद्धान्तों एवम् मानवीय मूल्यों के परिमार्जन, परिवर्धन से सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीयता तथा भावना को सुदृढ़ करने के लिए की गयी थी।

महाविद्यालय अपने स्थापना काल से ही श्री विश्वनाथ सिंह जैसे कुशल शिल्पी की कल्पनाओं में गढ़ी गई । महाविद्यालय अपने स्थापना काल से ही उच्च आदर्शों, सद्भावना, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा के लिए दूसरे महाविद्यालयों के लिए एक आदर्श रहा है। श्री विश्वनाथ सिंह को इस महाविद्यालय का प्रथम प्राचार्य होने का गौरव प्राप्त हुआ ।

महाविद्यालय के स्थापना वर्ष (1964) में ही अंग्रेजी, संस्कृत, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, एवम् भूगोल की मान्यता तत्कालीन गोरखपुर विश्वविद्यालय से मिली, तदुपरान्त अगले वर्ष ही हिन्दी, प्राचीन इतिहास एवम् राजनीति शास्त्र की मान्यता प्राप्त हुई। अपने स्थापना काल से ही कला संकाय के आठ विषय महाविद्यालय में हैं तथा विज्ञान वर्ग में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान एवम् गणित की कक्षाओं की मान्यता वर्ष 1967 सें एवम् प्राणी विज्ञान व वनस्पति विज्ञान की मान्यता वर्ष 1971 में मिली । अपनी गुणवत्ता परक अध्ययन-अध्यापन के कारण महाविद्यालय, विज्ञान संकाय में, विश्वविद्यालय स्तरीय शैक्षिक गुणवत्ता के कारण ख्याति प्राप्त करता रहा है।

शैक्षिक उन्नयन के क्रम में महाविद्यालय में शिक्षण-प्रशिक्षण विभाग की स्थापना वर्ष 1973 में हुई तथा **NCTE** से इसको वर्ष 1985 में मान्यता प्राप्त हुआ। अपनी शैक्षिक विकास यात्रा में महाविद्यालय में वर्ष 2002 में प्राचीन इतिहास एवम् हिन्दी की स्नातकोत्तर कक्षाओं के संचालन की मान्यता मिली। समृद्धि की प्रगति यात्रा में एक लम्बे अन्तराल पश्चात् यशस्वी, लोकप्रिय, अनुशासननिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ प्राचार्य प्रो. अरविन्द कुमार सिंह के अथक प्रयासों से महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर कला संकाय में शिक्षा शास्त्र और गृह विज्ञान की मान्यता वर्ष 2021 में मिली तथा परास्नातक स्तर पर भूगोल की मान्यता 2022 में मिली।

डा. धर्मेन्द्र सिंह
प्राणि विज्ञान विभाग

प्राचार्य अनुक्रम

क्रमांक	प्राचार्य	कार्यकाल
1.	श्री विश्वनाथ सिंह	01.09.1964 से 30.06.1983
2.	श्री चन्द्रकिशोर सिंह	01.07.1983 से 10.10.1984
3.	डॉ. उग्रसेन प्रताप शाही	11.10.1984 से 30.06.1999
4.	डॉ. उदय नारायण पाण्डेय	01.07.1999 से 31.01.2003
5.	डॉ. उदय प्रताप सिंह	01.02.2003 से 10.07.2003
6.	श्री सुरेन्द्र सिंह	11.07.2003 से 07.07.2004
7.	डॉ. रणजीत सिंह	08.07.2004 से 24.05.2011
8.	डॉ. बृजेश चन्द्र श्रीवास्तव	25.05.2011 से 30.06.2014
9.	श्री ईश्वर शरण श्रीवास्तव	01.07.2014 से 30.06.2015
10.	डा. राकेश प्रताप सिंह	01.07.2015 से 29.012.2016
11.	श्री अनिल प्रताप चन्द	30.12.2016 से 30.09.2020
12.	प्रो. अरविन्द कुमार सिंह	01.10.2020 से कार्यरत

महाविद्यालय परिवार

प्रो. अरविन्द कुमार सिंह

प्राचार्य

मो0 9415037849, 9936678170

www.sppgcollege.co.in, E-mail : shivpatipgcollege@gmail.com, sppgcollege604@gmail.com

प्राध्यापक कला संकाय

1.	प्रो. अरविन्द कुमार सिंह	-	भूगोल विभाग	9415037849
2.	डॉ. सुशील कुमार	-	समाजशास्त्र विभाग	9554148355
3.	डॉ. अरविन्द कुमार सिंह	-	अर्थशास्त्र विभाग	7839280368
4.	श्री इन्द्रदेव वर्मा	-	भूगोल विभाग	9628930346

प्राध्यापक भाषा संकाय

1.	डा. अमित सिंह	-	अंग्रेजी विभाग	9457446498
2.	डा. सत्य नारायण दास	-	संस्कृत विभाग	9758358542

प्राध्यापक विज्ञान संकाय

1.	प्रो. (मेजर) मुकेश कुमार	-	भौतिक विज्ञान विभाग	9454151378
2.	डॉ. विनोद कुमार सिंह	-	रसायन विज्ञान विभाग	8604329359
3.	डॉ. अखिलेश शर्मा	-	प्राणि विज्ञान विभाग	9984127177
4.	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह	-	प्राणि विज्ञान विभाग	9415528080
5.	डॉ. रामकिशोर सिंह	-	भौतिक विज्ञान विभाग	9718631250
6.	श्री राजू प्रजापति	-	वनस्पति विज्ञान विभाग	7523844989
7.	श्री देवेन्द्र सिंह	-	गणित विभाग	9897733396
8.	डॉ. अजय कुमार सिंह	-	रसायन विज्ञान विभाग	8004299889
9.	डॉ. उमाशंकर प्रसाद यादव	-	भौतिक विज्ञान विभाग	9838317270

प्राध्यापक शिक्षक शिक्षा विभाग (बी.एड.)

1.	प्रो. प्रमोद कुमार मिश्र	-	बी.एड. विभाग	9450884213
2.	डॉ. प्रवीण कुमार		"	9456896850
3.	श्री जयराम		"	8707862318
4.	श्री रमेश कुमार		"	8840893957
5.	डा. तुषार रंजन		"	7388170170
6.	श्री शशि शेखर		"	7905224388

केन्द्रीय पुस्तकालय

1.	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह	-	प्राणि विज्ञान विभाग	9415528080

छात्रावास

1.	डा. राम किशोर सिंह	-	छात्रावास अधीक्षक
2.	डा. अजय कुमार सिंह	-	सहायक छात्रावास अधीक्षक
3.	श्री रामचन्दर	-	चौकीदार

कार्यालय

1.	श्री पंकज कुमार सिंह	-	कार्यालय अधीक्षक	9415193779, 9839761474
2.	श्री रत्नेश कुमार सोनी	-	लेखाकार	9415512714
3.	श्री राजीव कुमार मिश्र	-	कनिष्ठ लिपिक	9838311611
4.	श्री अश्वनी कुमार सिंह	-	स्टेनो/आशुलिपिक	8960216152
5.	श्री राजकुमार सोनकर	-	पुस्तकालय लिपिक	9984554461

प्रयोगशाला सहायक

1.	श्री रवि प्रकाश वर्मा	-	वरिष्ठ प्र.स	8318779196
2.	श्री अमित कुमार सिंह	-	कनिष्ठ प्र.स.	9839261255
3.	श्री मो. शमशीरूल इस्लाम	-	कनिष्ठ प्र.स.	8090207107
4.	श्री प्रेमचन्द्र	-	कनिष्ठ प्र.स.	9839211893
5.	श्री राजीव कुमार वर्मा	-	कनिष्ठ प्र.स.	9919444238

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

1. श्री नागे
2. श्री प्रदीप कुमार मिश्र
3. श्री रामनरेश
4. श्री रविन्द्र कुमार
5. श्री रामचन्द्र
6. श्री राम चन्दर
7. श्री अम्बिका शुक्ला
8. श्री पंकज गौड़
9. श्री सुबाष यादव
10. श्री प्रतीक कुमार मिश्र
11. श्री सुरेन्द्र कुमार
12. श्री विनोद कुमार
13. श्री रवीश चन्द्र चौबे
14. श्री बलराम चौधरी
15. श्री शिवशंकर यादव
16. श्री संजय कुमार
17. श्री अनिल कुमार
18. श्री अविनाश कुमार
19. श्री सुशील कुमार यादव
20. श्री दिनेश कुमार
21. श्रीमती पूनम श्रीवास्तव
22. श्रीमती शालिनी सिंह

संकाय (Faculty)

अपने स्थापना काल से ही महाविद्यालय उच्च गुणवत्तापरक अध्ययन-अध्यापन के लिए ख्याति प्राप्त रहा है। किसी भी महाविद्यालय या विश्वविद्यालय की पहचान उसके संकाय तथा अध्यापन से ही होती है। अपने स्थापना काल से ही महाविद्यालय में कला संकाय, विज्ञान संकाय तथा शिक्षा-प्रशिक्षण संकाय के अन्तर्गत अध्यापन होता रहा है।

कला संकाय में राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, प्रा० इतिहास, अर्थशास्त्र, गृह विज्ञान तथा भूगोल विषय छात्रों की अभिरूचि, अनुसार उपलब्ध है। भाषा संकाय में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत विषय की शिक्षा दी जाती है। स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी, प्राचीन इतिहास एवं भूगोल की मान्यता प्राप्त है। जब कि विज्ञान संकाय में रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, वनस्पति विज्ञान एवम् प्राणिविज्ञान विषय का अध्ययन-अध्यापन होता है। इस महाविद्यालय की पहचान उच्च कोटि का अध्ययन, अनुशासन तथा समयबद्ध ढंग से पाठ्यक्रम को पूरा करना रहा है। अध्ययन-अध्यापन के साथ ही परीक्षा की पवित्रता एवम् शुचिता भी महाविद्यालय की पहचान है।

B.Sc. (M) - **180** Seat B.Sc. (B) - **180** Seat	B.A. - **480** Seat M.A. (Geography) - **40** Seat	M.A. (A. H.) - **60** Seat M.A. (Hindi) - **60** Seat

B.Ed. - **50** Seat

रत्नेश सोनी
लेखाकार

प्रयोगशाला

प्रायोगिक कार्य, वैज्ञानिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रयोगशाला में प्रयोगों के सारगर्भित उद्देश्य होते हैं। प्रयोगों से किसी अवधारणा या सिद्धान्त को सिद्ध करना तथा ज्ञान के सृजन की प्रक्रिया के दौरान साक्ष्यों से विद्यार्थियों में तर्क-वितर्क की क्षमता का विकास होता है। प्रयोगशाला में ही आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों को देखने, उसकी कार्य पद्धति को देखने-समझने का अवसर मिलता है। इसी तरह प्रयोगशाला में विज्ञान की प्रकृति तथा वैज्ञानिक किस प्रकार कार्य करते हैं तथा उस अनुभव और समझ का विकास होता है। इन्हीं प्रयोगशालाओं में भविष्य के वैज्ञानिक तथा मानवता के लिए लाभदायक उपकरण तथा रसायनों का निर्माण होता है।

इस महाविद्यालय में स्थापना काल से ही पाँच सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं रसायन विज्ञान प्रयोगाशाला, भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला, वनस्पति विज्ञान प्रयोगशाला, प्राणि विज्ञान प्रयोगशाला, तथा भूगोल प्रयोगशाला जो कि उच्च कोटि के संसाधनों से परिपूर्ण है।

डॉ. धर्मेन्द्र सिंह
प्राणि विज्ञान विभाग

सेमिनार

विश्वविद्यालयों एवम् महाविद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ शैक्षिक उन्नयन के लिये सेमिनार, कांफ्रेस, सिम्पोजियम, वर्कशॉप आदि नामों से राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है। नामों में विभिन्नता हो सकती है परन्तु इनका एक मात्र लक्ष्य होता है, वह है - शैक्षिक उन्नयन। इन संगोष्ठियों में देश-विदेश के चिंतक, वैज्ञानिक, शिक्षाविद, छात्र-छात्राएँ भाग लेते हैं और विषय विशेष पर मीमांसा करते हुए एक दूसरे की विचारधारा/अनुशीलन से लाभान्वित होते हैं।

यह महाविद्यालय भी इस तरह के सेमिनार का आयोजन समय-समय पर करता रहा है तथा यहाँ के प्रगतिशील शिक्षक अवसर की उपलब्धता के आधार पर राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रतिभाग करते रहते हैं। अपनी शैक्षणिक यात्रा में इस महाविद्यालय में तीन राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन हुआ है।

प्रथम राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित कराने का श्रेय भूगोल विभाग को है जिसके संयोजक (**Convenor**) डॉ. अरविन्द कुमार सिंह, सुप्रसिद्ध भूगोल वेत्ता एवम् पर्यावरणविद् थे। आयोजन वर्ष-2004।

भूगोल विभाग द्वारा आयोजित सेमिनार का विषय था। **Literacy and Rural Development** (साक्षरता और ग्रामीण विकास),इस सेमिनार के मुख्य अतिथि प्रो० रेवती रमण पाण्डेय, कुलपति दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय थे।

(**Guest of Honour**) मा0 श्री जय प्रताप सिंह जी थे (पूर्व में आबकारी एवम् मद्य निषेध/पूर्व स्वास्थ्य मंत्री, कैबिनेट मंत्री, उ0 प्र0 शासन)

द्वितीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन का श्रेय प्राणि विज्ञान विभाग को है, जिसके संयोजक डॉ. अजय कुमार श्रीवास्तव थे। यह सेमिनार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत था। आयोजन का शैक्षणिक वर्ष 2010-11 एवम् विषय था-

"Challenges For Biosciences in 21st Century"

इसी शैक्षणिक उन्नयन के क्रम में तृतीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजन का श्रेय वनस्पति विज्ञान विभाग को, वर्ष 2010-11 में मिला। इस संगोष्ठी के आयोजन सचिव सिद्धार्थ रत्न, सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद् डॉ.बी. सी.श्रीवास्तव थे। इस संगोष्ठी का विषय था-

"Status of Biodiversity : A matter of Global Concern"

डॉ. ए. के. श्रीवास्तव, विभागाध्यक्ष प्राणिविज्ञान विभाग एवं डॉ. ए. के. सिंह, विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग विभिन्न सेमिनारों, संगोष्ठियों में विषय विशेषज्ञ (**Resource Person**) के रूप में आमन्त्रित किए जाते रहे हैं। आजादी के अमृत महोत्सव काल में, भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रांत एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में '**सिद्धार्थनगर के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी**', विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन सितम्बर 2022 में किया गया। इस संगोष्ठी के सचिव डा. धर्मेन्द्र सिंह व डा. ज्योति सिंह थे।

डॉ. धर्मेन्द्र सिंह
परीक्षा प्रभारी

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)

''युवा सशक्तिकरण और समाज सेवा का प्रभावशाली कार्यक्रम''

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) भारत सरकार के 'युवा मामले और खेल मंत्रालय' द्वारा संचालित एक केंद्रीय क्षेत्रक योजना है, जिसका उद्देश्य 'छात्र युवाओं को समाज सेवा के माध्यम से उनके व्यक्तित्व और चरित्र के विकास के लिए प्रेरित करना है'। यह योजना +2 बोर्ड स्तर पर स्कूलों की 11वीं और 12वीं कक्षा के छात्र, और महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्र युवाओं को स्वैच्छिक सामुदायिक सेवा में भाग लेने का अवसर प्रदान करती है। NSS का मूल सिद्धांत 'सेवा के माध्यम से शिक्षा' है, जो युवाओं को सामाजिक उत्तरदायित्व, नेतृत्व क्षमता और राष्ट्र सेवा की भावना विकसित करने में सहायता करता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना की शुरुआत 1969 में महात्मा गांधी जी की जन्मशती के अवसर पर हुई थी। इसे '37 विश्वविद्यालयों' में प्रारंभ किया गया था, जिसमें करीब 40,000 स्वयंसेवक शामिल थे। आज, यह योजना 657 विश्वविद्यालयों, 51+2 परिषदों/निदेशालयों, 20,669 कॉलेजों/तकनीकी संस्थानों एवं 11,988 उच्च माध्यमिक विद्यालयों तक विस्तृत हो चुकी है। स्थापना के बाद से अब तक 7.4 करोड़ से अधिक छात्र NSS कार्यक्रम से लाभान्वित हुए हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत छात्र ''विभिन्न सामुदायिक गतिविधियों'' में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं, जिनमें शामिल हैं–

- साक्षरता एवं शिक्षा अभियान
- पर्यावरण संरक्षण और वृक्षारोपण
- स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम
- आपदा राहत और पुनर्वास कार्य
- रक्तदान एवं अन्य सामाजिक कल्याण कार्यक्रम

राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रभाव : स्वयंसेवकों को व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर विकास का अवसर प्रदान करता है। यह कार्यक्रम समाज सेवा की भावना को बढ़ावा देता है और युवाओं को एक जिम्मेदार, जागरूक और प्रेरित नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता है। राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से, युवा पीढ़ी को राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का सशक्त अवसर मिलता है।

आदर्श वाक्य : राष्ट्रीय सेवा योजना का आदर्श वाक्य ''स्वयं से पहले आप''

राष्ट्रीय सेवा योजना बैज : सभी युवा स्वयंसेवक राष्ट्रीय सेवा योजना बैज को गर्व के साथ पहनते हैं और जरूरतमंदों की मदद करने की जिम्मेदारी की भावना रखते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना के बैज में 8 बार वाला कोणार्क मंदिर के रथ का पहिया दिन के 24 घंटों को दर्शाता है, जो धारण करने वाले को चौबीसों घंटे यानी 24 घंटे राष्ट्र की सेवा के लिए तैयार रहने की याद दिलाता है। बैज में लाल रंग राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों में स्फूर्ति ऊर्जा और सेवा भावना को दर्शाता है। नीला रंग ब्रह्मांड को दर्शाता है जिसका राष्ट्रीय सेवा योजना एक छोटा सा हिस्सा है, जो मानव जाति के कल्याण के लिए अपना योगदान देने के लिए तत्पर है।

राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवक होने के लाभ : महाविद्यालय अथवा उच्च माध्यमिक स्तर

के छात्र समाज सेवा कार्यक्रम में प्रतिभागिता करने हेतु राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवक के रूप में कार्यरत रहता है। राष्ट्रीय सेवा योजना से स्वयंसेवकों को निम्न अनुभव प्राप्त होता है :

- एक कुशल सामाजिक नेता बनने में।
- एक कुशल प्रशासक बनने में।
- एक व्यक्ति जो मानव स्वभाव को समझता है ।

वर्तमान समय में शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की दो सक्रिय इकाइयाँ कार्यरत हैं :

1) रानी लक्ष्मीबाई इकाई (कार्यक्रम अधिकारी : डॉ० अरविन्द कुमार सिंह)

2) स्वामी विवेकानंद इकाई (कार्यक्रम अधिकारी : डॉ० राम किशोर सिंह)

प्रत्येक इकाई में 100 स्वयंसेवक पंजीकृत हैं, जो समाज सेवा, सामुदायिक विकास, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य जागरूकता एवं अन्य सामाजिक कल्याणकारी कार्यों में सक्रिय योगदान दे रहे हैं। ये इकाइयाँ छात्रों के व्यक्तित्व विकास, सामाजिक चेतना, और राष्ट्र सेवा की भावना को सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

डॉ0 राम किशोर सिंह

(राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी)

N.C.C.

देश के नौजवानों में विद्यार्थियों में देश की स्वतंत्रता और अखण्डता की रक्षा के लिए युवाओं को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने वर्ष 1948 में राष्ट्रीय कैडेट कोर अधिनियम प्रवर्तित किया । इसका प्रशिक्षण स्वैच्छिक होता है।

इस महाविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 1988-89 से NCC का औपचारिक रूप से शुभारम्भ हुआ। महाविद्यालय में 46वें UP Battalion की इकाई 1 PL3/46 UP- NCC वाहिनी में 54 सीटें आवंटित हुई तथा महाविद्यालय के NCC की कमान डॉ. आर. पी. सिंह, सेकण्ड लेफ्टिनेन्ट को सौंपी गई। डा. सिंह कैप्टन' के पद से सेवानिवृत्त हुए। तत्पश्चात क्रमशः डॉ. ए. के. सिंह, भूगोल विभाग एवम्, डॉ. पी. के. मिश्र, बी. एड. विभाग ने कुछ समय तक केयर टेकर बनकर प्रशिक्षण की गति को रूकने नहीं दिया ।

फरवरी 2008 से एन.सी.सी. की कमान ले0 मुकेश कुमार जैसे ऊर्जावान प्रभारी के कुशल नेतृत्व में है। श्री कुमार वर्तमान में मेजर पद पर सुशोभित होकर कार्यों का कुशल निष्पादन कर रहे हैं।

वर्ष 2011 में भारत सरकार की नीतियों के अनुसार महिला सशक्तीकरण की योजना के अन्तर्गत 33% सीटें महिला अभ्यर्थियों के लिए आवंटित कर दी गई अर्थात अब 36 सीटे पुरुष कैडेट्स के लिए तथा 18 सीटें महिला कैडेट्स के लिए सुरक्षित रहती है।

मेजर मुकेश कुमार

एन.सी.सी. आफिसर

छात्रावास

प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति में प्रत्येक छात्र के लिए गुरुकुल के छात्रावास में रहना अन्तर्निहित रहता था। इसमें विद्यार्थी गुरु के परिवार के साथ, गुरू के सानिध्य में रहकर विद्यार्जन करता था। इस व्यवस्था में गुरु और शिष्य एकात्म होकर विद्या और धर्म (संस्कार) सीखते थे ।इस तरह अनुशासन और शिष्टाचार पर विशेष बल रहता था तथा छात्र का सर्वांगीण विकास होता था ।

समय एवम् परिस्थितियों के अनुसार छात्रावास के मानक परिवर्तित होते रहे परन्तु छात्रावास में रहने का उद्देश्य आज भी यथावत है । विद्यार्थी का प्रथम, द्वितीय एवम् तृतीय कर्त्तव्य है- केवल और केवल अध्ययन करना। महाविद्यालय की स्थापना के साथ ही महाविद्यालय के छात्रावास की भी नींव पड़ी। छात्रावास संस्थापक प्राचार्य स्व० श्री विश्वनाथ सिंह के नाम से प्रतिष्ठित है । महाविद्यालय परिसर से कुछ दूरी पर महाविद्यालय का छात्रावास अवस्थित है।वर्तमान में छात्रावास में 50 विद्यार्थियों के रहने की व्यवस्था, बिजली के पंखे, कैमरा तथा शौचालय की व्यवस्था है। शुद्ध पेयजल हेतु आर.ओ. प्लान्ट लगा हुआ है। छात्रावास परिसर के साथ ही कुँवर वीरेन्द्र सिंह ग्रामीण स्टेडियम है । जिसमें खेल-कूद की पर्याप्त व्यवस्था है।

डॉ. राम किशोर सिंह

छात्रावास अधीक्षक

पुस्तकालय

पुस्तकालय किसी महाविद्यालय की आत्मा होती है। किसी भी महाविद्यालय की पहचान उसके गुरुजन अध्यापन की विधि एवं एक अच्छे पुस्तकालय से होती है । पुस्तकालय ज्ञान विज्ञान का केन्द्र होता है। अपने शैशवकाल से ही महाविद्यालय में समृद्ध पुस्तकालय रहा है ।

इस पुस्तकालय में लगभग 34,000 पुस्तकें हैं जिसमें लगभग 30,000 पाठ्य पुस्तकें तथा शेष संदर्भ ग्रथ एवं मैगजीन्स हैं । किसी भी कार्य दिवस में पुस्तकालय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक अध्ययन के लिए खुला रहता है जबकि परीक्षा अवधि में पुस्तकालय का समय प्रातः 10.00 बजे से अपराहन 2.00 बजे तक होता है। पुस्तकालय में छात्र/छात्राओं के बैठकर पढ़ने की उचित व्यवस्था है। इस पुस्तकालय के प्रथम पुस्तकालयाध्यक्ष होने का गौरव श्री जयप्रकाश उपाध्याय को है। श्री उपाध्याय के पश्चात् उनके कुशल उत्तराधिकारी के रूप में श्री प्रेम कुमार पाण्डेय ने 1 नवम्बर,1976 को पदभार ग्रहण किया और अनवरत जून 30, 2017 को पुस्तकालयाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त हुए।

श्री प्रेम कुमार पाण्डेय के सेवानिवृत्ति पश्चात् पुस्तकालयाध्यक्ष पद की गुरुतर जिम्मेदारी डॉ0 अजय कुमार श्रीवास्तव विभागाध्यक्ष, प्राणि विज्ञान में निहित थी। तत्पश्चात् पुस्तकालय की महती जिम्मेदारी महाविद्यालय के कर्मठ, अनुशासन प्रिय, भूगोल विभाग के विभागाध्यक्ष डा. अरविन्द कुमार सिंह में निहित रही प्रो. सिंह के पश्चात् पुस्तकालय की गुरूत्तर जिम्मेदारी डा. धर्मेन्द्र सिंह, परीक्षा प्रभारी, असि. प्रो. प्राणि विज्ञान विभाग में निहित है।

डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह, पुस्तकालय प्रभारी

उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय (UPRTOU)

महाविद्यालय में दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा को सुगम तथा सुलभ करने के उद्देश्य से उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज का शिक्षा केन्द्र महाविद्यालय में सत्र 2021–22 से प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय का स्टडी सेण्टर कोड (S–1899) है। इस केन्द्र से स्नातक/स्नातकोत्तर/एकल विषय में द्विवर्षीय प्रमाण पत्र/डिप्लोमा प्रमाण पत्र के विभिन्न कोर्स किये जा सकते है। स्टडी सेण्टर में जुलाई व जनवरी में अपेक्षित पाठ्यक्रम के लिए प्रवेश ऑनलाइन होता है तथा पाठ्य सामग्री छात्र के निर्दिष्ट पते पर डाक से आती है।

इस केन्द्र के समन्वयक डा. धर्मेन्द्र सिंह (9415528080) तथा सहायक श्री अश्विनी कुमार सिंह (9918021515) हैं।

पेटेंट का आवेदन

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अरविन्द कुमार सिंह, महाविद्यालय के शिक्षक डा. ए.के.सिंह, डा. धर्मेन्द्र सिंह, डा. मुकेश कुमार, डा. विनोद कुमार सिंह, डा. राम किशोर सिंह, डा. प्रवीण कुमार, डा. अजय सिंह व शोध छात्र उत्कर्ष श्रीनेत के सम्मिलित प्रयासों से वास्तविक समय छात्र निगरानी (रियल टाइम डिवाइस) हेतु पेटेंट की रजिस्ट्री सम्बन्धित कार्यलम द्वारा हो गई है। रियल टाइम मानिटरिंग डिवाइस एक उन्नत शैक्षणिक उपकरण है जिससे छात्रों को पाठ के दौरान ध्यान को बेहतर बनाने के लिए डिजाइन किया गया है जो कि अंतर्निहित कैमरा व कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आधार पर करता है। महाविद्यालय की यह विशेष उपलब्धि है।

इस रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट निम्नवत् है–

Certificate of Registration for a UK Design

Intellectual Property Office

Design number: 6395737

Grant date: 11 October 2024

Registration date: 07 October 2024

This is to certify that,

in pursuance of and subject to the provision of Registered Designs Act 1949, the design of which a representation or specimen is attached, had been registered as of the date of registration shown above in the name of

Utkarsh Shrinet , Prof, Arvind Kumar Singh, Dr, Arvind Kumar Singh , Dr Dharmendra Singh, Dr, Mukesh Kumar, Dr, Vinod Kumar Singh, Dr, Ram Kishor Singh , Praveen Kumar, Dr, Ajay Kumar Singh

in respect of the application of such design to:

REAL-TIME STUDENT ATTENTION MONITORING DEVICE

International Design Classification:
Version: 14-2023
Class: 10 CLOCKS AND WATCHES AND OTHER MEASURING INSTRUMENTS, CHECKING AND SIGNALLING INSTRUMENTS
Subclass: 05 INSTRUMENTS, APPARATUS AND DEVICES FOR CHECKING, SECURITY OR TESTING

Adam Williams
Comptroller-General of Patents, Designs and Trade Marks
Intellectual Property Office
The attention of the Proprietor(s) is drawn to the important notes overleaf.

THE PATENT OFFICE OFFICIAL

Intellectual Property Office is an operating name of the Patent Office www.gov.uk/ipo

पुण्यश्लोका अहिल्याबाई होल्कर

■ प्रो0 अरविन्द कुमार सिंह
प्राचार्य, शिवपति स्ना. महावि., शोहरतगढ़
सिद्धार्थनगर

पुण्यश्लोका अहिल्याबाई का एक कुशल प्रशासक के रूप में प्रशिक्षण अपने श्वसुर जी सुभेदार मल्हारराव होल्कर और सासुमाँ गौतमा बाई के सानिध्य में रहकर हुआ। परंपरा के अनुसार युद्ध क्षेत्र में सेना के साथ सभी के परिवार साथ में चलते थे । युद्ध क्षेत्र के निकट अलग से डेरा लगाया जाता था, अहिल्याबाई का भी अपने पति खंडेराव के साथ मल्हारराव होल्कर द्वारा आयोजित सैन्य अभियानों में जाना प्रारंभ हुआ। यह प्रत्यक्ष युद्ध भूमि में रहकर युद्ध समझने सीखने का अवसर था।

छोटी छोटी जिम्मेदारियाँ मल्हारराव अपनी बहू अहिल्याबाई को सौंपने लगे, जैसे पत्र लाने ले जाने वाले पर नजर रखना, उनका भोजन प्रबंध करना, हुँड़िया भुनाकर नगदी करना, आगे चलकर तोपों के लिए बारूद के गोले बनाना, अलग अलग प्रकार की तोपों के लिए अलग अलग प्रकार के गोलों का निर्माण करना उनका भंडार खड़ा करना, भंडार के लिए युद्ध भूमि से निकट उचित स्थान निर्धारण करना, तोपों को खीचने के लिए बैल जोड़ियाँ, उनकी संख्या आदि विषयों के निर्देश भी मल्हार राव द्वारा पत्रों में दिए जाते और अहिल्याबाई उसे उत्तम रूप से निभाती थी। युद्ध भूमि में जख्मी सैनिकों का इलाज करने के लिए आवश्यक जड़ी बूटियों का ज्ञान भी अहिल्याबाई ने प्राप्त किया था।

17 मार्च 1754में खंडेराव की मृत्यु के पश्चात मल्हारराव ने अहिल्याबाई को सती होने से रोका और उन पर प्रशासन की अधिकाधिक जिम्मेदारी डालने लगे। गौतमा बाई की छत्रछाया में निजी जागीर के संभाल का अनुभव अहिल्याबाई को मिला। 20 मई 1766 मल्हार राव की मृत्यु हुई और अहिल्याबाई के पुत्र मालेराव को 2 जून 1766 को वारिस बनाया गया लेकिन अल्पावधि में 17 मार्च 1767 को मालेराव के दुःखद मृत्यु के बाद सम्पूर्ण दायित्व अहिल्याबाई के हाथों में आ गया । अहिल्याबाई ने अपनी निजी जागीर नर्मदा के किनारे महेश्वर में जाकर रहने का निर्णय किया और वहीं से 1795 तक 28 वर्ष राज्य को संभाला। 1767 में नर्मदा के तट पर महेश्वर राजधानी का निर्माण किया। उनके प्रयत्नों से जागीर की आय 60–65 लाख से बढ़कर एक करोड़ 53 लाख हुई। 16 करोड़ की निजी संपत्ति कोष में थी।

श्री शंकर आज्ञा से इस राजमुद्रा से सभी आदेश निकाले जाते थे। हाथ में शिवलिंग धारण करना मांगल्य और पवित्रता का प्रतीक माना जाता था। उनकी सात्विक विचारधारा की प्रसिद्ध उक्ति निम्नवत थी–

1. इस लोक में कीर्ति और परलोक में सदगति प्राप्त हो ऐसा ही व्यवहार करना, अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा रखते हुए कार्य करना यही सनातन राजधर्म है.।
2. जो बह रहा है वह गंगाजल और किसी स्थान पर रह गया वह जल तीर्थ बन गया यानी सभी अवस्थाएँ पवित्र हैं।
3. ईश्वर के द्वारा सौंपा हुआ दायित्व निभाना यह मेरा कर्तव्य है। प्रजा को सुखी रखना मेरा काम है। मेरे हर कृत्य का दायित्व मुझपर है। आज सत्ता और बल के आधार पर जो भी कार्य मैं करूंगी उस का अन्त में मुझे ईश्वर के समक्ष उत्तर देना है।

पुण्यश्लोका अहिल्या देवी की दिनचर्या प्रेरणास्पद थी। सूर्योदय के पूर्व उठना। पूजापाठ के पश्चात पुराण श्रवण, दान धर्म के पश्चात महानीय व्यक्तियों को भोजन कराकर फिर स्वयं शाकाहारी और सात्विक भोजन करना। भोजन के पश्चात ईश्वर चिंतन कुछ समय विश्राम, दोपहर सें दरबार में सूर्यास्त तक कार्य के पश्चात दो घंटे पूजापाठ और फलाहार फिर 9 बजे पुनः दरबार में रात्रि 11 बजे तक सरकारी कामकाज और फिर रात्रि विश्राम यह नियमित दिनचर्या बिना किसी व्यवधान के चलती थी।

अहिल्याबाई ने अपना बड़ा ग्रंथालय बनाया था। भिन्न–भिन्न स्थानों से ग्रंथों को लाकर वहां संग्रहीत किया जाता था। अठारह श्रीधरी अध्याय, गीत गोविंद, मुहूर्त चिंतामणि, कान्यकुब्ज माहात्म्य आदि जैसे ग्रंथ ग्रंथालय में थे। प्रसंगानुकूल विविध ग्रंथों का पाठ होता था। अहिल्याबाई ग्रंथ श्रवण हेतु बैठती थीं। महेश्वर में यह ग्रंथ संग्रह होने के कारण विद्वानों का आना जाना रहता था। वेद, पुराण, धर्म शास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद, कीर्तन इन विषयों के विद्वानों के नामों की सूची भी अभिलेखों में उपलब्ध है। ''अहिल्या कामधेनु'' इस ग्रंथ का निर्माण पं0 खुशालीराम के नेतृत्व में विद्वानों के मंडली द्वारा किया गया था जिस में शासक के लिए नियमों का संकलन 18 वत्सों (अध्याय) में किया गया था।

अहिल्याबाई का मानना था कि दरबार का समय महत्वपूर्ण है इसलिए व्यर्थ समय न बीते यह सजगता रहे, एक बार जिस कानून का निर्माण हुआ उस का पालन व्यवस्थित रूप से होना चाहिए। ऐसा करने से सभी के लिए कल्याण के मार्ग पर चलना संभव होगा। कानून विरोधी आचरण को सहन नहीं किया जाएगा।

- उन्होने विधवा स्त्री को गोद लेने का अधिकार दिया और उस पर कुछ धन सरकारी कोष में जमा करने का सुझाव अस्वीकार किया।
- सरकारी अधिकारी ने अगर प्रजा पर गलत जुर्माना लगाया या अन्याय पूर्वक वसूली की तो जाँच कर उस अधिकारी को सजा होती थी और जुर्माने की राशि उस पीड़ित व्यक्ति को वापस की जाती थी।
- भीलों की समस्या का निवारण–1778 में निमाड का पहाड़ी क्षेत्र अहिल्यादेवी की जागीर का हिस्सा बना। निमाड क्षेत्र पहाड़ी क्षेत्र है वहाँ की भील जनजाति यात्री तथा व्यापारियों की लूटमार कर अपनी आजीविका करते थे। अहिल्यादेवी ने उन्हे खेती करने के लिए जमीन दी। 'भिलकवड़ी' यह कर समान दर निश्चित कर उसे वसूलने का भीलों का अधिकार स्वीकार किया, और उन पर प्रवासियों के रक्षा की, लूट हुई तो लूटे हुए सामान की भरपाई की जिम्मेदारी सौंपी, फिर भी कुछ भीलों द्वारा लूटपाट जारी रखने पर ओंकारेश्वर क्षेत्र में 1783 में फौज भेज कर उनका बंदोबस्त किया। भीलों का प्रश्न इस प्रकार सहृदयता और आवश्यकता पर कठोरता का प्रयोग कर सुलझाया।
- नौ–ग्यारह कानून–भूमिहीन किसानों को जमीन देकर वहाँ पर फल के पेड़ लगाने की व्यवस्था की, 9 पेड़ों का आय किसान को और 11 पेड़ों की आय सरकार को देने का प्रावधान किया।
- नदी प्रवाह से अलग प्रवाह निकालकर स्नान करना, कपड़े धोना, बर्तन माँजना, जानवरों को पानी उपयोग कर वह प्रवाह खेती के लिए उपयोग में लाया जाता जिस से नदी के बहते प्रवाह

में प्रदूषण नहीं होता था।

- शराब बंदी लागू करने में अहिल्याबाई के जीवन में राजनीति निपुणता भी प्रत्यक्ष दिखाई पडती है।
- पुत्र मालेराव होल्कर की मृत्यु के पश्चात राघोबा रियासत की संपत्ति हड़पने के इरादे से फौज लेकर आक्रमण के उद्देश्य से उज्जैन में आए। अहिल्याबाई ने माधवराव पेशवा को पत्र लिखकर आग्रह किया। पेशवा ने उनकी बात स्वीकार कर ली इसकी सूचना राघोबा को भी दी गई।अन्य मराठा सरदारों को पत्र लिखकर कि आज यह संकट मुझपर है, कल आप पर भी आ सकता है। यह कहकर उनके सहयोग की माँग की और उन से आश्वासन प्राप्त किया।युद्ध में हार हुई तो बदनामी होगी जीत हुई तो स्त्री पर विजय से कौनसा गौरव बढ़ेगा ऐसा संदेश अहिल्याबाई ने राघोबा को भेजा। सब ओर से हार देखने के बाद राघोबा ने मैं सांत्वना देने के लिए आया था और राज्य हड़पने का इरादा नहीं था, यह भूमिका बताई। अहिल्याबाई में इस पर कुछ न कहते हुए उनका आदर सत्कार किया और उनके षडयन्त्र को अपनी सूझबूझ से विफल किया।
- इसी प्रकार हरिपन्त फड़के पेशवा दरबार के सरदार द्वारा संपत्ति की माँग करने पर ''राज्य का प्रशासन मुझे सूबेदार मल्हार राव के समय से पेशवा के आदेश अनुसार सौंपा गया है इस लिए पेशवा के सरदार को उसके विरोध में नहीं सोचना चाहिए। मेरी इच्छा तो नर्मदा के किनारे तीर्थ क्षेत्र में निवास की है लेकिन मल्हारराव और पेशवा द्वारा दी गई व्यवस्था में बंधी हूँ।
- इसी तरह मल्हार राव की रामपुरा की जागीर में चंद्रावतों की बगावत के समय अहिल्यादेवी द्वारा कुशल युद्ध नेतृत्व का परिचय देते हुए उस बगावत को विफल किया। यह समाचार सुनकर नाना फड़नवीस की उक्ति विशेष उल्लेखनीय है ''अहिल्यादेवी की धार्मिक प्रवृत्ति सभी को ज्ञात थी लेकिन इस पराक्रम से यह सिद्ध हुआ कि नर्मदा के तट का महिष्मती याने महेश्वर पूना का प्रवेश द्वार है'।
- राघोंबा द्वारा नारायण राव पेशवा की हत्या कर पेशवा पद हथियाने के षड़यंत्र में अहिल्याबाई ने माधव राव पेशवा का पक्ष लिया। अहिल्याबाई की दूरदर्शिता के अद्भुत उदाहरण इस प्रकार हैं–
- अंग्रेजों के आक्रमण के स्वरूप को समझकर इस खतरे से निपटने के लिए सलाह देनेवाला अहिल्याबाई द्वारा पेशवा को भेजा गया पत्र है।
- जे. पी. बॉयड के सहयोग से आधुनिक पद्धति से प्रशिक्षित सेना का निर्माण किया लेकिन यूरोप की पद्धति के अनुसार सेना की टुकड़ी का निर्माण करते समय सावधानी भी रखी।
- कर्नल जे पी बॉइड को मासिक वेतन पर नौकरी पर रखा।अन्य रियासतों द्वारा जागीर देकर नौकरी पर रखा जाता।
- सेना का नियंत्रण रियासत के सैन्य अधिकारी के जिम्मे था जिसे दरबार में प्रतिनिधित्व करना होता था। सेना की संख्या और उस के मासिक वेतन भी निश्चित किया गया।
- मासिक उपस्थिति और गैर हाजरी पर सजा और जुर्माना की शर्ते भी रखी गई थी।

अहिल्याबाई स्वराज्य के साथ–साथ सवधर्म की रक्षा और संवर्धन के लिए भी कटिबद्ध थी। महाशिवरात्रि के पूजा के लिए गंगाजल कावड़ 35 स्थानों पर 45 कॉवड़ भेजेने के लिए धन राशि भेजने की व्यवस्था अहिल्याबाई द्वारा की गयी उन्होने सप्तपुरी, और चार धाम अन्य तीर्थों का निर्माण, सदावर्त, अन्नक्षेत्र, धर्मशाला निर्माण का कार्य किया।

अहिल्याबाई द्वारा पुर्ननिर्मित ज्योतिर्लिंग निम्नवत है–

क्रमांक	ज्योतिर्लिंग	स्थान राज्य,	कार्य स्वरूप
1	श्री सोमनाथ	गुजरात	1785 मंदिर पुनःस्थापना
2	श्री मल्लिकार्जुन	आंध्र	मंदिर निर्माण
3	श्री ओंकारेश्वर	मध्य प्रदेश	चांदी का मुखौटा, यात्रियों के लिए नाव, पालकी
4	श्री वैजनाथ	महाराष्ट्र (निजाम राज्य)	1784 मंदिर निर्माण
5	श्री नागनाथ	महाराष्ट्र (निजाम राज्य)	1784 पूजा व्यवस्था
6	श्री विश्वनाथ	उत्तर प्रदेश	1785 मणिकर्णिका, दशाश्वमेध घाट, काशीविश्वनाथ मंदिर निर्माण अन्य मंदिर तथा धर्मशालाओं का निर्माण
7	श्री त्रयंबकेश्वर	महाराष्ट्र	कुशावर्त घाट के निकट सेतु का निर्माण
8	श्री घृष्णेश्वर	महाराष्ट्र (निजाम राज्य)	शिवालय तीर्थ का जीर्णोद्धार

उपर्युक्त के अलावा 4 ज्योतिर्लिंगों, गोकर्ण, रामेश्वर, महाकालेश्वर, भीमाशंकर स्थानों पर भी धर्मशाला, अन्न छत्र पूजा के लिए आर्थिक व्यवस्था आदि भी अहिल्याबाई द्वारा किया गया। उनके द्वारा सप्तपुरी और चार धाम में भी निर्माण कार्य निम्नवत किया गया।

क्रमांक	सप्तपुरी / धाम	स्थान राज्य,	कार्य स्वरूप
1	अयोध्या	उत्तर प्रदेश	श्री राम मंदिर सहित 4 मंदिर, सरयू घाट, धर्मशाला और अन्नछत्र
2	मथुरा वृंदावन	उत्तर प्रदेश	श्री चौन बिहारी मंदिर, 2 घाट, धर्मशाला
3	हरिद्वार	उत्तराखंड	कुशावर्त घाट, आश्रम

4	काशी	उत्तर प्रदेश	पूर्व में दिए अनुसार
5	काँची	तमिलनाडु	गंगाजल कावड़
6	उज्जैन	मध्य प्रदेश	श्री लीला पुरुषोत्तम मंदिर, सहित 4 मंदिर, धर्मशाला
7	द्वारका	गुजरात	धर्मशाला
		चार धाम	
1	बद्रीनारायण	उत्तराखंड	5 धर्मशालाएँ, गरम पानी का कुंड, गोचर भूमि
2	जगन्नाथपुरी	उडीसा	श्री रामचन्द्र मंडी, अन्न छत्र, उद्यान

इसी प्रकार अन्य तीर्थों तथा धर्मस्थलों के जीर्णोद्धार, रखरखाव आदि के लिए भी अहिल्याबाई ने कार्य किए. (12 स्थान सूची निम्न है में कुल सूची 44 स्थानों की है)

क्रम	क्षेत्र तीर्थ	स्थान राज्य,	कार्य स्वरूप
1	चिंचवड	महाराष्ट्र	200 रु दान
2	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	700 रु दान
3	जाम्ब (समर्थ)	महाराष्ट्र	समर्थ मठ के लिए ग्रामदान
4	चित्रकूट (वैष्णव)	उत्तर प्रदेश	श्री राम पंचायतन मूर्ति स्थापना
5	पुष्कर	राजस्थान	धर्मशाला, अन्न छत्र, श्री गणेश मंदिर
6	वेरुल	महाराष्ट्र	मंदिर निर्माण
7	भुसावल (नाथ)	महाराष्ट्र	श्री चांगदेव मंदिर निर्माण
8	पुणतांबे	महाराष्ट्र	घाट निर्माण
9	नाथद्वारा (वैष्णव)	राजस्थान	मंदिर, कुंड, धर्मशाला
10	राजापुर	महाराष्ट्र	श्री गंगा आगमन के समय सदावर्त
11	कुरुक्षेत्र	हरियाणा	मंदिर तथा घाट निर्माण
12	कर्मनाशिनी	बंगाल	नदी पर सेतु

अहिल्याबाई द्वारा किये गये महत्त्वपूर्ण कार्य

1. हिन्दू धर्म का पुनर्जागरण–पुण्यभूमि भारत के प्रति श्रद्धाभाव और प्राचीन काल से चलती आई तीर्थ यात्रा की परंपरा ने भारत की सांस्कृतिक एकता को स्थापित किया, उसे दृढ़ बनाया। इस राष्ट्र की सीमाओं का निर्माण, तीर्थ यात्रियों के पदचिह्नों ने किया था। आक्रमण काल में वह पदचिह्न धूमिल हुए थे। भिन्न भिन्न मंदिरों की, चार धामों की तीर्थ यात्रा, कुंभस्थानों की यात्रा हिन्दूओं के धर्माचरण का मुख्य अंग था। भारत वर्ष में तीर्थों की पुर्नस्थापना तथा जीर्णोद्धार द्वारा अहिल्यादेवी ने हिन्दू धर्म को पुनरुज्जीवित किया।
2. भारत की अंतर्निहित मूलभूत एकता अपने राज्यों में मंदिर, धर्मशाला निर्माण की परंपरा अहिल्याबाई के पूर्ववर्ती राज्यकर्ताओं में थी लेकिन अहिल्या बाई द्वारा किए कार्य में जो अखिल भारतीय दृष्टि है, उस के परिणाम स्वरूप भारत वर्ष में अंतर्निहित मूलभूत एकत्व पुनः स्थापित हुआ। ईस्वी सन् 800 के पश्चात जो धीरे धीरे भौगोलिक और राजकीय विभाजन हुआ। विदेशी आक्रमण के कारण धार्मिक यात्राओ में विघ्न खड़ा हुआ था। तीर्थों और मंदिरों का ध्वंस हुआ था। फिर एक बार मराठों द्वारा हिन्दू राज्य स्थापित होते ही अहिल्याबाई होल्कर द्वारा किए गये जीर्णोद्धार के कार्यों से भारत की एकता का बंध पुनः स्थापित हुआ।
3. सर्व समावेशी हिन्दू समाज की दृष्टि होल्कर कुल के कुलस्वामी महाराष्ट्र में जेजुरी स्थित शिवावतार श्री मल्हारी मार्तंड है और अहिल्याबाई परम शिव भक्त थी फिर भी ज्योतिर्लिंगों के स्थानों में जीर्णोद्धार के साथ साथ अन्य पंथों के मंदिरों और तीर्थों का जीर्णोद्धार भी उनके द्वारा किया गया।
4. स्थापत्य कला की ऊर्जितावस्था स्थान–स्थान पर हुआ। घाट और मंदिरों का निर्माण कार्य उस स्थान की स्थापत्य कला को पुनरुज्जीवित करने वाला सिद्ध हुआ।

निंदक नियरे राखिये

डॉ. अजय कुमार सिंह
(सहायक आचार्य), रसायन विज्ञान–विभाग

मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी है– अपनी प्रशंसा सुनना। जब कोई हमारी प्रशंसा में कुछ कहने लगता है तो हमारा मन गदगद हो उठता है। यदि हम संकोच के कारण प्रशंसा से इंकार करना चाहे तो भी नहीं कर पाते, क्योंकि प्रशंसा से हमे सुख और सुकून जो मिलता है। यही कारण है कि प्रशंसा को सबसे अधिक कारगर शस्त्र कहा जाता है। कुरूप से कुरूप स्त्री से कहो कि तुम सुन्दर हो तो वह इंकार नहीं कर पायेगी। बुरे से बुरे आदमी से कहो कि तुम अच्छे आदमी हो तो वह असहमति प्रकट नहीं करेगा। लेकिन जो हमें भला और अच्छा बता रहा है उसका अपना प्रयोजन है। वह आपसे कुछ पाने की आकांक्षा से ही प्रेरित होकर हमारा गुणगान कर रहा है। ऐसा सोचना भूल होगी कि यह प्रशंसा हमें सौगात में मिल रही है। अभी जरूर मुफ्त में दिखाई पड़ रही है, परन्तु कुछ समय बाद समझ में आ जायेगा कि इस प्रशंसा का मूल्य क्या है ?

प्रशंसा का मूल्य हमें दो प्रकार से चुकाना पड़ता है। वाह्य मूल्य के रूप में प्रशंसक हमसे कुछ रूपये उधार ले जायेगा, नौकरी के लिए प्रार्थना करेगा, अदालत में झूठी–सच्ची गवाही दिलवायेगा, निकट परिजन से सम्बन्ध स्थापित करने हेतु आग्रह करेगा या किसी से झगड़े का उपक्रम करायेगा। यह सब तो छोटे–मोटे मूल्य है। जो बड़ा मूल्य हमें चुकाना होगा वह यह है कि हम झूठी प्रशंसा पर भरोसा कर रहे है जो हमें सन्मार्ग से भटकाने के लिए विवश कर देगी, क्योंकि प्रशंसा के जाल में फँसकर हमने उस सम्पदा पर भरोसा कर लिया, जो वास्तव में हमारे पास नहीं है। अब हम खोजेंगे क्या ? हमारी खोज को विराम लग गया है। यह तो ऐसे हुआ जैसे किसी बीमार को भरोसा हो गया कि वह स्वस्थ है। यह तो आँख बन्द करना हुआ। यह सौदा तो हमने बहुत महँगा कर लिया, इस बात का पता हमें तब चलता है जब बहुत देर हो चुकी होती है।

प्रशंसा हमेशा झूठी होती है। यह हमें तभी अच्छी लगती है जब हम वास्तव में वैसे नहीं होते, जैसा कि हमें कहा जा रहा है। अगर हमारा प्रशंसक उतना ही कहे जितना कि हम हैं तो हम प्रसन्न नहीं होगें, क्योंकि वह तथ्य का वक्तव्य होता है। कानें को काना कहें– तो वह प्रसन्न नहीं होगा। यदि यह कहे कि तुम्हारी आँखे कितनी सुन्दर है, अन्धे को कहें नयन सुख तब ही प्रशंसा होगी और वह सुनने वाले को प्रिय लगेगी। प्रशंसा ऐसी ही है जैसे गुब्बारे में हवा। गुब्बार जितना फूलता है उतना ही फूटने के करीब होता है। प्रशंसा से बढ़ता है हमारे भीतर का अहंकार, दर्प, अभिमान जो गर्त की ओर धकेला है। सभी सिद्ध और प्रबुद्ध महापुरूषों ने यही सीख दी है कि प्रशंसा के प्रति कान बन्द कर लो, क्योंकि उससे हमें हानि हो सकती है। साथ ही निन्दा के प्रति कान खोलकर रखने की हिदायत है, क्योंकि उससे लाभ ही होने की सम्भावना रहती है। निंदा करने वाला यदि सच्चे आदमी को झूठा कहता है तो सच्चा आदमी मुस्कराकर निकल जायेगा, क्रोधित होने की तो कोई बात ही नहीं उठती। लेकिन यदि निन्दा सच हो तो वह बड़े काम की चीज हो जाती है, क्योंकि वह हमारी किसी कमी को उजागर कर जाती है और हमें सुधार करने का अवसर प्रदान करती है। कमियाँ आँख के सामने आ

जायें तो मिटाई जा सकती हैं। कबीरदास जी कहते हैं 'निंदक नियरे राखिये आंगन कुटी छवाय'। उससे कहना कि अब तुम कहीं मत जाना। हमारे पास रहना ताकि कुछ छिपाया न जा सके। तुम मुझे उघाड़ते रहो, मेरे जीवन को नग्न करते रहो ताकि मैं अपने दोष छिपा न सकूँ। घाव खुले रहते हैं खुली हवा में तो सूर्य का प्रकाश पाकर भरने लगते हैं। खुले रहेगें तो औषधि की तलाश करेंगे। सद्गुरु की खोज करेंगे और दोषों के निवारण हेतु समुचित उपाय भी करेंगे।

महात्मा बुद्ध ने मानव जाति को एक बड़ा ही महत्वपूर्ण सूत्र दिया है। वे कहते हैं कि निधियों को बतलाने वाले के समान अपने दोष दिखाने वाला चाहिए क्योंकि उससे हमारा कल्याण होता है। निंदक को ऐसे समझो जैसे कोई खजाने की खोज करवाने में अपनी सहायता कर रहा है और जब तक हम उन्हें खोज नहीं निकालेंगे, हमारा कल्याण नहीं हो सकता। जब जलस्रोत खोजने के लिए कुआँ खोदा जाता है तो फावड़ों की मदद से कचरा, कूड़ा, पत्थर, मिट्टी आदि सब बाहर निकाल दिया जाता है और शुद्ध जल की अक्षुण धारा बहने लगती है। ठीक उसी प्रकार जिन फावड़ों ने हमारे भीतर के कल्मष, कूड़ा–करकट को बाहर निकाला है। हमारे लिए तो उन्होंने प्रयास करके बड़ा उपकार का कार्य किया है।

यही नहीं संत–महात्मा तो यहाँ तक कहते है कि निंदक तो हमारा अवैतनिक सेवक है। वह बिना मेहनत मजदूरी लिए हमारे लिये धोबी का कार्य कर रहा है। वह हमारी मैल धो रहा है। निंदा करने के कारण वह सारे पाप अपने सिर पर लेकर पुण्य हमारे, खाते में जमा करा रहा है। साधारणतः हम उस व्यक्ति की संगति करना पसंद करते हैं जो हमारी प्रशंसा करें। हमें चाटुकार अच्छे लगते हैं। हमारी कर्णेन्द्रिय सदैव यही सुनने को लालायित रहती है कि कोई कहे कि हम सुन्दर हैं, भले हैं, शुभ हैं, श्रेष्ठ हैं, आदि तब हमें सुख और सुकून मिलता है। लेकिन यह क्षणिक सुख कितना महँगा पड़ता है इसका ज्ञान हमें तब होता है जब बहुत देर हो चुकी होती है। निंदक ही हमारे सुधार के द्वार खोलता है अतः वह वन्दनीय है, स्तुत्य है।

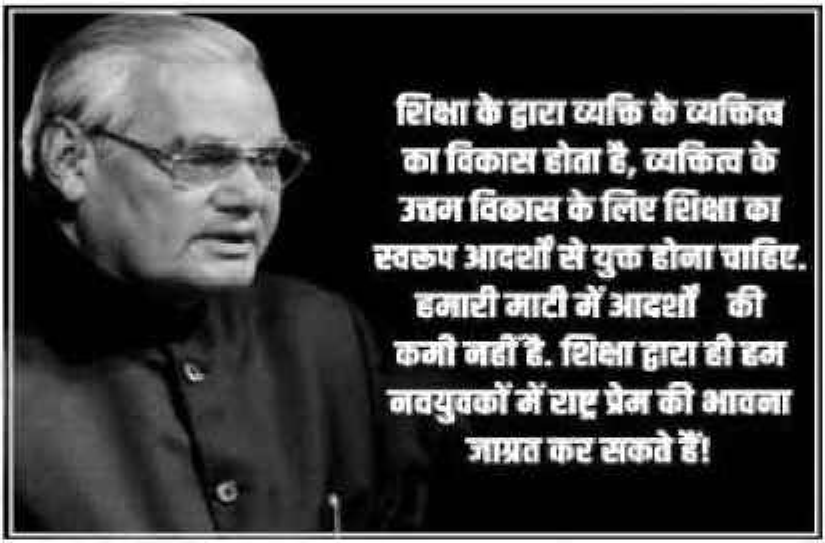

ठोस अवशिष्ट प्रदूषण
(SOLID WASTE POLLUTION)

Dr. Vinod Kumar Singh
Associate Prof. Deppt. of Chemistry

प्रस्तावना:– उपयोग के बाद बेकार तथा निरर्थक पदार्थों को ठोस अपशिष्ट तत्व की संज्ञा प्रदान की जाती है। उपयोग के पश्चात् इनकी उपयोगिता समाप्त हो जाती है। परन्तु ये पर्यावरण की मौलिकता को समाप्त करने में सक्षम होते है। विश्व–स्तर पर जनसंख्या की वृद्धि के कारण इनके परिणाम में निरन्तर वृद्धि हो रही है। फलस्वरूप इनसे उत्पन्न प्रदूषण की समस्या निरन्तर जटिल होती जा रही है।

समाज एवं व्यक्तियों की सम्पन्नता तथा वृद्धि एवं उनके द्वारा उत्पन्न अवशिष्ट पदार्थों की मात्रा में धनात्मक सम्बन्ध होता है। स्पष्ट ठोस अपशिष्टों का उत्पादन वास्तव में आधुनिक समृद्ध भौतिकवादी समाज की देन है। वास्तव में आर्थिक स्तर से सम्पन्न एवं औद्योगिक स्तर पर अत्यधिक विकसित पश्चिमी देशों की 'प्रयोग करो और फेंको संस्कृति' (Use and throw away culture) ठोस अपशिष्ट प्रदूषण की विकट समस्या के लिए जिम्मेदार है क्योंकि इस समाज में, उपयोग के तुरन्त बाद बचे समस्त ठोस अपशिष्टों को फेंक दिया जाता है। इसके विपरीत अविकसित एवं विकासशील देशों के निर्धन समाज की 'संरक्षण संस्कृति (conservation culture) पश्चिमी समृद्ध देशों की तुलना में बहुत कम मात्रा में ठोस अपशिष्टों का उत्पादन करती है, क्योंकि इन गरीब समाजों में वस्तुओं का कई बार उपयोग किया जाता है। ठोस अवशिष्ट तत्वों के अनेक स्रोत इस प्रकार हैं।

अधात्विक ठोस अपशिष्ट :– काँच, बोतल, डिब्बे, क्राकरी कुर्सी, लोहा आदि

अधात्विक ठोस अपशिष्ट :– पैकिंग का अपशिष्ट, कपड़ा, रबर, चर्म, भोज्य, भोज्य पदार्थ, लकड़ी आदि

भारी ठोस अपशिष्ट :–मशीनों के पार्ट, टायर आदि

राख :– काष्ठ, कोयला, उपली की राख।

मृत जीव :– पशु, कुत्ता तथा अन्य जंगली जन्तु।

मकानों के अपशिष्ट :– मिट्टी, पत्थर, काष्ठ तथा धातु के समान।

कृषि जन्य अपशिष्ट :– भूसा, खाद, पत्तियाँ, डंठल, अनाज आदि

उद्योग अन्य अपशिष्ट :– नाभिकीय कचरा, कोयला, राख, रासायनिक अपशिष्ट तत्व आदि

जिस तरह से शहरों में निकलने वाले अपशिष्टों एवं कचरों की वार्षिक मात्रा में वृद्धि हो रही है। उससे यह साफ हो जाता है कि भविष्य में बढ़ते कचरे भयंकर पर्यावरण समस्याओं के आगमन के खतरे की घंटी बजा रहे हैं।

सागर तटीय भागों में कचरों तथा अपशिष्टों के निपटान के कारण कई प्रकार की परिस्थितिकीय समस्यायें उत्पन्न हो गयी हैं तथा मछलियों एवं कोरल सहित सागरीय जीवों की लगातार मृत्यु होती जा रही है। इसके अलावा भूमिगत जल में रिसाव आहार श्रृंखला में हानिकारक तत्वों का

प्रवेश, दम घोटने वाली वाष्पों का आवरण, लाभदायक सूक्ष्मजीवों का विनाश, मच्छरों, कीटों एवं चूहों की वृद्धि तथा, डायरिया, हैजा, प्लेग एवं हैपेटाइटिस जैसे रोगों की वृद्धि आदि ठोस अपशिष्ट जनित समस्यायें है।

वास्तव में ठोस अपशिष्ट स्थान विशेष पर सड़गल कर प्रदूषण फैलाते हैं। इनका नियोजित पुनर्उपयोग अथवा निपटारा नितान्त आवश्यक है। इनका प्रबन्धन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है–

पुनर्चक्रण (Recycling) :– इस विधि द्वारा अपशिष्टों को पुनः प्रयोग में लाया जाता है, जैसे कि प्लास्टिक व धातुओं को गलाकर पुनः प्रयोग में लाना, अखबार तथा पुराने कागजों को गलाकर पुनः चक्रित करना तथा पुरानी प्लास्टिक की दरियाँ, चटाई, रस्सियाँ आदि बनाना।

अपशिष्टों को नष्ट करना (Disposal of Waste) :– जो ठोस कचरे विभाजित या पुनर्चक्रित नहीं हो सकते उन्हें निम्न प्रकार से नष्ट किया जाता है–

कम्पोसटिंग (Composting) :– जैविक अपशिष्टों को खाद में बदल देना।

दबाना (Land Fills) :– इस प्रक्रिया के तहत जमीन में गहरा गड्ढ़ा खोदकर ठोस कूड़े–कचरे तथा अवशेष को गड्ढे में दबा देते है।

दहन (Incineration) :– इसमें अपशिष्टों को जो ज्वलनशील है जैसे– कि अस्पताल के अपशिष्ट, निस्तारण के लिए एकत्र करते हैं। तथा उनको जला देते है। यदि उन्हें खुली जगह में जलाते हैं तो हानिकारक गैसें निकलती हैं जो पर्यावरण को नुकसान पहुँचाती है इसलिए इन्हें दहन यंत्र में जलाते हैं। भारत में दहन का संयंत्र नागपुर में लगाया गया है।

विखण्डन (Pyrolysis):– इस पद्धति के अन्तर्गत अपशिष्टों को मशीनों द्वारा पीसा जाता है क्योंकि वे न तो ज्वलनशील होते हैं और न ही पानी में घुलते हैं। जैसे कि–चीनी मिट्टी के बर्तन, प्लास्टिक आदि।

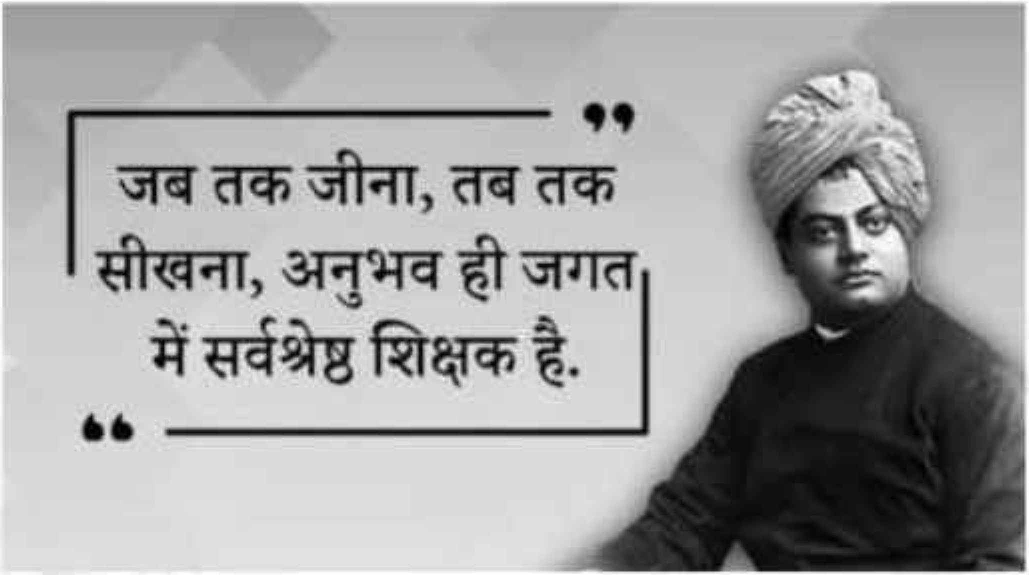

NCC and Personality Development

Prof. (Major) Mukesh Kumar
NCC officer

Personality (व्यक्तित्व) : व्यक्तित्व एक जन प्रचलित शब्द है, इसका प्रयोग व्यक्ति के सौंदर्य अथवा शारीरिक गुणों के लिए किया जाता है। प्रायः सुन्दर वेश– भूषा वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व को अच्छा कहा जाता है और गन्दी वेश–भूषा वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व को बुरा कहतें है। इस प्रकार अच्छे एवं बुरे में तुलना की जा सकती है।

व्यक्तित्व के विकास में NCC की भूमिका
(Role of NCC in development of personality)

व्यक्ति के विकास की दृष्टि से NCC के बिना व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास सम्भव नही है। व्यक्तित्व विकास में NCC की भूमिका निम्न प्रकार है–

मस्तिष्क की सजगता की वृद्धि में सहायक : NCC मस्तिष्क की जागरूकता एवं सजगता का विकास करती है, प्रत्येक क्रिया–कलापों के लिए मस्तिष्क की सजगता होती है। NCC इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

स्वास्थ्य एवं बीमारियों के बारे में जानकारी : NCC के अन्तर्गत स्वास्थ्य शिक्षा का समुचित ज्ञान कराया जाता है, यह ज्ञान आधुनिक युग में स्वास्थ्य एवं बीमारियों के बारे में जानकारी देने में ही सहायक नही है, वरन् यह व्यक्ति के समुचित विकास हेतु भी अत्यन्त आवश्यक है।

व्यक्ति के संवेगात्मक विकास में सहायक : NCC व्यक्ति के संवेगात्मक विकास में भी सहायक है, इसमें अनेक ऐसे शारीरिक क्रियाओं पर बल दिया जाता है जो संवेगात्मक विकास में सहायक होती है, NCC में तनाव, दबाव, आक्रामकता, आत्म समर्पण जैसे संवेगों पर नियंत्रण के साथ–साथ व्यक्ति को घबराहट पर नियंत्रण रखने में सहायता प्राप्त होती है।

अनुशासन में सहायक : व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से NCC का महत्व व्यक्ति को अनुशासन सिखाने और अनुशासन में रहने से है। अनुशासन को NCC की रीढ़ की हड्डी मानते हैं। यह समाज को भी अनुशासित नागरिक प्रदान करने में सहायक होत है।

सहन शक्ति बढ़ाने में सहायक : व्यक्तित्व के विकास हेतु सहन शक्ति आवश्यक मानी जाती है, जिस व्यक्ति में सहनशीलता होती है, वह अपने आप को समाज में भली–भाती समायोजित कर लेता है। NCC अनेक ऐसे अवसर प्रदान करती है जिससे सहन शक्ति को बढ़ाया जा सकता है।

व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक : किसी भी व्यक्ति के सर्वप्रथम व्यक्तित्व का अनुमान उसके शारीरिक ढाँचे से ही लगाया जाता है। NCC प्रत्येक व्यक्ति को विपरीत स्थिति से निपटने के लिए तत्पर बनाने में सहायक है।

चरित्र निर्माण में सहायक : NCC को व्यक्ति के चरित्र निर्माण की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जाता है, यह छात्रों को प्रसन्नचित, स्थिर एवं प्रबुद्ध नागरिक बनाने में सहायक है। इससे सामाजिक, व्यावसायिक एवं नैतिक कार्यों के लिए व्यक्तियों की योग्यता बढ़ जाती है। NCC व्यक्तियों को जटिलताओं, खतरों, एवं संकटों का सामना अच्छे ढंग से करना सिखाती है।

वैदिक साहित्य की रूपरेखा

डॉ. सत्यनारायण दास
(सहायक आचार्य संस्कृत)

वेद संसार के सबसे प्रचीन ग्रन्थ हैं, तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल स्रोत हैं। भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म में आस्था रखने वाले प्रत्येक मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि वह वेद एवं वैदिक साहित्य का सामान्य ज्ञान रखे जो कि भारतीयों की पहचान है। इस वैदिक साहित्य की रूपरेखा शीर्षक के अन्तर्गत वैदिक साहित्य के उन सभी प्रमुख ग्रन्थों को एक स्थान पर संकलित किया गया है जिनका ज्ञान भारतीय होने के लिए अपेक्षित है।

वेद शब्द विद् धातु से घञ् प्रत्यय करने से निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है ज्ञान। इस प्रकार वेद अनन्त ज्ञान की राशि या संग्रह ग्रन्थ हैं। आचार्य सायण ने वेद शब्द की एक पृथक व्याख्या की है: **''इष्ट प्राप्त्य निष्ट– परिहारयोरलौकिक मुपयां योग्रन्थों वेयति स वेद''**[1]

अर्थात् इष्ट की प्राप्ति तथा अनिष्ट की निवृत्ति का अलौकिक उपाय जो ग्रन्थ बताता है वेद कहलाता है। वेद से सम्बन्धित साहित्य को वैदिक साहित्य कहते हैं। भारतीय मनीषियों ने वैदिक साहित्य को चार भागों में विभाजित किया है– संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद्।

संहिता– संहिता का अर्थ संकलन है, इसका आशय यह है कि वेद किसी एक व्यक्ति की रचना नहीं है। ये विभिन्न ऋषियों द्वारा अलग अलग स्थानों पर बैठकर समाधि अवस्था में साक्षात्कार किये गये मंत्रों को एक साथ संकलित किये जाने के कारण संहिता कहा गया है। ये संहिताएँ चार है। ऋगवेद सहिंता, यजुर्वेद संहिता, सामवेद संहिता तथा अथर्ववेद संहिता। इन चारों संहिताओं के मंत्रों का पृथक–पृथक अध्वर्यु, उदगाता एवं ब्रह्मा कहा गया है। पाठ करने वाले चार ऋत्विज् होते हैं जिन्हें–

ऋग्वेद संहिता– ऋच् या ऋक् का अर्थ है स्तुति परक मंत्र– ''ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्''। अर्थात जिन मंत्रों के द्वारा देवताओं की स्तुति की जाती है। उन्हें ऋक्या ऋचा कहते हैं। ऋग्वेद के मंत्रों का पाठ करने वाला ऋत्विज् होता कहलाता है। पतञ्जलि ने ऋग्वेद की 21 शाखाओं का उल्लेख किया है– ''एकविंशतिधावाहवृच्यम्''। वर्तमान में केवल एक शाकल शाखा उपलब्ध है जिसमें 1028 सूक्त तथा 10580 मंत्र है।

यर्जुवेद संहिता– यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले मंत्रों को यजुष् कहा गया है। ''इज्यतेऽने नेति यजु:''। यजुर्वेद को अध्वर्युवेद भी कहते हैं क्योंकि इसके मंत्रों का पाठ करने वाला ऋत्विज् अध्वर्यु नाम से जाना जाता है। यजुर्वेद। इनमें शुक्ल यजुर्वेद आदित्य सम्प्रदाय से सम्बन्धित है जबकि कृष्ण यजुर्वेद ब्रह्म सम्प्रदाय से सम्बन्धित है। शुक्लयजुर्वेद में केवल मंत्रों का ही संकलन है परन्तु कृष्ण यजुर्वेद में मंत्रों के साथ ब्राह्मण भाग का भी मिश्रण है अतः इसे कृष्ण यजुर्वेद कहा जाता है।

पतञ्जलि ने महाभाष्य में यजुर्वेद की 100 शाखाओं का उल्लेख किया है। ''एकशतमध्वर्युशाखा''। इनमें दो शाखाएँ माध्यन्दिन एवं काण्व संहिता शुक्ल यजुर्वेद की है तथा तैत्तिरीय, मैगायणी, कठ, एवं कपिष्ठल ये चार शाखाएँ कृष्ण यजुर्वेद की है। सम्प्रति उत्तर भारत में प्रायः शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दि प्रचलित है जिसमें 40 अध्याय तथा 1975 मंत्र है। इसी का 40 वॉ शाखा अध्याय ईशावास्योपनिषद् के नाम से जाना जाता है। अन्य शाखाओं की संहिताओं में अध्याय एवं मंत्रों की संख्या समान नही है।

सामवेद संहिता– सवान् या साम् शब्द का अर्थ है गीति युक्त मंत्र।

यहाँ सा शब्द से अभिप्राय है ऋचा तथा अम का अर्थ है गीति। अर्थात् ऋग्वेद के मंत्र जब विशेष

गान पद्धति से गाये जाते हैं तब वे साम कहलाते है। इन मंत्रों का गान करने वाला ऋत्विज् उद्गाता कहलाता है। इसीलिए सामवेद की 1000 शाखाओं का उल्लेख किया है। ''सहस्र वर्त्मा सामवेदः''। किन्तु सम्प्रति सामवेद की (1) कौथुमीय, (2) राणायनी तथा, जैमिनीय तीन शाखाएँ ही प्राप्त है। इनमें 1875 मंत्र संख्या है। इनमें 1775 मंत्र ऋग्वेद से संकलित है तथा 104 मंत्र सामवेद में नवीन मंत्र है।

अथर्ववेदः– अथर्ववेद को योग साधना एवं चित्तवृत्ति निरोध एवं ब्रह्मप्राप्ति आदि विषयों से सम्बद्ध वेद कहा जाता है। इसका पाठ करता या प्रतिनिधि ऋत्विज् ब्रह्मा कहलाता है। इस वेद में आध्यात्मिक विद्या के साथ–साथ सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक विषयों का भी पर्याप्त वर्णन मिलता है। इसका पृथ्वी सूक्त राष्ट्रीय चेतना का उत्कृष्ट निदर्शन है जिसमें पृथ्वी को माता कहा गया है। माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः''।

महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में अथर्ववेद की नौ शाखाओं का उल्लेख किया है। ''नवधाऽथर्वणो वेदः'' परन्तु वर्तमान में केवल दो शौनकीय एवं पैप्पलाद शाखा ही प्राप्त है। शौनकीय शाखा के अनुसार अथर्ववेद में 20 काण्ड 730 सूक्त तथा 5987 मंत्र है।

ब्राह्मण ग्रन्थः– वैदिक साहित्य का दूसरा भाग ब्राह्मण ग्रन्थों के रूप में जाना जाता है। ब्राह्मण शब्द की व्युत्पत्ति ब्रह्मन् शब्द में अण् प्रत्यय करने पर हुई है। ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रमुख रूप से यज्ञीय विधि विधानों का एवं यज्ञ में प्रयुक्त मंत्रों की व्याख्या तथा विनियोग का वर्णन किया गया है। भट्ट भास्कर का कथन है की कर्मकाण्ड एवं मंत्रों के व्याख्यान ग्रंथों को ब्राह्मण कहते हैं।

''ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मन्त्राणांव्याख्यान ग्रन्थः।''

इन ब्राह्मण ग्रन्थों की प्रमुख विशेषता है कि ये गद्यात्मक एवं विधि प्रदान होते है। इनकी भाषा सरल एवं प्रसाद गुण युक्त होती है। प्राचीन आचार्यो ने प्रत्येक वैदिक संहिता से सम्बद्ध पृथक–2 ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना की है जो इस प्रकार हैः

(क)ऋग्वेदीय ब्राह्मणः	1. ऐतरेय ब्राह्मण,	2. शांखायन ब्राह्मण।
(ख) शुक्लयजुर्वेदय ब्रा.:	3 शतपथ ब्राह्मण।	
(ग) कृष्ण यजुर्वेदीय ब्राह्मणः	4 तैत्तिरीय ब्राह्मण।	
(घ) सामवेदीय ब्राह्मणः	5 पंचविंश ब्राह्मण या ताड्य (ब्राह्मण)	
6. षड्विंश ब्राह्मण,	7 छान्दोग्य ब्राह्मण,	
8 सामचविधान ब्राह्मण,	9. आर्षेय ब्राह्मण,	
10 देवताध्यायब्राह्मण,	11 मंत्र ब्राह्मण,	

12 वंश ब्राह्मण, 13 संहितोपनिषद् ब्राह्मण, 14 जैमिनीय ब्राह्मण।

(ङ) अथर्ववेदीय ब्राह्मणः गोपथ ब्राह्मण।

आरण्यक ग्रन्थ– '' अरण्येभवम् आरण्यकम्'' इस व्युत्पत्ति के अनुसार जिन ग्रन्थों की रचना एवं पठन पाठन मनन चिन्तन वन के शान्त एकान्त में बैठकर होता था उन ग्रन्थों को आरण्यक कहा गया है। इन की रचना ब्राह्मण ग्रन्थों के बाद हुई है। जब ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्णित यज्ञ प्रक्रिया कष्ट साध्य दुर्बोध नीरस एवं खर्चीली होने के कारण अरूचिकर होती जा रही थी, अतः आत्मिक शान्ति एवं अध्यात्म की आवश्यकता हुई जिसके परिणाम स्वरूप को उद्भव हो गया। आरण्यकों का मुख्य विषय अध्यात्म विद्या है, इसमें प्राण विद्या प्रतीकोपासना के साथ तत्व चिन्तन भी बहुत गहराई से किया गया है।

ब्राह्मण ग्रन्थों की तरह आरण्यक ग्रन्थ भी वेद की प्रत्येक शाखा से पृथक 2 सम्बन्धित है जिनका विरवण इस प्रकार है।

(1) ऋग्वेदीय आरण्यक– ऋग्वेद से सम्बन्धित दो आरण्यक उपलब्ध हैः1 ऐतरेय आरण्यक, तथा शांखायन आरण्यका

(2) शुक्ल यजुर्वेदीयः बृहदारण्यक है। यह शुक्ल यजुर्वेद की मध्यन्दिन एवं काण्व दोनो शाखाओं से सम्बंधित है।

(3) कृष्ण यजुव्रेदीयः इसके दो आरण्यक हैः– तैत्तिरीय आरण्यक 2. मैत्रायणी आरण्यक।

(4) सामवेदीप आरण्यकः– तवलकार आरण्यक।

(5) अथर्ववेदीयः– अथर्ववेद का कोई आरण्यक प्राप्त नही है। गोपथ ब्राह्मण के ही कुछ अंशो में आध्यात्मिक एवं ब्रह्मविद्या परक विचारों को वर्णन है जिन्हें आरण्यक कहा जा सकता है, किन्तु स्वतन्त्र ग्रन्थ के रूप में अर्थवेवेद का आरण्यक अभी तक प्राप्त नही है।

उपनिषद– उपनिषद् शब्द उप+नि उपसर्ग सद्‌धातु से क्विप् प्रत्यय करने पर बनता है। इसका अर्थ, तत्व ज्ञान के लिए गुरू के पास विनम्रता पूवर्क बैठना।

आचार्य शंकर ने उपनिषद् का अर्थ ब्रह्मविद्या माना है। उनके अनुसार सद् धातु के तीन अर्थ है 1. विशरण, 2. विशरण, 2. गति, अवसादन।

''षद्लृ विशरणगत्यावसादनेषु''

यहाँ विशरण शब्द का अर्थ है नाश अर्थात् उपनिषद् के अध्ययन से अविद्या का नाश हो जाता है। गति शब्द का आशय है प्राप्ति इसके द्वारा ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। अवसादन का अर्थ है शिथिल होना, जिससे मनुष्य के दुख एवं कर्म बन्धन शिथिल हो जाते है। इस प्रकार आचार्य शंकर ने अविद्या का नाश ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति एवं दुःख निरोध इन तीन अर्थों को लेकर उपनिषद् को ब्रह्मविद्या का घोतक माना है।

उपनिषद् को वेदान्त भी कहा गया है, क्योंकि यह वेदों का अन्तिम भाग है। यह भारतीय ज्ञान परम्परा का चरमोत्कर्ष है। इसमें आध्यात्मिक एवं दार्शनिक तत्वों का स्वतन्त्र प्रस्फुरण हुआ है। ईश्वर जीव जगत् कर्मफल मोक्ष जैसे सूक्ष्म विषयों का विस्तृत विवेचन किया गया है।

उपनिषद् साहित्य भी अपने आप में प्रोढ़ साहित्य है इनकी संख्या 108 से लेकर 200 तक मानी जाती है। किन्तु वर्तमान में प्रामाणिक उपनिषदें वहीं मानी जाती है जिनका भाष्य शंकराचार्य नें किया है। उन्हीं उपनिषदों को प्रमाणिक एवं प्राचीन माना जाता है।

वेदानुसार उन्हें इस प्रकार समझा जा सकता है।

(1) ऋग्वेदीय उपनिषदें– ऐतरीय, कोषीतकि उननिषद्।

(2) शुक्लयजुर्वेदीय उप.– ईश, बृहदारण्यक उपनिषद।

(3) कृष्ण यजुर्वेदीय उपनिषद– कठोनिषद् तैत्तिरीय उपनिषद् श्वेताश्वरोपनि. मैत्रायणी उपनिषद्।

(4) सामवेदीय उपनिषद्– केन उपनिषद् छान्दोग्योपनिषद्।

(5) अथर्ववेदीय उपनिषद– प्रश्नोंपनिषद् मुण्डकोपनिषद्,

इस प्रकार वैदिक साहित्य की रूपरेखा को संक्षिप्त रूप से एक लघुनिबन्ध के रूप में एक स्थान पर प्रस्तुत करने का लघु प्रयास सनातक परम्परा के जिज्ञाजुओं के साथ–2 छात्र छात्राओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

सन्दर्भ सूची–

01. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी पञ्चय संस्करण 2010 ई0

02. व्याकरण समहाभाष्य पस्पशाहनिक आचार्य मधुसूदन प्रसाद मिश्र चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी– संस्करण 2017

03. नवीन वैदिक संचयन भाग 1 डॉ. जमुना पाठक एवं डॉ. उमेश प्रसाद सिंह चौखम्बा कृष्ण दाम आकादमी वारणसी द्वितीय संस्करण सन् 2018

भारत में भूगोल का विकास

डॉ. शिष्ट पाल सिंह
भूगोल विभाग, शोहरतगढ़ सिद्धार्थनगर

भूगोल, अंग्रेजी भाषा के ज्योग्राफी (Geography) का हिन्दी, रूपान्तरण है, जो दो शब्द भू+गोल से बना है, जहाँ 'भू' शब्द का तात्पर्य 'पृथ्वी' तथा 'गोल' शब्द का तात्पर्य पृथ्वी के गोलाकार से है। भूगोल वह विज्ञान है जिसके द्वारा पृथ्वी के स्वरूप एवं उसके भौतिक विभागों (पर्वत, पठार, मैदान, देश, नगर आदि) का ज्ञान प्राप्त होता है। प्राकृतिक विज्ञानों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करते हुए, पृथ्वी विभिन्नताओं का मानवीय दृष्टिकोण से अध्ययन करना ही भूगोल का मुख्य तत्त्व है। पृथ्वी सतह पर पाये जाने वाले समताओं तथा विभिन्नताओं का कारण और उनका स्पष्टीकरण भूगोल के क्षेत्र में समाहित है।

सर्वप्रथम प्राचीन यूनानी भूगोलवेत्ता इरेटास्थनीज ने भूगोल को धरातल के विशिष्ट विज्ञान के रूप में मान्यता दिया। भूगोल शब्द को प्रथम प्रयोग यूनानी विद्वान इरेटास्थनीज ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व किया था। भूगोल विस्तृत क्षेत्र पर सभी भौतिक व मानवीय तथ्यों की अन्तक्रियाओं से उत्पन्न स्थलरुपों का अध्ययन करता है। यह बताता है कि किस प्रकार और कहाँ मानवीय व प्राकृतिक क्रिया–कलापों का उद्भव होता है और किस प्रकार एक–दूसरे से अन्तर्सम्बन्धित है। भूगोल के अध्ययन विधि में समयानुसार परिवर्तन होता रहा है। प्रारम्भिक विद्वान वर्णनात्मक एवं उसके बाद विश्लेषणात्मक परन्तु वर्तमान विद्वान इसमें वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन के साथ–2 इसमें भविष्य में होने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी को भी इसके विषय–वस्तु में शामिल किया है।

भूगोल एक विषय के रूप में प्राचीन काल से ही उपयोगी रहा है। भारत, चीन और प्राचीन यूनानी–रोमन भूगोलवेत्ताओं में प्राचीन काल से ही स्थानों के वर्णन और अध्ययन करने की प्रवृत्ति थी। मध्यकालीन युग में अरब व ईरानी लोगों ने यात्राओं के द्वारा इसकी विषय–वस्तु को समृद्ध किया। आधुनिक युग के प्रारम्भिक काल के साथ ही भौगोलिक खोजों का युग प्रारम्भ हुआ, जिसमें पृथ्वी के ज्ञात भागों एवं उसके निवासियों के बारे में जानकारी मिली। भूगोल की विचारधारा में भी समय के साथ–साथ परिवर्तन हुआ, जिनका अध्ययन भूगोल के इतिहास में किया जाता है।19वीं सदी में भूगोल पर्यावरण निश्चयवाद, सम्भववाद से होता हुआ 20वीं सदी में मात्रात्मक क्रान्ति और व्यवहारवाद से होते हुए वर्तमान समय में भूगोल का चिन्तन आलोचनात्मक भूगोल तक पहुँच गया है।

भूगोल से सम्बन्धित घटना–कालक्रम–

भूगोल से सम्बन्धित घटनाओं का कालक्रम निम्न है–

- 2300 ईसा – पूर्व– मेसोपोटामिया में पत्थर पर पहला नगर मानचित्र निर्मित।
- 450 ईसा – पूर्व– हेरोडोटस ने ज्ञात संसार का मानचित्र बनाया।
- 1154 में – इदरीसी द्वारा विश्व भूगोल पर पुस्तक प्रकाशित
- 1500 में – काब्रल ने ब्राजील की खोज की।
- 1519 में – मैगलन पृथ्वी की परिक्रमा करने निकला।
- 1569 में – मरकेटर ने अपना मानचित्र बनाया।

- 1714 में — ब्रिटानी सरकार ने समुद्र में देशान्तर का सही निर्धारण करने की विधि बताने वाले को 20,000 पौण्ड का पुरस्कार देने की घोषणा की।
- 1830 में — लंदन में "Royal Geographical Society" की स्थापना।
- 1845 में — वॉन हम्बोल्ट ने Cosmos का प्रथम भाग प्रकाशित किया।
- 1850 में — मानचित्र के लिए फांस में कैमरे का प्रथम प्रयोग।
- 1874 में — जर्मनी में भूगोल का पहला विभाग खुला।
- 1888 में — "National Geographical Society" की स्थापना।
- 1895 में — विश्व का प्रथम "Times Atlas of the World" प्रकाशित।
- 1909 में — पियरी उत्तरी ध्रुव पहुँचा।
- 1911 में — अमुण्डसेन दक्षिणी ध्रुव पहुँचा।
- 1912 में — वेगनर ने Continental drift" का सिद्धान्त दिया।
- 1913 में — ग्रीनविच को O^{0} देशान्तर स्वीकार किया गया।
- 1957–58 —अन्तर्राष्ट्रीय भूगोल वर्ष।

भूगोल का पूर्ण रूपेण विकास भारत में अभी भी नहीं हुआ है। 18वीं शताब्दी के अन्तिम दौर तक भूगोल विषय के बोरे में बहुत कम जानकारी थी तथा जो भी जानकारी उपलब्ध होती थी, उसका अध्ययन एक मात्र संस्थान ''सर्वे ऑफ इण्डिया'' (Survey of India) करती थी। जिसकी स्थापना 1767 में देहरादून में किया गया।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के बाद भारत में भूगोल के क्षेत्र में कुछ खास विकास नहीं हो पाया था क्योंकि यहाँ खोजों एवं अन्वेषणों का पर्याप्त अभाव था। उच्च शिक्षण संस्थानों, विश्वविद्यालयों एवं स्कूलों में ऐसे शिक्षकों का अभाव था, जिनका इस विषय पर अच्छी जानकारी थी। इस समय भूगोल का अध्ययन केवल इतिहास, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र आदि विषयों के साथ पढ़ाया जाता था, क्योंकि भूगोल का एक स्वतंत्र विषय के रूप में विकास नहीं हुआ था।

भारत के प्रमुख भौगोलिक संस्थान–

भारत में भूगोल के विकास में निम्न भौगौलिक संस्थानों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है–

- भारत में ''सर्वे ऑफ इण्डिया'' की स्थापना 1767 में देहरादून में की गई। इस संस्थान में भू–पत्रक (टोपोशीट, मानचित्रावली) बनाये जाते है।
- राष्ट्रीय रिमोट सेसिंग एजेन्सीज– हैदराबाद।
- भारतीय विश्वविद्यालयों में भूगोल को विषय के रूप में अध्ययन 1931 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ में प्रारम्भ हुआ। प्रो. इबदुर्रहमान इस विवि. में भूगोल के पहले प्रोफेसर थे। प्रो. मुजफ्फर अली ने पैराणिक भूगोल की नींव रखी। इन्होंने 1966 में Geography of Puranas नामक पुस्तक का प्रकाशन किया।
- कलकत्ता वि.वि. प्रोफेसर एस.पी. चटर्जी का योगदान।
- बनारस विवि.– सर्वप्रथम डॉ. एच. एल. छिब्बर–1947 में भूगोल विभाग की स्थापना किया।

- पंजाब विवि.– इसकी स्थापना सन् 1944 में हुई थी। प्रो. आर. सी. चाँदना एवं ए.बी. मुखर्जी प्रमुख प्रोफेसर थे।
- उस्मानिया विवि. हैदराबाद– यहाँ भूगोल विभाग की स्थापना 1955 में सैय्यद अहमद ने की थी।
- राजस्थान विवि.– भूगोल की स्थापना 1966 में हुई थी। जिनके प्रमुख प्रोफेसर– डॉ. इन्द्रपॉल, प्रो. लक्ष्मी शुक्ला, रामकुमार गुर्जर एवं वी. सी. जाट, आदि थे।
- जे. एन. यू. दिल्ली– भूगोल विभाग की स्थापना–1969 में प्रो मुनिसिराफ ने की। मनिसराज को आधुनिक भारतीय भूगोल का महत्वपूर्ण स्तम्भ माना जाता है। भारत का एक मात्र ऐसा भूगोलविद जिसने पी.एच.डी. नहीं की लेकिन अनेकों छात्रों को पी.एच. डी. करवाई।

भारत में भूगोल के विकास में योगदान देने वाली कुछ प्रमुख भौगोलिक परिषदे निम्नलिखित है–

- भारतीय राष्ट्रीय भूगोल परिषद (NAGI) वारणसी–1946
- भारतीय भूगोलवेदत्ताओं का राष्ट्रीय संघ (NAGI)
- बम्बई भूगोल परिषद– मुम्बई
- भारतीय भूगोल परिषद– कोलकाता
- उत्तर–भारत भूगोल परिषद–गोरखपुर (1968)
- भारतीय भूगोल परिषद नई दिल्ली (1955)
- हैदराबाद भूगाल परिषद हैदराबाद (1962)
- NATMO- National Atlas and Thematic Mapping Organisation Kolkata-1956

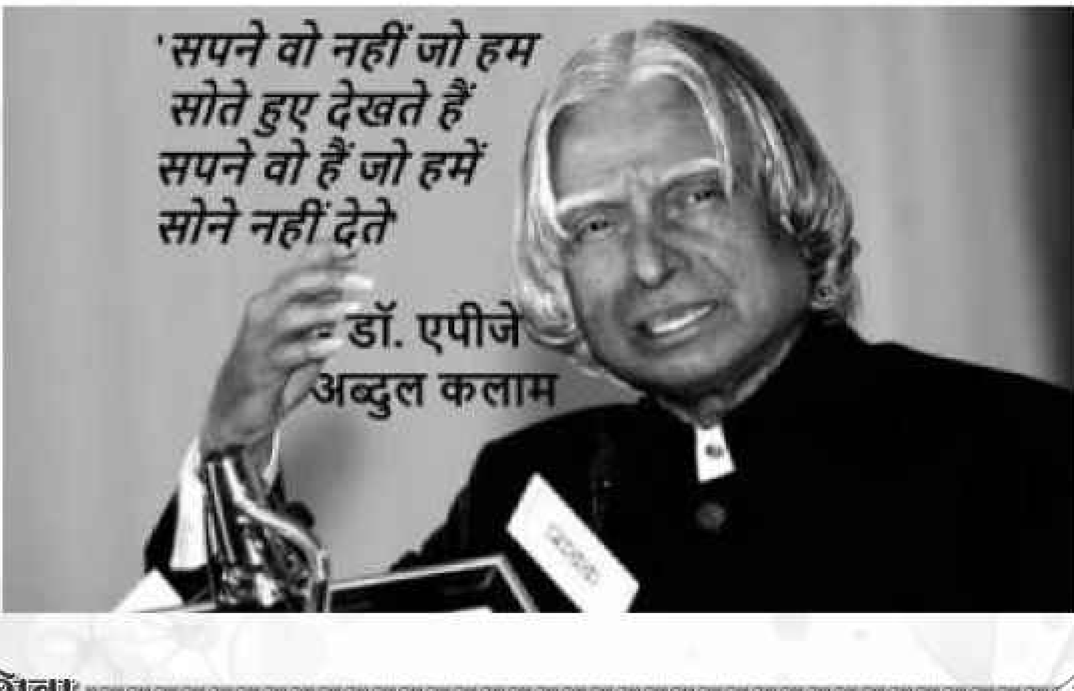

STRUCTURAL TRANSFORMATION SAFETY

Prof. MUKESH KUMAR
Dept. of Physics

Power transformation are generally safety by differential safety schemes that use voltages and streams to distinguish variations from the norm in the differential zone of safety for this sort of plan, a short out or high extent current must be available to start a trek. Be that a sit may. This plan wouldn't not be perfect when transformation should be over-burden to alleviate possibility conditions utilizing the per IEEE give for loading of oil- Immeresed power Transformations. One can thermally rate transformations past their name plate conditions to a level that is safe for operation. Utilizing the guide. Specialists can set up ceaseless, care and here and now crisis transformation ratings Administrators can utilize these evaluations until the point that the possibility conditions are relieved be that as it may. On made that transformation has outpered the here and now emergency rating. The transformation may achieve basic temperatures and could manage harm. safeties engineers can made facilitate transformation, Theories of operations and the executions of electronic and structural Transformation safety.

Transformation dynamic evaluations can likewise be utilized to create setting criteria for warm transfers. new numerical transfers are equipped for imitating the thermal model laid out by the IEEE manage. and the hand-off specialist can set thermal limits in view of the dynamic evaluations built up by the death toll of protection and winding most blazing spot estimations. Likewise some thermal transfers can forces future temperature states in view of consistent present esteems. Some ideas can alert system operators 15 to 30 mins in progress of a temperature limit. Keeping in mind the end goal. to appropriately apply warm security for the power transformation. An unmistakable temperature of thermal aspects amid overloads is important. with no load secondary winding. an energized Transformation be haves as a highly inductive element. similar toa shut to a shut reactor. In order to keep this transformations energized the alternating excitation current is draw from the system. producing an alternating nutal flux in the primary winding this mutual flux is taken by the core at a rate that depends on the system frequency the energy requirements for this cyclic magnetization of the core result into types of transformation losses. eddy and hysteresis losses in undesirable currents within the laminations. Such current are their energy is lost to heat.

A load serving transformer not only experiences an electrical process but also goes through a thermal process in the main source of temperature rise the transformer. However the losses of the winding and story losses seen from the structural parts are the main factors of heat winding is transformer walls. this process will continue until an equals the heat taken away by some from of could not or cooling system. This heat transfer mechanism must not allow the core windings of any structural parts to reach critical temperatures that could dielectric insulating properties of the insulation can be weekended if temperatures above the limiting values are permitted. As a result the insulation ages more rapidly, reducing its normal life. According to the IEEE C57.91-1995 guide, the insulation is the overall life a transformers.

Nanomaterials

Dr. Umashankar Prasad Yadav
Assist. Prof. Physics

Any material manipulated at the scale of nanometer is called nanomaterial. Nanomaterials are the leading edge of the rapidly developing field of nanotechnology. Their unique size dependent properties make these materials superior and indispensable in many areas of human activities. It is expected that nanotechnology will be developed at several levels: materials, devices and systems. The nanomaterials level is the most advanced at present, both in scientific knowledge and in commercial application. Interface and colloid science has given rise to many materials which may be useful in nanotechnology. such as carbon nanotubes, nanorods, nanowires and other fullerenes. Nanomaterials are made of carbon, ceramics, chemical precursors, ferrites, metals, minerals, polymers, semiconductors and silica or silicate. Nontechnological products are consolidated materials or devices that utilize nanostructures.

There are many types of nanomaterials and nanotechnology products. Fullerene or buckyballs are CO-molecules with a cage-like structure of 60 or more atoms. Nanotubes are toroidal shaped fullerene molecules or strings of stacked CO carbon molecules. Nanogels, aerogels, hydrogel and other nanoporous materials are used for thermal insulation. Nanocrystals or quantum dots are used in optical displays, computer memory, cryptography, photovoltaics, storage media, flexible electronics, neutral networks, telecommunication components and quantum computing. Solar cells and fuel cells powered by fullerenes and nanotubes produced from biofuels. Our single walled nanotubes are ideal candidate to replace Indium, an increasingly rare material used in touch screens, LCD's and displays. Our fullerenic materials can be compounded with polymers to make them more durable and energy efficient and have the potential to be modified to act as efficient catalysts and filter media. Nanodevices are electronic, optical, mechanical or electromechanical products built on a nanoscale or with nanosized components.

A material that is harder than diamond has been created in lab by interlocking together tiny nanorods of carbon. The new material, known as Aggregated Carbon Nanorods (ACNR) was created by compressing super-strong carbon molecules, called Buckyballs or C60 to 200 times normal atomospheric pressure. while simultaneously heating it to 2226°C. This new material have a wide range of potential is industrial applications, as it is stable at very high temperatures and could be better than normal diamond for deep drilling and polishing abrasive materials.

Famous Stories in Mathematical History

Devendra Singh
Dept. of Maths

Mathematics is filled with fascinating stories that highlight its beauty, history, and the lives of its practitioners. Here are a few intriguing mathematical stories:

1. The Seven Bridges of Königsberg

In the 18th century, the city of Königsberg (now Kaliningrad, Russia) was built around the Pregel River, with two large islands connected to each other and the mainland by seven bridges. The problem posed was whether one could walk through the city and cross each bridge exactly once. This question led to the development of graphtheory by mathematician Leonhard Euler, who proved that such a walk was impossible. This story illustrates the birth of a new area of mathematics from a practical problem.

2. Fermat's Last Theorem

Fermat's Last Theorem states that there are no three positive integers a, b and c that satisfy the equation $a^n+b^n=c^n$ for any integer value of n greater than 2. Pierre de Fermat famously wrote in the margin of his copy of an ancient Greek text that he had discovered a "truly marvelous proof" of this theorem, but it was too large to fit in the margin. For over 350 years, the theorem remained unproven until Andrew Wiles, in 1994, provided a proof that drew on advanced concepts in algebraic geometry and number theory, marking a monumental achievement in mathematics.

3. The Discovery of Zero

The concept of zero as a number is a profound development in mathematics. While ancient cultures used placeholders to denote absence, the formalization of zero as a digit and a concept emerged in India around the 5th century. The mathematician Brahmagupta was one of the first to formulate rules for using zero in calculations. The introduction of zero revolutionized mathematics and paved the way for the development of calculus and modern mathematics.

4. The Monty Hall Problem

This probability puzzle is based on a game show scenario. A contestant is presented with three doors: behind one door is a car (the prize), and behind the other two are goats. After the contestant picks a door, the host, who knows what's behind the doors, opens one of the remaining doors to reveal a goat. The contestant is then given the option to stick with their original choice or switch to the other unopened door. Counterintuitively, switching doors gives the contestant a 2/3 chance of winning the car, while sticking with the original door gives only a 1/3 chance. This problem highlights the complexities of

probability and decision-making.

5. The Poincaré Conjecture

Formulated by Henri Poincaré in 1904, the conjecture posits that every simply connected, closed 3-manifold is homeomorphic to the 3-sphere. It remained one of the most important unsolved problems in topology until Grigori Perelman provided a proof in 2003 using Ricci flow techniques. His work not only confirmed the conjecture but also earned him a Fields Medal, which he famously declined. The story emphasizes the deep connections between different areas of mathematics and the nature of mathematical genius.

6. The Fibonacci Sequence and the Golden Ratio

The Fibonacci sequence, where each number is the sum of the two preceding ones, appears in various natural phenomena, such as the branching of trees and the arrangement of leaves on a stem. The ratio of successive Fibonacci numbers converges to the Golden Ratio (approximately 1.618), which has been associated with aesthetics in art and architecture. This connection between mathematics and the natural world is a compelling narrative in the study of both mathematics and biology.

These stories not only showcase the richness of mathematical thought but also highlight how mathematics interacts with culture, history, and nature.

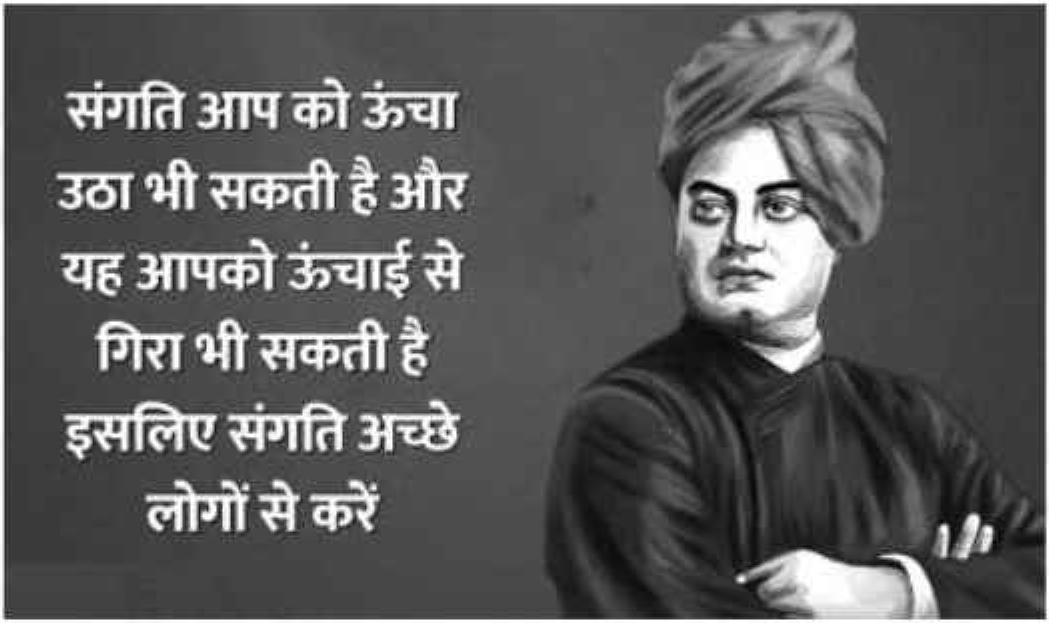

SOCIAL MEDIA ADDICTION AND STUDENTS

Dr. Praveen Kumar
Asst. Professor
Department of Teacher Education

Introduction:

In the digital age, social media has become an integral part of daily life, especially for students. Platforms like Facebook, Instagram, Twitter, and TikTok allow users to stay connected, share experiences, and access vast amounts of information. However, as social media usage among students continues to grow, so does the concern over its potential addictive qualities and its impact on academic performance, mental health and social well-being. Social media addiction is a growing issue among students and understanding its causes, effects and possible solutions is crucial in addressing the problem.

The Rise of Social Media Addiction among students :

The widespread use of smart phones and the internet has contributed significantly to the rise of social media addiction. According to studies, students spend a substantial amount of time on social media, with some logging several hours a day. The easy accessibility of platforms, along with the constant stream of notifications and updates, can make it difficult for students to disconnect. Social media's algorithms are designed to keep users engaged by providing personalized content, leading to endless scrolling and a constant desire for new information or validation through likes, comments, and shares.

For students, this addiction can be particularly problematic. Social media use often starts as a way to stay in touch with friends, share academic resources, or even relax. However, for many, it quickly becomes a time-consuming habit that interferes with their responsibilities. The constant need for social validation, coupled with the fear of missing out can make it hard to balance online activity with real-world commitments.

The Negative Effects on Academic Performance:

One of the most noticeable effects of social media addiction on students is its impact on academic performance. Students who spend excessive time on social media platforms often neglect their studies, leading to poor grades and incomplete assignments. The constant distractions from notifications can make it difficult to focus on academic tasks, leading to procrastination and inefficient time management.

Studies have shown a negative correlation between time spent on social media and academic achievement. Students who use social media excessively tend to have lower academic performance, as they are more likely to engage in multitasking, which can

reduce cognitive efficiency. For example, checking notifications during study sessions disrupts the learning process, causing students to retain less information and struggle with concentration.

Furthermore, the pressure to maintain an online persona can lead students to prioritize their virtual lives over their academic or personal growth. Instead of dedicating time to studying or extracurricular activities, students may spend hours curating their online image, which only exacerbates their academic challenges.

The Impact on Mental Health:

Social media addiction also has significant implications for students' mental health. Research has linked excessive social media use with increased feelings of anxiety, depression, and loneliness. The constant comparison to others on social media can lead to feelings of inadequacy and low self-esteem, as students may perceive their peers as living perfect lives while their own experiences seem less fulfilling.

The curated nature of social media where users only share highlights of their lives-can create unrealistic expectations and foster a sense of dissatisfaction with one's own life. This phenomenon, often referred to as "social media envy," can cause students to feel isolated, as they struggle to reconcile the image of their peers' lives with their own.

Moreover, the dopamine-driven feedback loops that social media platforms create can also contribute to anxiety. The desire for instant gratification through likes and comments can lead to an unhealthy dependency on external validation. This reliance on social media for affirmation can make students more vulnerable to stress and emotional instability.

The Effects on Social Skills and Real-Life Relationships:

While social media allows students to stay connected, excessive use can negatively affect their face-to-face communication skills. Many students, especially younger ones, find it easier to express themselves online than in person. This can lead to a reduction in real-world interactions and a decline in the development of social skills, such as empathy, nonverbal communication, and conflict resolution.

Social media addiction can also strain relationships with family and friends. Students may prioritize virtual interactions over spending quality time with loved ones, which can lead to feelings of neglect or resentment. Additionally, the anonymity of online platforms can sometimes encourage toxic behavior, such as cyberbullying or negative self-comparisons, further damaging relationships.

Potential Solutions and Strategies for Mitigation:

Addressing social media addiction among students requires a multi-faceted approach that involves students, parents, educators, and even social media companies

themselves. First, students need to be educated about the risks of excessive social media use and the importance of setting boundaries. Time management skills and the ability to prioritize academic and personal responsibilities are essential in helping students reduce the negative effects of social media.

Educational institutions can play a crucial role by implementing programs that promote digital literacy and mindfulness. By teaching students how to use social media responsibly and encouraging healthy online behaviors, schools can help students navigate the digital world more effectively. Teachers can also incorporate strategies such as "social media detox" days or classroom discussions on the effects of social media to foster a balanced approach to technology.

Parents also have a role to play in monitoring their children's social media usage. Setting clear guidelines for screen time, encouraging offline activities, and fostering open communication about online experiences can help students manage their social media habits more effectively. Moreover, parents can serve as positive role models by using social media in moderation and demonstrating healthy digital behaviors.

Lastly, social media companies themselves have a responsibility to minimize the addictive nature of their platforms. This can include limiting the frequency of notifications, providing users with tools to track and control their usage, and creating content that promotes mental well-being rather than superficial validation.

Conclusion:

Social media addiction is a growing issue among students, with significant consequences for academic performance, mental health, and social relationships. The constant connectivity offered by social media can be both a blessing and a curse, and it is essential that students develop strategies to use these platforms in a healthy, balanced way. Through education, open communication, and responsible usage, students can learn to harness the benefits of social media without falling prey to its addictive tendencies. By taking a proactive approach, we can ensure that social media serves as a tool for positive connection rather than a source of distraction and distress.

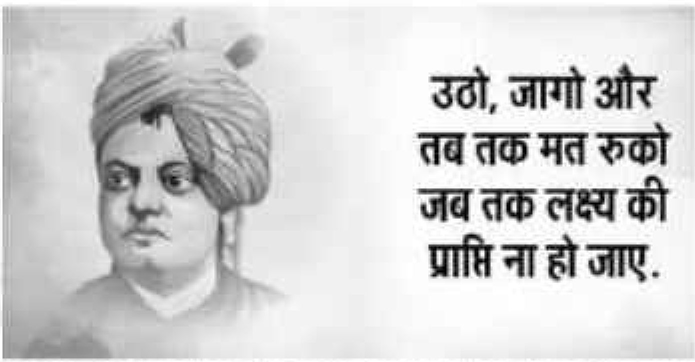

INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM

Mr. Shashi Shekhar Mishra
(Assistant Professor B.Ed. Department)

Indian knowledge system is an ancient and rich collection of beliefs, practices, and philosophies that have been passed down from generation to generation in India. It encompasses various fields such as science, spirituality, art, literature, and social norms, and has played a significant role in shaping Indian society and culture. The foundation of the Indian knowledge system lies in the ancient texts of the Vedas, which are considered to be the oldest scriptures in the world. The Vedas contain a vast amount of knowledge on subjects ranging from medicine, astronomy, mathematics, and politics, to spirituality and philosophy. They provide insights into the Indian way of life, highlighting the importance of balance, harmony, and unity in society. One of the key aspects of the Indian knowledge system is its holistic approach towards life. It acknowledges the interconnectedness of all aspects of existence - from the individual to society, from human beings to nature, and from the physical to the spiritual. This holistic approach is reflected in various Indian practices, such as Ayurveda, Yoga, and Vastu Shastra, which focus on maintaining balance and harmony within and with the environment. Another significant aspect of the Indian knowledge system is its emphasis on seeking knowledge through observation and personal experience. This approach is reflected in the teachings of ancient Indian sages and philosophers, who encouraged critical thinking and self- reflection as a means to gain wisdom and understanding. It also highlights the value of oral tradition, with knowledge being passed down through storytelling, discussions, and debates. The Indian knowledge system has deeply influenced Indian society and culture, shaping its values, customs, and traditions. It has fostered a deep sense of community, with individuals being a part of a larger social fabric. This has resulted in a strong emphasis on familial bonds, respect for elders, and a sense of duty towards society. One of the most significant impacts of the Indian knowledge system is on spirituality and religion. The concept of dharma, which means righteousness or duty, lies at the core of Indian spirituality. It emphasizes the importance of living a virtuous life, fulfilling one's duties towards oneself, society, and the universe. This has led to the development of various religions and spiritual practices in India, such as Hinduism, Buddhism, Jainism, and Sikhism, which have shaped the cultural and societal fabric of the country. Thus, the Indian knowledge system is a vast and intricate web of beliefs, traditions, and practices that have been woven into the very fabric of Indian society and culture. It has played a crucial role in shaping the Indian way of life, promoting harmony and balance, and instilling a deep sense of spirituality and community. Its influence is still visible in modern-day India, making it a crucial aspect of the country's identity and heritage.

The Indian knowledge system, also known as the Indian school of thought or Hindu philosophy, refers to the vast body of knowledge, beliefs and practices that have been developed and passed down from ancient times in the Indian subcontinent. This knowledge system is

deeply rooted in the ancient Vedic scriptures and has evolved over thousands of years, shaping the cultural, intellectual and spiritual landscape of India. The origins of the Indian knowledge system can be traced back to the ancient Vedic period, which began around 1500 BCE. The Vedas, the oldest scriptures of Hinduism, were composed during this time and are considered the foundation of Indian knowledge and philosophy. The Vedas are a collection of hymns, rituals, and mantras that were transmitted orally from generation to generation for centuries before being written down. They contain a wide range of knowledge regarding rituals, sacrifices, cosmology, ethics, and spirituality. The early Vedic period was followed by the emergence of the Upanishads, which are philosophical texts that expound upon the deeper meaning and significance of the Vedas. The Upanishads introduced the concept of self-realization, or the realization of one's true nature as being intertwined with the divine and the universe. They also laid the foundation for the concept of karma, the law of cause and effect that governs the cycle of birth, death, and rebirth. Around 500 BCE, the period of the Upanishads gave way to the emergence of several schools of thought in India, each with its own interpretations and philosophical systems. These include Vedanta, Samkhya, Yoga, and Jainism, among others. These schools of thought brought new developments and interpretations to the original Vedic teachings, leading to a diversification of Indian knowledge and philosophies. One of the most influential schools of thought was Vedanta, which emerged in the post-Vedic period and focused on the concepts of self-realization and the ultimate reality. It emphasized the non-dual nature of the universe and the belief in the existence of a universal consciousness. Another important school of thought, Buddhism, emerged in the 6th century BCE and spread throughout Asia, greatly influencing Indian knowledge and philosophy. With the emergence of Buddhism and Jainism, the caste system, which had been prevalent in ancient India, began to weaken. These new religions challenged the traditional Brahmanical order and brought about significant social and religious reforms. As a result, the caste system gradually transformed into a class system, opening up opportunities for people from lower castes to access education and knowledge. In the medieval period, with the rise of Islamic invasions and the arrival of European colonial powers, Indian knowledge faced challenges and underwent significant changes. The Islamic rulers brought their own traditions and practices, and the European colonizers introduced Western education and ideas, leading to a fusion of Indian and Western philosophies. Even with these changes, the Indian knowledge system continued to thrive and adapt. The Bhakti movement of the 15th and 16th centuries brought an emphasis on devotion and love for the divine, while the rise of Sikhism in the late 15th century synthesized elements of Hinduism and Islam. With the country gaining independence from British rule in 1947, renewed efforts were made to revive and promote Indian knowledge and philosophy. The founding fathers of independent India recognized the importance of preserving and promoting the rich cultural heritage of the country. As a result, many institutions were established to protect and promote Indian knowledge, and ancient scriptures and philosophies were given a prominent place in education and society.

LASER DEFENCE SYSTEM

Dr. Ram Kishor Singh
(Assistant Professor, Department of Physics)

Lasers, which stand for Light Amplification by Stimulated Emission of Radiation, are incredibly versatile tools used across various fields. Albert Einstein suggested in 1916 that atoms could release excess energy as light, leading to the concept of stimulated emission. In 1951, Charles H. Townes developed a device to generate stimulated emission at microwave frequencies, called the maser. Aleksandr Prokhorov and Nikolay Basov independently worked on similar theories, and all three shared the 1964 Nobel Prize for Physics for their contributions to this field. Theodore H. Maiman constructed the first practical laser at Hughes Research Laboratories in 1960, marking a significant leap in cutting-edge technology of the era. The laser produces an intense, highly directional beam of light. The most common cause of laser- induced tissue damage is thermal, resulting from the denaturation of tissue proteins due to the temperature increase following laser energy absorption. Laser development continues to advance, bringing about new possibilities in technology, medicine, and defense. Developing a high-power laser system is a complex and multidisciplinary process that requires expertise in optics, electronics, materials science, and thermal management. Continuous advancements in technology and innovation are driving the development of more powerful, efficient, and versatile laser systems for a wide range of applications.

India has been actively developing laser defense technology. The Defence Research and Development Organisation (DRDO) has successfully completed trials for a 30-kilowatt (kW) laser weapon system. This system is designed to neutralize aerial threats such as drones and helicopters and is now ready for mass production and deployment. India's laser defense technology is comparable to similar systems developed by other countries, with a focus on cost-effectiveness, mobility, and precision targeting. Currently, DRDO is also working on a 300kW laser system that can take out sub-sonic cruise missiles and other projectiles. This development represents a significant leap forward in India's defense capabilities.

Israel has been developing and deploying advanced laser technology for defense purposes, particularly in the context of its ongoing conflicts. One of the most notable systems is the Iron Beam, a high-powered laser air defense system designed to counter various aerial threats such as rockets, mortars, unmanned aerial vehicles (UAVs), and cruise missiles. Iron Beam is a ground-based high-energy laser weapon system developed by Rafael Advanced Defense Systems and Elbit Systems. It is designed to complement Israel's existing defense systems like the Iron Dome by providing an additional layer of protection against smaller projectiles and drones. The Iron Beam is capable of intercepting a wide range of threats, including Small-Caliber Mortars and Rockets, Drones and UAVs and Artillery and Cruise Missiles.

Let's compare India's laser defense technology with similar systems developed by other countries:

Feature	India's 30kW Laser System	Israel's Iron Beam	US Navy's LaWS
Power Output	30 kW	100 kW	30 kW
Operational Range	Up to 5 km	Several km	Up to 1 km
Mobility	Air, rail, road, sea	Ground-based	Shipborne
Targeting Capabilities	360-degree EO/IR sensor	High precision targeting	360-degree targeting
Cost-Effectiveness	Low cost per shot	Almost zero cost per shot	Low cost per shot
Applications	Drones, helicopters, sub-sonic cruise missiles	Rockets, mortars, UAVs, cruise missiles	UAVs, small boats

Challenges and Limitations of laser defence system:

1. **Weather Conditions:** Its effectiveness can be reduced in low visibility conditions such as fog, heavy rain, or sandstorms.
2. **Range:** The system is effective up to several kilometres, but its range is limited compared to some missile-based systems.

Laser defense systems represent the future of modern warfare, providing a highly efficient, cost-effective, and precise method of neutralizing aerial threats. With continuous advancements in technology, these systems will play an increasingly vital role in both military and civilian defense strategies, ensuring enhanced security and protection against evolving threats.

संघर्ष ने मुझे मनुष्य
बनाया, मुझमें
आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ
जो पहले मुझमें नहीं था।

–सुभाष चंद्र बोस

डिजिटल अरेस्ट

अश्वनी कुमार सिंह
स्टेनो / आशुलिपिक
केन्द्रीय प्रशासनिक भवन

साइबर अपराधों में नवीनतम तरीके डिजिटल अरेस्ट को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 27 अक्टूबर को 'मन की बात' में जिक्र किया, इसी से समझा जाना चाहिए कि यह मामला कितना गंभीर हो चुका है। साइबर ठग अब पढ़े लिखे लोगों को भी अपने भावनात्मक और फर्जी आधिकारिक जाल में फंसाकर उनकी पसीने की गाढ़ी कमाई को एक झटके में लूट रहे हैं। इस पूरी लूट का चिंताजनक पक्ष यह है कि डिजिटल अरेस्ट का शिकार ज्यादातर वो लोग हो रहे हैं, जो बुजुर्ग हैं और आमतौर पर कानून और व्यवस्था का सम्मान करने वाले हैं। ये अभी भी मानते हैं कि नियम कायदे, सरकारी दस्तावेज और आधिकारिक संस्थाएं फर्जी नहीं हो सकती।

साइबर अपराधी भावनात्मक रूप से अपने शिकार को ब्लैकमेल करते हैं। साइबर अपराधी मनोवैज्ञानिक तरकीब (ट्रिक्स) हैलो इफेक्ट का उपयोग करते हैं। इसका अर्थ यह है कि आप सीमित जानकारी के आधार पर किसी के प्रति एक सकारात्मक मान्यता रखते हैं। साइबर अपराधी इसी का नाजायज फायदा उठाते हैं। वो आपके आधार कार्ड, वाहन क्रमांक, आप का कार्यस्थल या पारिवारिक जानकारियां हासिल कर आपको बताते हैं तो आपको लगता है कि सामने वाला कोई आधिकारिक व्यक्ति है और सच बोल रहा है। आप डर जाते हैं और कई बार वो जानकारियां भी सामने वाले को दे बैठते हैं, जो नहीं दी जानी चाहिए।

साइबर अपराधी आपके मनोविज्ञान को तेजी से भांपते हैं और जैसे ही उन्हें लगता है कि आप उसकी बातों से डर गए हैं, वो आपका और भी दबंगई से भयादोहन करने का प्रयास करते हैं। लोग जाल में पड़ने लगते हैं, बजाय यह सोचने कि उसे आदेशित करने वाला कौन है?

इसे मनोविज्ञान की भाषा में 'फुट इन द डोअर' मनस्थिति कहा जाता है। कुल मिलाकर साइबर अपराधी मानव मनोविज्ञान का दोहन करके आपसे आपके पसीने की कमाई लूट लेते हैं और आप बेबस होकर लुटते जाते हैं। ऐसा करते वक्त साइबर अपराधी के मन में कोई समानुभूति नहीं होती कि वो जिसे अपना शिकार बना रहे हैं, वो कौन है और अपना सब कुछ गंवाने के बाद उसकी मानसिक स्थिति क्या होगी?

सरकारी आंकड़ों के मुताबिक इस साल जनवरी से अप्रैल तक भारतीयों को 'डिजिटल अरेस्ट' के जरिए की गई धोखाधड़ी से 120.30 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। इस साइबर फ्रॉड के आका दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों म्यांमार, लाओस और कंबोडिया में बैठे हैं। लेकिन इन पर कठोर अंकुश के लिए हम कुछ खास नहीं कर पा रहे हैं।

ऑनलाइन अपराधों की निगरानी करने वाला संस्थान भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) के अनुसार डिजिटल अरेस्ट अब डिजिटल धोखाधड़ी का एक आम तरीका बन गया है। I4C के

अनुसार, साइबर घोटाले चार प्रकार के होते हैं – डिजिटल अरेस्ट, ट्रेडिंग घोटाला, निवेश घोटाला (कार्य आधारित) और रोमांस /डेटिंग घोटाला।

इसमे आपको एक फोन कॉल आएगा। जिसमें कॉलर बताएगा कि आपने अवैध सामान, ड्रग्स, नकली पासपोर्ट या अन्य प्रतिबंधित पार्सल भेजा था या आपको यह मिला है यानी आपने इसे रिसीव किया है। कई बार आपको टारगेट करने के लिए यह फोन कॉल आपके रिश्तेदारों या दोस्तों को भी जा सकती है, जिन्हें बताया जाएगा कि आपके दोस्त या आपके रिश्तेदार ऐसे अपराध में शामिल हैं। आपको जैसे ही दोस्त या रिश्तेदार से यह सूचना मिलेगी, आप घबरा जायेंगे। एक बार टारगेट सेट करने के बाद अपराधी आपको स्काइप या किसी अन्य वीडियो कॉलिंग सिस्टम से आपसे संपर्क करेंगे। वो खुद को कानूनी अधिकारी, पुलिस या किसी जांच एजेंसी के अधिकारी के रूप में पेश करेंगे। सरकारी वर्दी में भी दिखेंगे। वीडियो कॉल में आप उन्हें किसी फर्जी पुलिस स्टेशन या सरकारी कार्यालय में बैठे दिखेंगे ताकि आपको विश्वास हो जाए। आपसे वो 'समझौता' करने या 'मामले को बंद करने' के लिए पैसे मांगेंगे, लेकिन पैसे तभी मांगे जाएंगे, जब आप मजबूर हो चुके होंगे।

I4C ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के डेटा और कुछ ओपन–सोर्स जानकारी का विश्लेषण करने के बाद पाया कि ज्यादातर फोन कॉल म्यांमार, लाओस और कंबोडिया से की जा रही हैं। या फिर वहां से वीपीएन के जरिए भारत में ही बैठकर इसे अंजाम दिया जा रहा है। इस धंधे में कई भारतीय भी लगे हैं, जिन्हें विदेशी कंपनियों में रोजगार के नाम पर साइबर गुलाम बना लिया जाता है। आज देश के 9 राज्यों के कई दर्जन गांव ऐसे हैं, जहां से खुले आम साइबर अपराधों को संचालित किया जा रहा है। अकेले झारखंड में 42 ऐसे गांव हैं, जहां साइबर ठगी लोगों की आय का मुख्य साधन बन चुका है। घर बैठे लूट की यह कमाई बेरोजगार युवाओं और गरीबों को इस कदर आकर्षित कर रही है कि वो दूसरे कामों में मेहनत करने की जगह एक लैपटॉप और फोन के जरिए लाखों की ठगी घर बैठे कर रहे हैं। सख्त कानूनों और राजनीतिक इच्छाशक्ति के अभाव में ये धंधा बेखौफ चल रहा है।

दरअसल भारत में साइबर अपराध को पकड़ने और ऐसे अपराधियों को सजा दिलवाने में भारतीय पुलिस और जांच एजेंसियां बहुत सक्षम नहीं हैं, क्योंकि बीते दो दशको में देश में डिजिटलीकरण तो बहुत तेजी से किया गया, लेकिन साइबर सुरक्षा को लेकर खास चिंता नहीं की गई। यानी इसके राजनीतिक, सामाजिक लाभों पर तो हमारी नजर थी, लेकिन सारी चीजें ऑनलाइन होने के बाद हमारी निजता की रक्षा के बारे में ज्यादा कुछ नहीं सोचा गया। इसी का नतीजा है कि आज हम डिजिटलीकरण के दुष्परिणामों को भी उसी शिद्दत से भोग रहे हैं। भारत के विपरीत जिन देशों में डिजिटलीकरण हुआ, वहां डाटा सुरक्षा और साइबर फ्रॉड रोकने के उपाय भी समांतर रूप से किए गए। हमारे यहां न तो इसके लिए पुलिस समुचित रूप से प्रशिक्षित है और न ही जांच एजेंसियां उतनी अपडेट हैं। आलम यह है कि साइबर अपराधी पुलिस और जांच एजेंसियों से दस गुना आगे हैं। आप कह सकते हैं कि इस देश में जब फर्जी पीएमओ अधिकारी, फर्जी बैंक ब्रांच और नकली अदालत धड़ल्ले से चल सकती हो तो डिजिटल अरेस्ट हमारी नियति ही है।

हालांकि देश में लगातार बढ़ते साइबर अपराधों के चलते कुछ साइबर अपराध थाने खोले गए हैं, जो नाकाफी हैं। इस बीच केन्द्र सरकार ने देश में 5 हजार साइबर कमांडो की भर्ती का ऐलान किया है,

जिनमें से 1 हजार की ट्रेनिंग शुरू भी हो चुकी है। लेकिन यह भी बढ़ते साइबर अपराधों के मुकाबले अपर्याप्त है। हैरानी की बात यह है कि लगातर बढ़ते साइबर अपराधों के साथ–साथ देश में साइबर अपराधों के अड्डे भी बढ़ते जा रहे हैं और सुरक्षा एजेंसियां उनके खिलाफ ठोस कार्रवाई नहीं कर पा रही हैं। यहां बुलडोजर से किसी आरोपी का घर ढहाया जा सकता है, लेकिन साइबर क्राइम लिप्त पूरे गांव पर कोई कार्रवाई नहीं होती। इसका कारण शायद यह है कि हत्या, सार्वजनिक लूट, बलात्कार या हिंसक अपराधों के कारण समाज में जो दहशत फैलती है, वह खामोश और व्यक्तिगत रूप से टारगेट कर किए जाने वाले साइबर अपराधों से नहीं फैलती। कई बार साइबर ठगी में अपनी जिंदगी भर की कमाई एक झटके में गंवा देने वाला व्यक्ति शर्म के कारण दूसरे से कुछ कह भी नहीं पाता। लेकिन पानी सर के ऊपर से गुजरने लगा है। ये नए किस्म का साइबर आतंकवाद है, जो हमारे जीवन का सुख छीनने में लगा है।

यह कहने में तो आसान है, लेकिन साइबर अपराधी जिस चालाकी से सामने वाले व्यक्ति को आतंकित कर देते हैं, उससे पीड़ित अपनी सामान्य विवेक बुद्धि भी खो बैठता है। उसका क्या? जरूरत इस बात की है कि ऐसे फर्जी कॉल्स पर नकेल कैसे लगे। अब तो साइबर अपराधियों ने फ्रॉड का एक और नया तरीका इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। वे इसके लिए सरकारी सेवा APPS का इस्तेमाल कर रहे हैं। यह एक ऐसी सेवा है, जिसके जरिए आप आधार कार्ड और बायोमैट्रिक के जरिए बैंक अकाउंट से पैसे निकाल सकते हैं। जिन यूजर्स का बैंक अकाउंट आधार कार्ड से लिंक होता है और APPS इनेबल रहता है, वो बिना किसी चेकबुक, एटीएम कार्ड आदि के भी अपने अकाउंट से पैसे निकाल सकते हैं। हालांकि, इसके लिए रिजर्व बैंक ने एक लिमिट सेट की है।

पिछले कई दिनों से आ रही डिजिटल अरेस्ट और साइबर फ्रॉड से जुड़ी घटनाओं को देखते हुए, सरकार ने इससे निपटने के लिए बड़ा कदम उठाया है। डिजिटल अरेस्ट और साइबर फ्रॉड से निपटने के लिए केंद्रीय गृह मंत्रालय ने हाई लेवल कमेटी गठित की है। MHA इंटरनल सिक्योरिटी के सेक्रेटरी इस कमेटी को मॉनीटर कर रहे हैं। इसके लिए स्पेशल कैंपेन चलाया जाएगा। MHA के I4C विंग ने सभी राज्यों की पुलिस से संपर्क किया है। सूत्रों के मुताबिक, डिजिटल अरेस्ट की घटनाओं पर तत्काल एक्शन के निर्देश दिए गये हैं।

इस साल केवल 10 महीनों में 2140 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी डिजिटल अरेस्ट के जरिए हुई है। यानी हर महीने औसतन 214 करोड़ रुपये का फ्रॉड। ये पैसा आम लोगों की जमा पूंजी का है। वो पैसा जो उन्होंने मेहनत से कमाकर इकट्ठा किया और बैंक में बचत के तौर पर रखा।रिपोर्ट के मुताबिक, इस बड़े स्कैम के तार विदेश से भी जुड़े हुए हैं। खबर है कि कंबोडिया, म्यामांर, वियतनाम, लाओस और थाईलैंड जैसे देशों से फ्रॉड हो रहा है। गृह मंत्रालय के साइबर विंग को इस साल अक्टूबर तक डिजिटल अरेस्ट के कुल 92,334 केस की जानकारी मिली है।

'डिजिटल अरेस्ट के फ्रॉड में फ़ोन करने वाले कभी पुलिस, कभी CBI, कभी नार्कोटिक्स, कभी RBI, ऐसे भांति–भांति के लेबल लगाकर बनावटी अधिकारी बनकर बड़े कॉन्फिडेंस के साथ बात करते हैं। इनका पहला दांव होता है आपकी व्यक्तिगत जानकारी, वो ये सब जुटा करके रखते हैं। वो आपके बारे में इतनी जानकारी जुटाकर रखते हैं कि आप दंग रह जाएंगे। दूसरा दांव होता है, भय का माहौल

पैदा करना। वर्दी, सरकारी दफ्तर का सेटअप, कानूनी धाराएं, वो आपको इतना डरा देंगे फोन पर बातों–बातों में कि आप सोच भी नहीं पाएंगे और फिर उनका तीसरा दांव शुरू होता है।तीसरा दांव है समय का दबाव। अभी फैसला करना होगा अन्यथा आपको गिरफ्तार करना पड़ेगा। ये लोग पीड़ित पर इतना मनोवैज्ञानिक दबाव बना देते हैं कि वो सहम जाता है।'

इस तरह से साइबर क्राइस से कैसे बचें?

किसी भी तरह के साइबर फ्रॉड से बचने के लिए आपको हमेशा सावधान और सतर्क रहना चाहिए। यहां हम आपके साथ कुछ ऐसे उपायों के बारे में जानकारी दे रहे हैं, जिनसे आप इस तरह के स्कैम से बच सकते हैं।

सतर्क और सावधानः कभी भी अगर आप इस तरह के कॉल रिसीव करते हैं तो सबसे पहले आपको सावधान रहने की जरूरत है। इसके साथ ही ऑनलाइन स्कैम और फ्रॉड के तरीकों की जानकारी रखें। आपको यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि सरकार, बैंक या फिर कोई भी जांच पहचान वेरिफाई जरूर करें। किसी को भी कॉल पर पर्सनल या फाइनेंशियल डिटेल जैसी जानकारी बिलकुल भी शेयर न करें। अगर इस तरह की जानकारी आपको भेजनी भी पड़ी तो पहले उस कॉलर की पहचान जरूरी तौर पर वेरिफाई कर लें। जैसा कि हम पहले भी आपको बता चुके हैं कि बैंक या कोई भी ऑफिशियल संस्था आपसे फोन पर पिन या आपसे जुड़ी निजी जानकारी नहीं पूछती है।

संदिग्ध गतिविधियां रिपोर्ट करें : अगर आपको किसी भी तरह से स्कैमर्स की कॉल या मैसेज आते हैं तो इन्हें रिपोर्ट करें। इसके साथ ही अगर आपके बैंक अकाउंट में कुछ भी संदिग्ध अगर आपको लगता हैं तो इसकी भी शिकायत करें। स्कैम कॉल या मैसेज को रिपोर्ट करने के लिए आप सरकारी पोर्टल चक्षु का इस्तेमाल कर सकते हैं।

अपने डिवाइस और अकाउंट को रखें सेफः ऑनलाइन स्कैम या डिजिटल धोखाधड़ी से बचने के लिए आपको अपने सभी अकाउंट (बैंक से लेकर सोशल मीडिया और ईमेल) को सेफ रखना आवश्यक है। अपने सभी पासवर्ड और पिन समय–समय पर अपडेट करते रहें और उन्हें मजूबत बनाने की कोशिश करें। इसके साथ अकाउंट की सेफ्टी के लिए 2–फैक्टर ऑथेन्टिकेशन जरूर इनेबल रखें। इसके साथ ही अपने सभी डिवाइस को लेटेस्ट सॉफ्टवेयर के साथ अपडेट रखें। स्कैम कॉल या मैसेज को रिपोर्ट करने के लिए आप सरकारी पोर्टल चक्षु का इस्तेमाल कर सकते हैं।

साहित्य में संस्कृति

– डॉ. जयनारायण त्रिपाठी
हिन्दी विभाग

'साहित्य' शब्द के मूल में 'सहित' होने का भाव निहित है।

'हितेन सह इति सहितम् तस्य भावः साहित्यम्'

वास्तव में साहित्य मानव समाज की सांस्कृतिक मानसिकता की सामूहिक अभिव्यक्ति है। रचनात्मकता में उत्साह और धर्म में आत्मरक्षा को समेट कर चलने वाला यह साहित्य मन का सृजन है और इसकी सर्जना का श्रेष्ठ मेरुदण्ड है। कहने का तात्पर्य यह है कि साहित्य और संस्कृति का सम्बन्ध आचरण और अभिव्यक्ति के स्तर पर अन्योन्याश्रित है। आचरण वही ग्राह्य होता है जो देश, काल, परिस्थिति, पात्र अर्थात् युग द्वारा ग्राह्य हो जिसे हम धारण कर सके। धारण करने वाली वस्तु को धर्म कहा गया है शायद धर्म के समान विकास की परम्परा में प्राचीन वैदिक, मंगोल, शक, हूण, पठान, युगल, यहूदी, ईसाई, मुसाई सभी यहाँ आए लेकिन कोई भी अलग नहीं रहा सब इस महासागर की संस्कृति में विलीन होकर एक हो गये। निश्चय ही भारत एक महासागर है और भारतीय संस्कृति भी महासागर है इसमें विश्व की तमाम संस्कृतियाँ आकर समाहित हो गई। आज जिसे लोग हिन्दू संस्कृति मानते हैं वह वस्तुतः भारतीय संस्कृति है यही भारतीय साहित्य का भी कथ्य है। मध्य युग से यह भारतीयता मोटे तौर पर दो भागों में बँट गयी। हिन्दू और मुसलमान यह भेद जीवन के प्रति दृष्टिकोण के कारण हुआ किन्तु भारतीय साहित्य में अभिव्यक्तियाँ इन्हीं सब श्रेष्ठ साधनाओं की होती रही। इसी प्रकार साहित्य और संस्कृति का सम्बन्ध शब्द व्यापार के बीच सनातन है। दरअसल किसी देश की सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में उस देश की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। वैदिक युग से लेकर मुगल एवं अंग्रेजी के आगमन तक भारत का इतिहास भव्य रहा है। इस महान देश की सभ्यता की तूती सारे विश्व में बोल रही थी। भारत सभी क्षेत्र में अग्रिम पंक्ति में था। रोम, ग्रीक आदि देशों के साथ भारत का व्यापार आदि वाणिज्य के क्षेत्रों में गहरा सम्पर्क था। बौद्ध एवं जैन युगों के समय में भारत की शिल्प, चित्रकला एवं काव्य कला चरम सीमा तक पहुँच चुकी थी। विदेशों से विद्यार्थी यहाँ के तक्षशिला, नालंदा तथा विक्रमशिला के विश्वविद्यालयों में शिक्षा पाने हेतु आया करते थे। यहाँ के दरबारों में विदेशी राजदूत होते थे। विदेशी यात्रियों ने हमारे देश का भ्रमण करके यात्रा वृतान्त लिखे हैं, उनसे हमारे देश के प्राचीन वैभव एवं संस्कृति का भली भाँति पता चलता है परन्तु यवनों के आक्रमण के पश्चात क्रमशः हमारे शास्त्र, वाङ्मय एवं कलाओं के विकास का मार्ग अवरुद्ध हुआ। अंग्रेजी के आगमन के साथ हम अपने धर्म को भी भूल बैठे और पाश्चात्य रंग में रंगने लगे और बौद्धिक गुलाम बने। यह तो ठीक है कि अंग्रेजों ने हमें गुलाम बनाया था लेकिन उस गुलामी के विरुद्ध विद्रोह करने की प्रेरणा भी अंग्रेजों ने दी। हिन्दी साहित्य में अंग्रेजी साम्राज्य के प्रति होने वाली देश की सुखद या दुःखद दोनों प्रतिक्रियायें खूब देखी सुनी जाती है।

आधुनिक के प्रवर्तक भारतेन्दु ने लिखा था–

**'' अंग्रेज राज सुख साज सजे अतिभारी
पय धन विदेश चलिजात यह अतिख्वारी।''**

कहने का तात्पर्य यह है कि संस्कृति के धरातल पर परिवर्तन होने या संस्कृति के क्षेत्र में उत्पन्न टकराव की क्रिया की प्रतिक्रिया का फोकस साहित्यकार की रचनाओं में तुरन्त दिखता है क्योंकि साहित्यकार की रचनाओं में तुरन्त दिखता है क्योंकि साहित्यकार संस्कृति का व्याख्याता और रक्षक दोनों ही है इसलिए संस्कृति साहित्य पर टिकी होती है और इसका सम्बन्ध अविभाज्य है।

निर्धनता उन्मूलन में मनरेगा की भूमिका पर एक लेख

– दीपक मणि तिवारी
शोधार्थी (समाजशास्त्र)

भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहाँ की 71.8 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। जनसंख्या के इतने बड़े भू–भाग की सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किये बिना कल्याणकारी लक्ष्यों को पूर्ण कर नहीं सकते, यही कारण है कि स्वतंत्रता के पश्चात भारत सरकार द्वारा विभिन्न वृहत् योजनाओं की आवश्यकता हेतु ग्रामीणों में निर्धनता, अशिक्षा, बेरोजगारी, कृषि में सुधार, अन्धविश्वास जैसी समस्याओं के समाधान हेतु कल्याणकारी योजनाओं की आवश्यकता पड़ी, वर्तमान में सबसे बड़ी आबादी गाँव में ही पाई जा रही है, जिसका प्रमाण कोरोना काल में प्रवासियों को अपने गाँव में जीवन जीने का उपयुक्त अवसर मिला। 2011 की जनगणना के अनुसार 71.8 जनसंख्या गाँव में तथा 28.2 प्रतिशत जनसंख्या शहरों में निवास करती है। ग्रामीण जनसंख्या कृषि संसाधनों के माध्यम से आजीविका प्राप्त करती है जबकि शहरी जनसंख्या श्रम उद्योग के माध्यम से जीवन यापन कर रहे हैं। भारत सरकार के द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का केन्द्र ग्रामीण अंचल रहा है जिसमें पंचायती राज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है जिससे सबसे बड़ा पिछड़ा, दलित, गरीब के सामाजिक आर्थिक विकास हेतु समय समय पर इन योजनाएँ का क्रियान्वयन होता रहा है। भारतीय संविधान के संशोधन 73वाँ, 74वाँ संशोधन में महिला उत्थान के लिए महत्वपूर्ण योजना रही है जिससे महिला शिक्षा राजनीति में प्रवेश करने का अधिकार मिला इससे स्पष्ट होता है कि भारत सरकार के द्वारा समय समय पर निर्धनता उन्मूलन हेतु विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही है जैसे सामुदायिक विकास कार्यक्रम, पंचायती राज, अन्त्योदय, कौशल, विकास, महात्मा गांधी रोजगार गारंटी कार्यक्रम, उज्जवला योजना, सुकन्या समृद्धि योजना आदि विभिन्न योजनाओं से गरीबों को लाभ हो रहा है जिससे गरीब मजदूर किसान इत्यादि को लाभ हो रहा है जो गरीबी उन्मूलन में महत्वपूर्ण रूप से कार्य कर रही है।

जय प्रकाश नारायण के अनुसार – ''आखिरी आदमी पहली नजर'' का कथन सार्थक हो रहा है।

मनरेगा – भारत सरकार की महत्वपूर्ण योजना है जिसकी शुरुआत ग्रामीणों को रोजगार हेतु संसद में 2005 में एक कानून पारित किया गया जिसे राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का नाम दिया गया। इसकी शुरुआत 2 फरवरी 2006 को आंध्र प्रदेश के एक गाँव अनंतपुर से की गई। प्रारम्भ में देश के 200 जिले में इसे लागू किया गया। 1 अप्रैल 2007 को 180 जिलों को और जोड़ दिया गया तथा 1 अप्रैल 2008 को इसे देश के सभी 640 जिलों में लागू कर दिया गया। 100 दिन की रोजगार की गारंटी दी गयी, एक जॉब कार्ड निर्गत किया गया जिसके आधार पर काम मांगने के 15 दिन के भीतर रोजगार उपलब्ध कराना होता है साथ ही कार्य दिवस को 100 दिन रखा गया जिसे जनजातीय क्षेत्रों में 150 दिन बढ़ाया जा सकता है। इसमें महिलाओं को 1/3 का आरक्षण भी दिया गया।

2 अक्टूबर 2008 को मनरेगा का नाम बदलकर महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना कर दिया गया। विश्व बैंक ने इसे विश्व का सबसे बड़ा कल्याणकारी कार्यक्रम बताया। मनरेगा के अंतर्गत मजदूरी को मजदूरी अधिनियम 1948 के तहत रखा गया जो आज 237 रुपये हो गयी है।

निर्धनता को दूर करने में मनरेगा कैसे सहायक हो रहा है यह एक विचारणीय प्रश्न है, वास्तव में भारत कृषि प्रधान देश है जिससे कृषि में ग्रामीण बेकारी पायी जाती है। मनरेगा के तहत 100 दिन का रोजगार प्रदान किया जा रहा है जो निर्धनता उन्मूलन में सहायक सिद्ध हो रही है।

EFFECT OF DETERGENT ON AQUATIC ANIMALS :

Shweta Upadhyay
Research Scholar (Zoology)

Animals which live in water are known as aquatic Animals. Most of them are not harmful for human beings but for most of them the most harmful and life threatening living creature is human who has lost his humanity in every aspect and has become the most selfish living creature on earth. Earth's water resources are limited, erratic supply and pollution further restricts the availability of water for diverse human use like drinking, cooking, cleaning, recreation, aquiculture and industries. One of the main sources of chemical pollutants is detergent which cause water pollution. Detergent is a type of cleaning agent which is soluble in water. Detergent contains high levels of phosphates. These phosphates enter freshwater sources such as lakes and streams and created a super rich nutrient concentration. The amount of phosphorus directly limits the amount of algae that can grow, so the more phosphorus a water body contain, the more algae it can support. Excessive algal growth causes reduction of light and oxygen which changes the water pH, making it more acidic, as a result aquatic plants begin to die. Aquatic animals loose a food source and they are killed by the lack of oxygen in water.All detergents destroy the external mucous layer that protect the fish from bacteria and parasites. Detergent causes poor bone development, mortality, several diseases, growth and breeding capacity is effected and destroy the spawning ground and other nourishing materials.

सपनों की रात

शिवांश तिवारी
कक्षा–बी.एड. प्रथम वर्ष

सपनों की एक रात हुई,
हमने देखा उस सपनों में ,
कुछ ऐसी हालात हुई।
हमने देखा इस धरती पर,
उथल–पुथल है मची हुई।
सब भाग रहे हैं इधर–उधर,
किसी का कोई पता नहीं।
हाहाकार अब मची हुई,
कहाँ कौन है पता नहीं।
आपस में सब उलझे–सुलझे,
अब क्या होगा पता नहीं।
हाँ हाँ मैंने यह सच देखा था,
झूठ सही का पता नहीं।
पृथ्वी पर भूकम्प आ गया,
जहाँ–तहाँ रह गये सभी।
अपने–अपने को सब खोजे,
पशु, पक्षी इंसान सभी।
कहाँ है मंजिल कहाँ दासता?
यह सब देख हैरान सभी
पृथ्वी अब हाँ बोल रही है,
अब भागो इंसान सभी।
पृथ्वी अब क्या करवट लेगी,
अब हमको यह पता नहीं।
हाँ हाँ मैंने यह सच देखा था,
झूठ सही का पता नही।
पृथ्वी टूट–टूट गिरने लगी,
बचे अकेले इंसान ही।
पृथ्वी हुई नष्ट–भ्रष्ट अब,
कहाँ हम जाए कहाँ नहीं।
पृथ्वी अब मेरे पास टूट गयी,
कहाँ गिरेंगे पता नहीं।
हम गिरे बिस्तर पर धड़ से,
अब हालत खराब हुई।
क्या कुछ हुआ पता नहीं
हाँ हाँ मैं यह सच देखा था,
झूठ सही का पता नहीं।

भगवद्गीता की वर्तमान जीवन में प्रासंगिकता

डा. तुषार रंजन
सहायक आचार्य
बी0एड0 विभाग

भगवत्गीता केवल एक पौराणिक ग्रंथ नहीं, बल्कि शाश्वत ज्ञान का अद्वितीय स्रोत है, जो प्रत्येक युग में मानव जीवन का पथ प्रदर्शन करता रहा है। यह ग्रंथ जीवन के गूढ़तम प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करता है और कर्म, ज्ञान, योग तथा भक्ति के माध्यम से संतुलित एवं सार्थक जीवन जीने की प्रेरणा देता है। वर्तमान युग में जब मानवता नैतिक द्वन्द्व, मानसिक अशांति और भौतिक सुखों की अंधी दौड़ में उलझी हुई है, तब गीता के उपदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

गीता का कर्मयोग सिद्धान्त हमें यह सिखाता है कि हम बिना किसी फल की चिंता किए अपने कर्तव्य का पालन करें, जिससे कार्य में कुशलता और आत्मसंतोष प्राप्त हो। स्थितप्रज्ञता की अवधारणा हमें जीवन के उतार–चढ़ाव में धैर्य एवं संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा देती है, जो आधुनिक समय के मानसिक तनाव और चिंता को दूर करने में सहायक हो सकती है। भक्ति मार्ग हमें अहंकार से मुक्त होकर आत्मसमर्पण की भावना को अपनाने की शिक्षा देता है, प्रेम, करुणा और परोपकार की भावना विकसित होती है।

आज के प्रतिस्पर्धी और तनावपूर्ण वातावरण में, जहाँ व्यक्ति आत्मसंयम, अवसाद ओर अनिश्चितता से ग्रस्त है, गीता का ज्ञान मन की शांति और आत्मबोध प्राप्त करना अमृत के समान है। यह हमें सिखाती है कि वास्तविक सफलता बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन और आत्मज्ञान में निहित है। चाहे वह व्यक्तिगत विकास हो, कार्य स्थल की चुनौतियाँ हों, पारिवारिक समरसता हो या समाज में नैतिक मूल्यों का उत्थान–गीता की दार्शनिक प्रत्येक क्षेत्र में एक अमूल्य प्रकाशस्तम्भ के रूप में कार्य करता है।

इस प्रकार, भगवद्गीता न केवल आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग दिखाती है, बल्कि वर्तमान जीवन के हर पहलू में एक यथार्थवादी एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रदान कर, इसे और अधिक सार्थक एवं संतुलित बनाने में सहायक सिद्ध होती है।

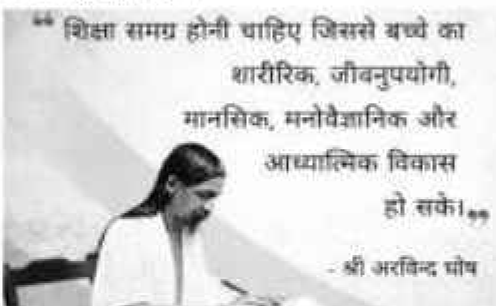

जन्मदिवस

शिवशंकर गुप्त
बी.एड. द्वितीय वर्ष

क्यों काटा जाए केक,
क्यों मोमबत्तियाँ बुझायी जाए,
एक वर्ष और कम हो गया जिन्दगी के,
मनाकर खुशियाँ क्यों धज्जियाँ उड़ायी जाए,
हमें तो ये दिन शोक में गुजार देना चाहिए,
हमें तो ये दिन शोक में गुजार देना चाहिए,
ये केक कैंडल्स सब इस देश से फेंक देना चाहिए।। 1।।

तुमने कभी सोचा है,
लोग जन्मदिन क्यों मनाते हैं,
जलाकर मोमबत्तियाँ ढेर सारी,
एक पल में क्यों बुझाते हैं,
ये दिन मानव जाति की भलाई में छोड़ देना चाहिए,
ये केक कैंडल्स सब इस देश से फेंक देना चाहिए।। 2।।

ये दिन खुशियाँ मनाने का नहीं सोचने का है,
खुद से दूर हुए व्यक्तियों को खोजने का है,
चाहे तुम कई वर्षों तक कमियों को संवार सको,
शायद अब तुम्हें स्वयं से कुछ सूझ लेना चाहिए,
ये केक कैंडल्स सब इस देश से फेंक देना चाहिए।।3।।

तुम मानव हो प्रबल ज्ञानी,
तुम ठान लो तो सबसे बड़े स्वाभिमानी,
तुम बचा सकते हो आने वाली पीढ़ी को,
तुम सोच सकते हो आने वाले भविष्य को,
जहाँ तक हो मानव को मानवता का प्रमाण देना चाहिए,
ये केक, कैंडल्स सब इस देश से फेंक देना चाहिए।।4।।

'Father'

शायरीन खातून
बी.ए.तृतीय समेस्टर

पिता एक उम्मीद एक आस है,
परिवार की हिम्मत और विश्वास है,
बाहर से सख्त अन्दर वे नर्म हैं,
उसके दिल में छिपे गई गम हैं,
पिता संघर्ष की आँधियों में हौसले की दीवार हैं,
परेशानियों से लड़ने की दो धारी तलवार हैं,
बचपन में खुश करने वाला खिलौना हैं,
नींद में गोद में सुलाने वाला बिछौना हैं,
पिता जिम्मेदारियों से लदा एक सारथी है।
सबको बराबर का हक दिलाता ये वो महारथी है,
सपनों को पूरा करने में लगने वाली जान है।
इसी से माँ और बच्चे की पहचान है,
पिता जमीर है, पिता जागीर है,
यह जिसके पास है वह दुनिया में सबसे अमीर है,
कहने को तो ये ऊपर वाला देता है,
पर पिता ईश्वर का एक रूप है।

Mother

घुटने से रेंगते–रेंगते, कब पैरों पर खड़ा हुआ,
तेरी ममता के छाव में, जाने कब बड़ा हुआ,
काला टीका दूध मलाई, आज भी सब वैसा है,
मैं ही मैं हूँ हर जगह, माँ प्यार ये तेरा कैसा है,
सीधा साधा भोला–भाला, मै ही सबसे अच्छा हूँ,
कितना भी हो जाऊँ बड़ा, माँ मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

चार कदम दूर रहो

लड़के नालायक से,
गुण्डे विधायक से,
बेईमान सहायक से,
बेसुरे गायक से,
चार कदम दूर रहो

साँड़ की अगाड़ी से
घोड़े की पिछाड़ी से
चलती रेल गाड़ी से
दोस्ती अनाड़ी से,
चार कदम दूर रहो

कपटी की यारी से,
तेज कटारी से,
मुहजोर नारी से,
आग की चिंगारी से,
चार कदम दूर रहो

पुलिस के डण्डों से,
कानून के हथकण्डों से,
लोफर और गुण्डों से,
चार कदम दूर रहो

बेटी बचाओ बेटी बचाओ

नगीता
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

सदियों से चुप बैठी आज मुहँ खोलूंगी,
तोड़ के दरवाजे सारे आज सच बोलूंगी।
सहनशीलता को मेरी कमजोरी न समझो तुम,
पीड़ा हो गयी पर्वत सी मैं कब तक झेलूंगी।
आज मागूँगी जबाब अपने सारे सवालों के,
दर्द दिखाऊँगी सारे बीते लाखों सवालों के।
पैदा होते ही क्यूँ मेरे घर मातम छाया था,
जन्म लिया बेटी ने चेहरा सबका मुरझाया था।
मार–मार के ताने सबने मम्मी को रूलाया था,
कुल को चलाने वाला बेटा नहीं आया था।
डस्टबिन में फेंक के शर्म नहीं आयी थी,
कुत्तों ने जब नोचा मुझको कितना मैं चिलायी थी।
कभी झाड़ियों में फेंका कभी गन्दीं नालियों में,
ऐसा स्वागत होगा अपना ख्यालों में।
डॉक्टर की छूरी–काँटो से जो हम बच पाये है,
अब रोज नहीं मौत मरने इस दुनिया में आये है।
दर्द सहना तो हमने गर्भ से ही सीखा है,
सलूक तो हमारे साथ जानवर सरीका है।
बन्दिसे तो हमारे ऊपर बचपन से ही जारी हैं,
घर के अन्दर–बाहर हर आँख शिकारी है।
बेटी यहाँ जाना नहीं, बेटी ये सब खाना नहीं,
ऐसे नहीं चलना है, ऐसे नहीं पहनना है।
हँसना नहीं जोर से बात सुनो गौर से,
तू पराया धन है और हमारे सिर का बोझ हैं।
जहर में डूबे ये ताने मिलते हमको रोज है,
जंग हमारी होगी जब तक बेटी सुरक्षित जब तक।
जब बेटी के आने पर ढोल बजाये जाएँगे,
देने का आशीष मंगल चार गाए जाएँगे।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ नारा जब हकीकत होगा,
उसी रोज हमारा ये महा यज्ञ पूरा होगा।
जिम्मेदारियों का बोझ परिवार पे पड़ा तो,
ऑटो रिक्सा, ट्रेन को चलाने लगी बेटियाँ।
साहस के साथ अंतरिक्ष को भेद डाला, यूँ युद्धक विमान चलाने लगी बेटियाँ,
और कितने उदाहरण ढूँढ के लाऊँ, हर क्षेत्र में शक्ति आजमाने लगी बेटियाँ।
वीरों की शहादत में अब शमशान तक जाने लगीं,
बेटियाँ घर में बटाती हाथ रहती हैं माँ के साथ।
पिता के समस्त बाधा को हरती है,
बेटियाँ दो लफ्ज बोलने से पूर्व सोचती है।
खूब मन में सहमती डरती हैं बेटियाँ।
बेटे हों उदण्ड भले–2 आप को दुखी देख दिल
कष्ट सहके भी धैर्य धरती हैं। बेटियाँ।
प्रश्न ये ज्वलनशील सबके लिए हे आज नित्य
प्रति खोज में क्यूँ मरती है बेटियाँ नित्य–2
हाँ मैं भी बेटी हूँ।
मत मारो मुझे कोख में लोगो मत मारो–2
इस धरती पर आने दो,
मुझसे मेरा अब ने छीनों कुछ करके दिखलाने दो।
पढ़ लिखकर परिवार का मैं भी यूँ सम्मान बढ़ाऊँगी,
बेटी हूँ तो क्या बेटो से ज्यादा फर्ज निभाऊँगी।
माना कठिन डगर है मेरी माना कठिन डगर है मेरी
पर मंजिल पा जाऊँगी मुझसे मेरा हक ने छीनो
भद्राकाली बन जाऊँगी।
मुझे बनाया परमेश्वर ने–2 मैं भी राज दुलारी हूँ,
सुनो जरा कमजोर नहीं हूँ।
धधकती हुई चिनगारी छेड़ो मत मुझे जल
जल जाओगे, मैं दुर्गा, मैं काली हूँ।

भोज्य पदार्थों में मिलावट
FOOD ADULTERATION

SOMNATH
B.Sc (Bio) I[st] Semester

भोजन की पौष्टिकता तथा गुणवत्ता में कमी के कई कारण होते है जिसमें से एक कारण है भोजन में मिलावट– भोजन न खाने योग्य अशुद्ध चीजों को भोज्य पदार्थों में मिलाना जिससे विक्रेता को लाभ और उपभोक्ता को हानि हो भोजन में मिलावट कहलाता है जैसे– अनाज में कंकड़, बालू, रेत आदि।

भोज्य पदार्थों में मिलावट के कारण–

मिलावट दो प्रकार से हो सकती है–

(i) जानबूझकर की गई मिलावट, (ii) अनायास हो गई मिलावट (लापरवाही)

जान बूझकर की गई मिलावट –

इस प्रकार की मिलावट अनायास या लापरवाही से नहीं होता है। विक्रेता अधिक लाभ पाने के लिए जानबूझकर भोज्य पदार्थों में मिलावट करते हैं। वे बहुत ही सावधानीपूर्वक भोज्य पदार्थों में मिलावट करते हैं, जिससे क्रेता को एक बार देखकर पता न चले की भोज्य पदार्थों में मिलावट है। इस प्रकार की मिलावट में भोज्य पदार्थों में से कुछ पदार्थों को मिलाना, बदलना जैसेः– अनाज, दाल, सूखे मेवे, मसाले आदि में कंकड़, बालू, मिट्टी आदि मिलाना। दूध में पानी मिलाना, खोया में मैदा या चावल के आटे को मिलाना। रंगीन मिठाईयों में न खाने योग्य रंगों का प्रयोग करना, घी में डालडा या तेल मिलाना आदि।

अनायास हो गई मिलावट (लापरवाही)–

इस प्रकार की मिलावट जानबूझकर नहीं की जाती है, बल्कि अनायास या लापरवाही से हो जाती है जैसे– भोज्य पदार्थों में सूक्ष्मजीव, बैक्टीरिया, फंगस आदि जीव उत्पन्न हो जाते है।

मिलावट से होने वाली स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ –

मिलावट युक्त खाद्य पदार्थों से हमारे स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है।

अनाज– चावल, जौ, मक्का, गेहूँ आदि में कंकड़ पत्थर, बालू, चॉक पाउडर, भूसी, मिट्टी आदि पदार्थ मिला दिये जाते हैं, व्यक्ति कंकड़ पत्थर, बालू चॉक, पाउडर आदि पदार्थों को नहीं पचा सकते, इस प्रकार पाचन प्रणाली कमजोर हो जाती है। जिससे, कब्ज, अतिसार, अपच, आदि रोग हो जाते हैं। इससे अमाशय कैंसर भी हो सकता है।

दाल– दालों के वजन में वृद्धि हेतु कंकड़ मिट्टी, केसारी दाल मिला दिये जाते है। केसारी दाल स्वास्थ्य के लिए घातक होता है। यदि इसका उपयोग प्रतिदिन 40–45 किया जाये तो 2–4 माह में ही लेथाइरिज रोग हो जाता है। इस रोग के कारण पैरो की घुटनों में तीव्र दर्द होने लगता है। बाद में लकवा भी हो सकता है।

मसाला– इसमें कई वस्तु मिली होती है जो अधिक महँगी होती हैं। इसमें ज्यादा मिलावट देखने को मिलती है। पिसी हल्दी में मैदा, पीली मिट्टी, पिसी लाल मिर्च में ईंट का पाउडर, काली मिर्च में

सूखे पपीते का बीज मिलाया जाता है, जो हमारे स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव डालता है।

भोज्य पादार्थों में मिलावट की पहचान करना – भोज्य पदार्थों में मिलावट को दो तरीके से पहचान सकते है।

(i) भौतिक परीक्षण (ii) रासानिक परीक्षण

(i) भौतिक परिक्षण – भौतिक परीक्षण में चावल, गेंहूँ, दाल, मसाले में आँखों से, सूक्ष्मदर्शी से स्वाद द्वारा स्पर्श द्वारा भोज्य पदार्थों में मिलावट को पहचान सकते है।

(ii) रसायनिक परीक्षण– रासानिक परीक्षण में भोज्य रसायनिक प्रयोगशाला में केमिकल से करते है। जैसे– दाल में पीले रंग की जाँच करने के लिए एक बर्तन में पानी में 5 ग्राम दाल को मिक्स करके उसमें हाइड्रोक्टोरिक अम्ल की कुछ बूँद को डाले यदि इसका रंग गुलाबी हो जाता है तो सतझ जाना कि दाल में पीले रंग का मिलावट है।

मिलावट से बचने के उपाय–

1. परिचित दुकानों या सहकारी स्टोर से वस्तुओं को खरीदना।
2. वस्तुओं को खरीदने से पहले उनके बनने की तिथि और समाप्त होने की तिथि को देखकर खरीदें।
3. झूठे विज्ञापनों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।
4. आई.एस.ओ. एगमार्क ए.फ.ओ जैसे– चिन्हों को देखकर वस्तुऐं खरीदे।
5. क्रेता को सभी बाजारों में प्रचलित दरो की जानकारी होनी चाहिए।
6. अधिकतर पैकेट बन्द खाद्य पदार्थ खरीदना चाहिए।
7. वस्तु को खरीदते समय तौल पर ध्यान देना चाहिए।
8. मिलावट करने वाले व्यक्ति की जानकारी फूड इंस्पेक्टर को देनी चाहिए।

"Teacher"

Anmol Rauniyar
B.A 'V' semester

Who could be as good as a teacher ?
After all, none is greater than teacher
He encompasses the word 'Teacher'
and makes you fly without a wing.
He introduces you to the world.
by explaining everything word to word.
His through are always loving.
with the deeds of caring and sharing

He makes you belive in yourself
by sacrificing dreams of himself.
He always gives you the best
and his words never go waste.
When you reach the perfection
he gets best satisfaction.
He feces everything odd,
So, he is greater than God.

नारी शक्ति

अनुष्का गोस्वामी
बी.ए.सी. प्रथम वर्ष (जीव)

प्राचीन संस्कृत साहित्य में नारी को प्रकृति की अनुपम कृति, संगीत व विभिन्न कलाओं में दक्ष नैसर्गिक सुखों की खान माना गया है। नारी की महत्ता का वर्णन करते हुए–

यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते।
रमन्ते तत्र देवता।।

कहा गया है, जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं, अर्थात वहाँ सुख–शान्ति और समृद्धि स्वतः आ जाती हैं। लंका विजय के पश्चात् श्री राम ने कहा– हे लक्ष्मण! यद्यपि यह लंका सोने की है, फिर भी हमें अच्छी नहीं लगती क्योंकि ''माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं।''

वेद व्यास रचित अठारह पुराणों के आख्यानों में महिषासुर, रक्तबीज, शुम्भ, निशुम्भ, चंड, मुंड का संहार करने वाली आदि शक्ति जगदम्बा से भला कौन–सा भारतीय मानस अनभिज्ञ है।

नारी शक्ति के वशीभूत हो भगवान शिव अर्द्धनारीश्वर कहलाये।

अरून्धया अनुसून्या च सावित्री जानकी सती।
द्रौपदी, कर्ण्णगी गार्मी मीरा दुर्गावती तथां।।
लक्ष्मी अहिल्या होलकर च विक्रया।
निवेदता शारदा च प्रणम्या मातृ देवता।।

प्राचीन भारत की सुख–शान्ति व समृद्धि का आधार स्तम्भ अरूधारी अनुसूया, विश्वधरा, घोषा, गार्गी आदि। यमराज से अपने पति सत्यवान के प्राणों को वापस लाने में सावित्री की बुद्धि कौशल का ही चमत्कार कहा जायेगा। ''नारी को किसी भी राष्ट्र की आँख कहा गया है।'' देश की आज़ादी में रानी लक्ष्मी बाई, रानी दुर्गावती, चाँदबीबी, मैडम काया, दुर्गाभाभी, सुनीता चौधरी, वीरांगनाओं व मातृ शक्ति के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। वर्तमान समय में देखें तो जिन्होंने एवरेस्ट पर विजय पताका फहराई, अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्रों में 'कल्पना चावला', 'सुनीता विलियम्स' के दृढ़ संकल्प व साहस को नकारा नहीं जा सकता। खेल जगत पर दृष्टि यात्रा करें तो उड़नपरी धाविका 'पी.टी. ऊषा', टेनिस, में सानिया मिर्जा, बैडमिंटन में साइना नेहवाल', बाक्सिंग में, 'मेरी कॉम', क्रिकेट में हरमन प्रीत, हॉकी में 'सविता पूनिया', सलीमा टेटे तथा प्रशासनिक क्षेत्र में 'किरण बेदी' की प्रतिभा ''हिन्दू पद पादशाही'' की स्थापना करने वाली छत्रपति शिवाजी की प्रेरणा स्रोत माँ जीजाबाई, अदूत बालिकाओं की शिक्षा व आत्मनिर्भरता में अविस्मरणीय योगदान के लिए ज्योतिबा फुले, आदर्श राजमाता के रूप में अहिल्या बाई जिन्होंने अनेक मंदिरों व घाटों का निर्माण कराया, भुलाया नहीं जा सकता।

भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री 'श्रीमती इंदिरा गांधी', पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, वर्तमान 'राष्ट्रपति' 'श्रीमती द्रोपदी मुर्मू' ने भारतीय इतिहास को एक नई दिशा प्रदान कर रही हैं। शिक्षा जगत में श्री कृष्ण भक्ति के माध्यम से सामाजिक चेतना को जगाने में मीराबाई के पदों का अभूतपूर्व योगदान रहा है। विरह–वेदना की अमर गायिका आधुनिक युग की मीरा, महादेवी वर्मा तथा झाँसी की

रानी की समाधि पर, वीरों का कैसा हो बसन्त । काव्य की पंक्तियों से भारतीय जन मानस में देश प्रेम की भावना को जाग्रत करने वाली कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम हिन्दी प्रेमी जन मानस पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। सिनेमा जगत में भारत की स्वर कोकिला लता मंगेशकर, आशा भोंसले, आशा पारिख, वाहीदा रहमान, हेमामालिनी, जयाप्रदा, रेखा आदि ने अपने अभिनय व गायन से लोगों को मंत्र मुग्ध कर दिया। प्रथम भारतीय महिला पायलट गुंजन सक्सेना, चिकित्सक डा. आनन्दी गोपाल जोशी, जैसी प्रतिभा सम्पन्न महिलाएँ न्याय, कृषि, इंजीनियरिंग आदि अनेकानेक संस्थानों में नारीशक्ति का परचम लहरा रही हैं।

'गृहणी गृहं उच्यते'

एक आदर्श गृहिणी घर की शोभा होती है। वह पिता व पति के कुलों के मान सम्मान में अपना सर्वस्व समर्पण कर देवीतुल्य पूज्यनीय व सम्मान का पात्र बन जाती हैं। वर्तमान समय में सर्वत्र हो रहे पारिवारिक हिंसा व सामाजिक उत्पीड़न का शिकार होने से बचाना एक सभ्य व संस्कृत राष्ट्र की पहचान होगी। वर्तमान समय में सरकार द्वारा इनके उत्थान, आत्मनिर्भरता व सम्मान के लिए–चन्द्रयान के पहुँचाने के बिन्दु का नाम शिवशक्ति, बेटी पढ़ाओं– बेटी बचाओं, प्रधानमंत्री उज्जवला योजना, आवास शुद्ध पेय जल, मुख्यमंत्री महिला सशक्तीकरण, कन्या सुमंगला योजना, राजनीति में आरक्षण जैसे कदम उठाये जा रहे हैं जो सराहनीय हैं।

'सर्वे भवन्तुः सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः'

INDIAN EDUCATION SYSTEM

Abu Shaud Arman
B.Sc I st Sem

What is real education ?

Education is not amount of information that is put in the human brain. It must have man making, character making and life making. Stimulated ideas that can not by mean of that education world.

The Indian Education System is quite an old education system that still exists. It has produced so many genius mind that are making India proved to all over the is one of the oldest system, it is still not that developed when compared to others, which are in fact never. This is as through the growth and advancement but the Indian Education System is still stuck in old age. It faces a lot of problems that need to be sorted to let it reach its full potential.

Women Empowerment

Priyanka Yadav
(NET Home Science BEd. 1st year)

She stands unbroken, fierce and free,
A force of strength, as vast as sea.
Through storms and shadow, doubt and fear,
Her voice grows strong, her path made clear.
Once bound by chains, unseen, unheard,
She now speaks loud with every world.
Her spirit blazes, lights the skies,
In every fall, she learns to rise.
With dreams unshackled, vision wide,
She holds her truth, with steady pride.
For every sister, mother, friend,
her Courage sparks and will defend.
The world may doubt and try to bind,
But power flows from heart and mind.
A thousand battles she has braved,
in lighting others, she is saved.
So rise, bold women, claim your space,
With fire and grace in every place.
Empowered, fierce, you will lead the way,
And point the down of a brighter day.

दोस्ती पर कविता

पूर्णिमा पाण्डेय
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

दोस्ती का रिश्ता बड़ा, प्यारा
जैसे चाँदनी की रौशनी में सारा।
पूर्णिमा की चाँदनी और अर्चिता की हँसी,
इनमें ही तो सजी है हमारी खुशी।

खट्टे–मीठे लम्हें बाँटते चले
हर मुश्किल में साथ देते चले।
पूर्णिमा की बातों में अपनापन,
अर्चिता की हँसी में जैसे सावन।

कभी रूठना, कभी मनाना,
फिर भी इस रिस्ते में है मुस्कान।
हर मुश्किल में साथ है यही,
दोस्ती का रिश्ता कभी ना हो कमजोर कहीं।

तू है मेरी दोस्ती की पहचान,
हमेशा रहेगा ये प्यारा एहसास।
पूर्णिमा और अर्चिता का साथ,
हमेशा रखेगा ये रिश्ता खास।

दोस्ती का ये प्यारा सफर,
जिंदगी भर रहेगा अमर।
पूर्णिमा की चाँदनी, अर्चिता का प्यार,
हमारी दोस्ती का ये अनमोल उपहार।

प्लाज्मा (पदार्थ की चौथी अवस्था)

विवेक कुमार शुक्ल
पी.एच.डी., शोधार्थी, भौतिक विज्ञान

किसी गैस को जब गर्म करते हैं तो उसके परमाणु या अणु में से कुछ इलेक्ट्रॉन निकल जाते हैं और शेष धन आयन बच जाता है। इस प्रकार प्लाज्मा पदार्थ की वह अवस्था है, जिसमें कुछ इलेक्ट्रॉन, कुछ धन आयन और कुछ उदासीन कण होते हैं, इसे पदार्थ की चौथी अवस्था भी कहते हैं, उदाहरण– बिजली की चमक, शहर की सड़कों पर लगे नियॉन संकेत, सूर्य का केन्द्र, तारा आदि। 'प्लाज्मा का तापमान बहुत अधिक होता है, ऐसा माना जाता है कि इस ब्रह्मांड में अधिकांश पदार्थ प्लाज्मा अवस्था में ही हैं।

प्लाज्मा का तापमान बहुत अधिक होने के कारण परिबद्ध करना बहुत कठिन है क्योंकि इसे किसी बर्तन में रखने पर वह बर्तन ही गल जाएगा, वैज्ञानिक इसे दो प्रबल चुम्बकीय क्षेत्र के बीच स्थित दुर्बल चुम्बकीय क्षेत्र में रखने का प्रयास कर रहे है, इस प्रकार के डिवाइस को मैग्नेटिक मिरर डिवाइस कहते है। व्यवहार में इस प्रकार के डिवाइस से अधिक प्लाज्मा को परिबद्धकर पाना मुश्किल है। दूसरा, इस प्रक्रिया से नाभिकीय संलयन अभिक्रिया नहीं होगी, क्योंकि नाभिकीय संलयन के लिए उच्च दाब की आवश्यकता होती है, और उच्च दाब लगाने पर प्लाज्मा डिवाइस से बाहर आ जाएगा और परिबद्ध नहीं होगा। प्लाज्मा को परिबद्ध करने के लिए दो डिवाइस टोकामेक और स्टेला रेटर पर शोध चल रहा है जिससे प्लाज्मा को परिबद्ध किया जा सके और नाभिकीय संलयन कराया जा सके। प्लाज़्मा हो जाने के बाद हम दो हल्के नाभिक का संलयन कराके भारी मात्रा में ऊर्जा को उत्पन्न कर सकते हैं। इस प्रकार की ऊर्जा पर्यावरण में ही है, इसलिए यदि प्लाज्मा को परिबद्ध करना सम्भव हो गया तो इस विशाल ऊर्जा का प्रयोग करके हम बिजली निर्माण, टेराहर्ट्ज़ तरंग विकिरण निर्माण आदि कर सकते हैं।

प्रकाश व्यवस्था सतह सफाई, नक्काशी फिल्म जमाव आदि में गैर संतुलन प्लाज्मा का उपयोग अच्छी तरह से हो रहा है। अर्धचालक निर्माण, अंतरिक्ष एयरक्राफ्ट, प्लाज्मा टी.वी. आदि में प्लाज्मा का उपयोग हो रहा है।

प्लाज्मा कोटिंग और नक्काशी का उपयोग अर्धचालक इलेक्ट्रॉनिक उद्योग में किया जा सकता है, जैसे– कम्प्यूटर चिप का निर्माण, विभिन्न गुणों वाले विभिन्न अर्धचालकों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न जमाव और सतह संशोधन प्रक्रियाओं को पियोजित करना, जैसे–प्लाज्मा–वर्धित रासानिक वाष्प जमाव। कितनी भी उच्च ऊर्जा की लेजर लाइट करने पर प्लज्मा के न टूटने का गुण की इसे अन्य पदार्थों से अलग बनाता है।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो

सोनाक्षी चौधरी
बी.ए.प्रथम (सेमेस्टर)

क्या कहती हो ठहरो नारी
संकल्प अश्रु–जल से अपने।
तू दान कर चुकी पहले ही
जीवन के सोने से सपने।।

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पगतल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल में।।

देवों की विजय, दानवों की
हारों। का होता युद्ध रहा।
संघर्ष सदा उर–अंतर में जीवित
रह नित्य–विरूद्ध रहा।।

आँसू से भीगे अंचल पर
मन का सब कुछ रखना होगा
तुमको अपनी स्मित रेखा से
यह संधिपत्र लिखना होगा।।
(रामधारी सिंह दिनकर)

रह जाता कोई अर्थ नहीं

दिपा चौरसिया
(बी.ए.प्रथम सेमेस्टर)

नित जीवन के संघर्षों से
जब टूट चुका हो अन्तर्मन,
तब सुख के मिले समन्दर का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

जब फसल सूख कर जल के बिन
तिनका–तिनका बन गिर जाये,
फिर होने वाली वर्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

सम्बन्ध कोई भी हो लेकिन
यदि दुःख में साथ न दे अपना,
फिर सुख में उन सम्बन्धों का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।।

छोटी–छोटी खुशियों के क्षण
निकल जाते हैं रोज यहाँ,
फिर सुख की नित्य प्रतीक्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।।
(रामधारी सिंह दिनकर)

शिक्षक पर कविता

बबिता चौधरी
एम.ए.प्रथम सेमेस्टर

रोज सुबह मिलते हैं इनसे,
क्या हमको करना है ये बतलाते हैं।
ले के तस्वीर इन्सानों की,
सही गलत का भेद हमें ये बतलाते हैं।।
कभी डांट तो कभी प्यार से,
कितना कुछ हमको ये समझाते हैं।
है भविष्य देश का जिन में,
उनका सबका भविष्य ये बनाते हैं।
है रंग कई इस जीवन में,
रंगो की दुनिया से पहचान, ये करवाते हैं।
खो ना जाये भीड़ में कही हम,
हम को हम से ही ये मिलवाते हैं।
हार–हार के फिर लड़ना ही जीत है सच्ची,
ऐसा एहसास ये हमको करवाते हैं।
कोशिश करते रहना हर पल,
जीवन का अर्थ हमें ये बतलाते हैं।
देते हैं अच्छा मंजिल भी हमें,
राह भी बेहतर हमें ये दिखलाते है।
देते है ज्ञान जीवन का,
काम यहीं सब है इनका,
ये शिक्षक कहलाते हैं,
ये शिक्षक कहलाते हैं।।

हमारे जीवन में ओजोन परत के लाभ

बबिता चौधरी
एम.ए.प्रथम सेमेस्टर

हमारे वायुमण्डल के ऊपरी भाग में जो ऑक्सीजन के तीन परमाणु वाले अणु पाए जाते हैं, उन्हें ओजोन परत कहते हैं। इसका रासायनिक सूत्र O_3 होता है। यह सूर्य से आने वाली हानिकारक विकिरणों (पैराबैगनी किरणे) को अवशोषित करती है। इस प्रकार यह उन हानिकारक विकिरणों को पृथ्वी के सतह तक पहुँचने से रोकती है, क्योंकि ये विकिरण (पैराबैंगनी किरण) हमारे स्वास्थ को हानि पहुँचाते हैं जैसे–त्वचा कैंसर, मोतियाबिन्द आदि रोग हो जाते है। हाल ही में पता चला है, कि ओजोन परत का अपक्षय हो रहा है। मनुष्य के द्वारा बनाये हुए यौगिक जैसे–क्लोरो–प्लोरो कार्बन (CFC) ये यौगिक बहुत स्थायी होते है। जब ये एक बार ओजोन परत के समीप पहुँचते है तो वे ओजोन परत के अणुओं से अभिक्रिया के फलस्वरूप उसमें छिद्र कर देते हैं, जिससे सूर्य से निकलने वाली हानिकारक विकिरण (पैराबैंगनी किरणों) पृथ्वी के सतह तक पहुँच जाती है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर ने ओजोन परत को बचाने के लिए कई प्रयास किये। जैसे–

1. CFC_5 के उत्पादन में कमी
2. HCFC के उपयोग में कमी
3. HFC_5 को कम करना।

मेरा प्यारा बस्ता

अनुष्का दीक्षित
एम.ए. प्रथम सेमेस्टर (हिन्दी)

पुस्तकों का घर हूँ दूसरा,
सब कुछ सुरक्षित रखता हूँ।
बच्चों के कंधे का साथी,
मैं सबका प्यारा बस्ता हूँ।।

कई तरह की वस्तुएँ मुझमें,
बिल्कुल आराम से रहती है।
पुस्तक हो या रबड़ पेंसिल,
खूब मजे वे करती है।।

सोचो यदि मैं न रहूं तो,
कैसे विद्यालय जाओगे।
अपने इन नन्हें हाथों से,
कितनी किताबें उठाओगे।।

मेरी कीमत पहचानो तुम,
कभी नहीं मै थकता हूँ।
बच्चों के कंधे का साथी,
मैं सबका प्यारा बस्ता हूँ।।

नारी शक्ति को समर्पित कविता

अंजली चौधरी
एम.ए. प्रथम वर्ष

छू ले हर ऊँचाई तू,
किसने तुझको रोका है,
बात कल कुछ और थी,
फिर से आज मौका है।

पर खोल कर हो आजाद,
डरना आसमान से,
कमर कस लें आज ही,
लड़ना है अभी जहान से।

यह बंदिशे यह बेड़ियाँ
तुझे ना रोक पाएँगी,
इरादो को शमशीर कर
यह खुद ही टूट जाएँगी।

सर झुके थे सर झुकेगें,
फिर से तेरे सामने,
मजाल कब किसी की,
तुझे झुका दे अपनी शान में।

तूने तो इतिहास रचा है,
अब तक अपने काम से
बनी है बनती रहेगी
गाथाएँ तेरे नाम से।

तू किसी से कम नही
आज बस यह जान ले,
बहती धारा को मोड़ दे
अपनी ताकत पहचान ले।

अखण्ड तेरी शक्ति है,
प्रचण्ड तेरी काया है,
शिकस्त होकर चित्त पड़े,
जिसने भी आजमाया है।

चीर के फलक को तूने
ध्वजा ऊँचा लहराया है,
सर उठा कर देख ले
वह वक्त फिर से आया है।

बड़ी खुबसूरत होगी तू ऐ! नौकरी

शालिनी वर्मा
एम.ए.प्रथम वर्ष, प्रथम सेमेस्टर (हिन्दी)

''बड़ी खुबसूरत होगी तू ऐ! नौकरी
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं
सुख–चैन खोकर चटाई पर सोकर
सारी रात जगकर पन्ने पलटते हैं
दिन में तेहरी और रात को मैगी
आधे पेट ही खाकर तेरा नाम जपते हैं
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं
अंजान शहर में छोटा सस्ता रूम लेकर
किचन, बेडरूम सब उसी में सहेज कर
चाहत में तेरी अपने माँ–बाप और
दोस्तो से दूर हैं
सारे युवा आज तुझी पे मरते हैं
राशन की गठरी और मजबूरियाँ खुद ही
छिपाये भरी ट्रेन में बिना टिकट के
रिस्क लेके आज भी सफर ही करते हैं
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं
इंटरनेट, अखबारों में मुझको तलाशते
तेरे लिए पत्र–पत्रिकाऐं पढ़ते–पढ़ते
बत्तीस तक के युवा कुवाँरे फिरते हैं
तू कितनी खुबसूरत है ऐ! नौकरी
सारे आज तुझपे ही मरते हैं........।।''

स्वतन्त्रता दिवस 15 अगस्त कार्यक्रम में प्राचार्य जी एवं शिक्षणेत्तर सदस्य

15 अगस्त को राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाईयों के स्वयंसेवक

प्रा. इतिहास विभाग द्वारा आयोजित शैक्षणिक यात्रा कपिलवस्तु म्यूजियम में।

15 अगस्त कार्यक्रम में सभागार में शिक्षक एवं छात्र-छात्रा

साइकिल स्टैण्ड का निरीक्षण करते हुए प्राचार्य जी एवं नियंता मण्डल

राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम

भूगोल विभाग द्वारा आयोजित भौगोलिक शैक्षणिक यात्रा
देवी पाटन मन्दिर, तुलसीपुर

प्रा.इतिहास विभाग, द्वारा आयोजित शैक्षणिक लुम्बनी नेपाल में यात्रा

प्रा. इतिहास विभाग शैक्षणिक यात्रा लुम्बिनी में छात्र-छात्रा एवं प्राध्यापक

भूगोल परास्नातक शैक्षणिक यात्रा

प्रा. इतिहास विभाग शैक्षणिक यात्रा लुम्बिनी में छात्र-छात्रा एवं प्राध्यापक

प्राचार्य प्रो. अरविन्द कुमार सिंह सिद्धार्थ वि. में पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त करने वाले प्राध्यापक डा. मुकेश एवं डा. विनोद के साथ विश्वविद्यालय प्रांगण में

अमृत कलश यात्रा

फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम पर व्याख्यान

भौगोलिक शैक्षणिक यात्रा- चीनी मिल, तुलसीपुर

मतदाता जागरूकता कार्यक्रम पर व्याख्यान

दीपोत्सव कार्यक्रम

दीपोत्सव कार्यक्रम

प्रा. इतिहास द्वारा आयोजित एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में छात्र-छात्रा, प्राध्यापक एवं प्राचार्य जी

एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजक दल प्राचार्य जी एवं प्राध्यापक के साथ

दीपोत्सव समारोह में प्राचार्य जी प्राध्यापक एवं शिक्षणेत्तर बन्धु

मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

दीपोत्सव कार्यक्रम

रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम

सभागार में माँ सरस्वती वंदना करते छात्र एवं छात्रा

अम्बेडकर जयन्ती समारोह - छात्रावास में प्राध्यापक एवं छात्र

वार्षिक क्रीड़ा महोत्सव में प्राचार्य जी द्वारा स्मृति चिन्ह मुख्य अतिथि को प्रदान करते हुए

राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों द्वारा योग एवं प्राणायाम

स्वयंसेवकों द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम

रनफॉर यूनिटी कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हुए प्राचार्य जी,
प्राध्यापक, शिक्षोत्तर बन्धु एवं छात्र/छात्राओं

महाविद्यालय में अमृत वाटिका की स्थापना

मिशन शक्ति फेस-4 के अन्तर्गत एनएमएम एवं पुलिस के तत्वावधान में कार्यक्रम

राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों द्वारा स्वच्छता अभियान

भौगोलिक शैक्षणिक यात्रा : नेपाल

राष्ट्रीय सेवा योजना के सप्तदिवसीय शिविर का समापन समारोह

स्वयंसेवकों द्वारा महाविद्यालय परिसर की साफ सफाई

अमृत कलश महोत्सव में प्राचार्य जी द्वारा छात्र-छात्राओं को सम्बोधन

भौगोलिक शैक्षणिक यात्रा : सूपा देवराली

मतदाता जागरूकता रैली

अमृत कलश यात्रा में प्राचार्य जी , शिक्षक एवं छात्र-छात्रा

राष्ट्रीय सेवा योजना समापन समारोह का समूह-चित्र

मतदाता जागरूकता कार्यक्रम में छात्र-छात्रा शपथ लेते हुए

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में प्राणायाम

राष्ट्रीय सेवा योजना के समापन समारोह का समूहचित्र

राष्ट्रीय सेवा योजना के समापन समारोह में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए प्राचार्य जी

अमृत कलश यात्रा कार्यक्रम में प्राचार्य जी एवं छात्रायें कलश के साथ

गणतन्त्र दिवस के पूर्व संध्या पर महाविद्यालय परिसर में स्वच्छता अभियान

राष्ट्रीय सेवा योजना के सप्तदिवसीय समापन समारोह

मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

सप्तदिवसीय शिविर में गोद लिए गये गांव छतहरा में स्वच्छता कार्यक्रम

सप्तदिवसीय शिविर समापन समारोह

सप्तदिवसीय शिविर समापन समारोह

स्वयंसेवकों द्वारा महाविद्यालय की साफ-सफाई

स्वयंसेवकों द्वारा शोहरतगढ़ में स्वच्छता कार्यक्रम

NCC कैंप में प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए केडेट

भौगोलिक शैक्षणिक यात्रा-तुलसीपुर चीनी मिल, बलरामपुर

क्रीड़ा महोत्सव के समापन समारोह में मा. कुलपति जी तथा प्राचार्य जी प्राध्यापकगण एवं शिक्षणेत्तर बन्धुओं के साथ

200 मी. दौड़ में प्रतिभाग करते छात्राएं

मा. कुलपति जी , कुंवर धनुंधर प्रताप सिंह एवं प्राचार्य जी के द्वारा विजेता को ट्राफी देते हुए

वार्षिक क्रीड़ा समारोह की झलकियां

जिला स्तरीय भाषण प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र वितरण

वार्षिक क्रीड़ा समारोह की झलकियां

मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

चेयरमैन जी को क्रीड़ा महोत्सव में प्राचार्य जी द्वारा कैप प्रदान

वार्षिक क्रीड़ा महोत्सव में प्राचार्य जी द्वारा छात्रों का सम्बोधन

मा. कुलपति महोदय को प्राचार्य जी एवं कुंवर धर्नुधर प्रताप सिंह जी द्वारा स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए

ऊँची कूद में प्रतिभाग करते छात्र

विशिष्ट अतिथि को बैज लगाकर स्वागत करती हुई डा. ज्योति सिंह

वार्षिक क्रीड़ा महोत्सव में माननीय कुलपति जी

प्राचीन इतिहास विभाग द्वारा आयोजित एकदिवसीय संगोष्ठी में छात्रों द्वारा प्रस्तुत माडल का निर्णायक मण्डल द्वारा अवलोकन

प्राचीन इतिहास विभाग द्वारा आयोजित एकदिवसीय संगोष्ठी में प्राचार्य जी द्वारा व्याख्यान

एक दिवसीय संगोष्ठी में प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किए छात्र मेडल के साथ

मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह प्रदान करते प्राचार्य जी

अध्यक्षीय उद्बोधन करते प्राचार्य जी

गृह विज्ञान द्वारा आयोजित फूड फेस्टवल कार्यक्रम

फूड फेस्टवल कार्यक्रम का अवलोकन करते प्राचार्य जी एवं शिक्षक

एक दिवसीय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि द्वारा छात्रों के माडल का अवलोकन

प्राचीन इतिहास द्वारा आयोजित एकदिवसीय संगोष्ठी

मतदाता जागरूकता अभियान कार्यक्रम में मा. उपजिलाधिकारी

जन-सवांद साइकिल यात्रा

जन-सवांद साइकिल यात्रा

जन-सवांद साइकिल यात्रा

जन-सवांद साइकिल यात्रा

वार्षिक सांस्कृतिक समारोह में प्रबन्धक महोदय

वार्षिक सांस्कृतिक समारोह में प्रबन्धक महोदय एवं मा. शिक्षक विधायक

गांधी जयन्ती समारोह

गणतंत्र दिवस की झलकियाँ

वार्षिक सांस्कृतिक समारोह में मोबाईल वितरण

वार्षिक सांस्कृतिक समारोह में प्राचार्य जी का उद्बोधन

वार्षिक सांस्कृतिक समारोह में प्रबन्धक जी के साथ समूह चित्र

वार्षिक सांस्कृतिक समारोह में प्रबन्धक जी के साथ समूहचित्र

रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम

वार्षिक सांस्कृतिक समारोह में श्री ध्रुव कुमार त्रिपाठी, मा. शिक्षक विधायक

रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम

रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम

भौगोलिक शैक्षणिक यात्रा पोखरा नेपाल

सात दिवसीय एनएसएस शिविर का हुआ समापन

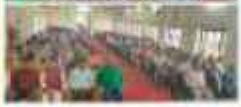

युवाओं को मौलिक कर्तव्य के प्रति जागरूक रहने का किया आह्वान

युवाओं को धैर्य के साथ आगे बढ़ना चाहिए : दरवेश कुमार

युवाओं को धैर्य के साथ आगे बढ़ना चाहिए - क्षेत्राधिकारी

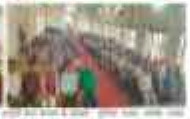

युवाओं को धैर्य के साथ आगे बढ़ना चाहिए - क्षेत्राधिकारी

सात दिवसीय एनएसएस शिविर का हुआ समापन

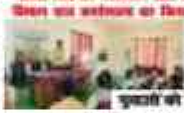

बुद्ध ने लोगों से कहा, जागो समय निकल रहा है

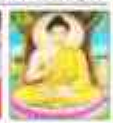

शिवपति पीजी कालेज में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

युवाओं को धैर्य के साथ आगे बढ़ना चाहिए - क्षेत्राधिकारी

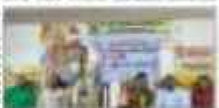

अपनी अभिरुचि के कारण उन्होंने कई विद्यालयों की किया स्थापना - स्व० ठाकुर वेणी माधव सिंह

कुलपति द्वारा छात्रा प्रतिमा शर्मा को ठाकुर वेणी माधव सिंह स्मृति स्वर्ण पदक प्रदान किया।

भविष्य में संवेदनशील तथा राष्ट्र के लिए उपयोगी नागरिक बन सकते हैं: डा० सिंह

शिविर में साफ सफाई, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के प्रति लोगों को किया जागरूक

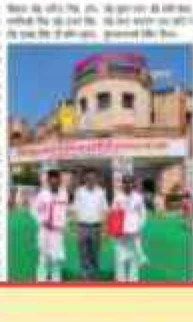

कालेज में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

भाषण प्रतियोगिता में ब्रह्मानंद शुक्ला प्रथम व संदीप त्रिपाठी द्वितीय और शालू कश्यप तृतीय स्थान पर रहीं

गृह विज्ञान अन्तर्गत फूड फेस्टिवल का हुआ आयोजन

डिग्री कॉलेज में हुआ फूड फेस्टिवल का आयोजन

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का किया गया आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कुलपति ने प्रतिभागियों को मेडल तथा सर्टिफिकेट देकर किया सम्मानित

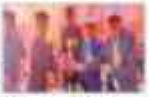

एसपीपीजी कालेज में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

सिद्धार्थनगर: में स्वर्ण पदक से सम्मानित हुई प्रतिमा वर्मा
ठाकुर बेनी माधव सिंह की स्मृति से मिला सम्मान

भारत में राजदंड प्राचीन परम्परा : डा. सच्चिदानंद

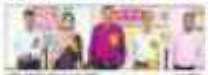

सृष्टि के आरम्भ से ही था भारत में राजदंड की परम्परा : डा. सच्चिदानंद

वार्षिक क्रीड़ा समारोह का हुआ शुभारम्भ

विश्व का सबसे लम्बा एवं लिखित संविधान है - प्रो० एस०के० सिंह

शिवपति महाविद्यालय के एनएसएस के तहत 15 छात्रों का चयन

थाने जाकर छात्रों ने जाना पुलिस की क्रियाकलाप

शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय की 15वीं वर्षगांठ मनाई गई

एसपीपीजी कॉलेज में मनाई गई सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती

वीरेंद्र ग्रामीण स्टेडियम ग्राउण्ड में वार्षिक क्रीड़ा समारोह का हुआ शुभारम्भ

मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथियों को खेल भावना की शपथ दिलाकर किया स्वागत।

कुलपति ने प्रतिभागियों को मेडल तथा सर्टिफिकेट देकर किया सम्मानित

श्रेष्ठ राष्ट्र बनाने में युवा की भूमिका अहम

फूड फेस्टिवल का हुआ आयोजन

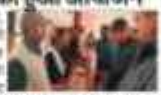

राष्ट्रीय कैडेट कोर की 75 वीं वर्षगांठ मनी

शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय मे मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम का हुआ आयोजन

भारत में राजदंड प्राचीन परम्परा : डा. सच्चिदानंद

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल, बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना, गंगा,
उच्छल, जलधि तरंग।
तव शुभनाम जागे,
तव शुभ आशिष मांगे।
गाहे तव जय गाथा,
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय, जय, जय, जय हे।

राष्ट्रगीत

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलाम् मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलाम् मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्॥1॥
कोटि कोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले
कोटि-कोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले,
अबला केन मा एत बले।
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं
रिपुदलवारिणीं मातरम्॥2॥
तुमि विद्या, तुमि धर्म तुमि हृदि, तुमि मर्म
त्वम् हि प्राणाः शरीरे बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गडी मन्दिरे-मन्दिरे॥3॥
त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदलविहारिणी
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्
नमामि कमलाम् अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलाम् मातरम्
श्यामलाम्।
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्
धरणीं भरणीं
मातरम्॥ 5॥

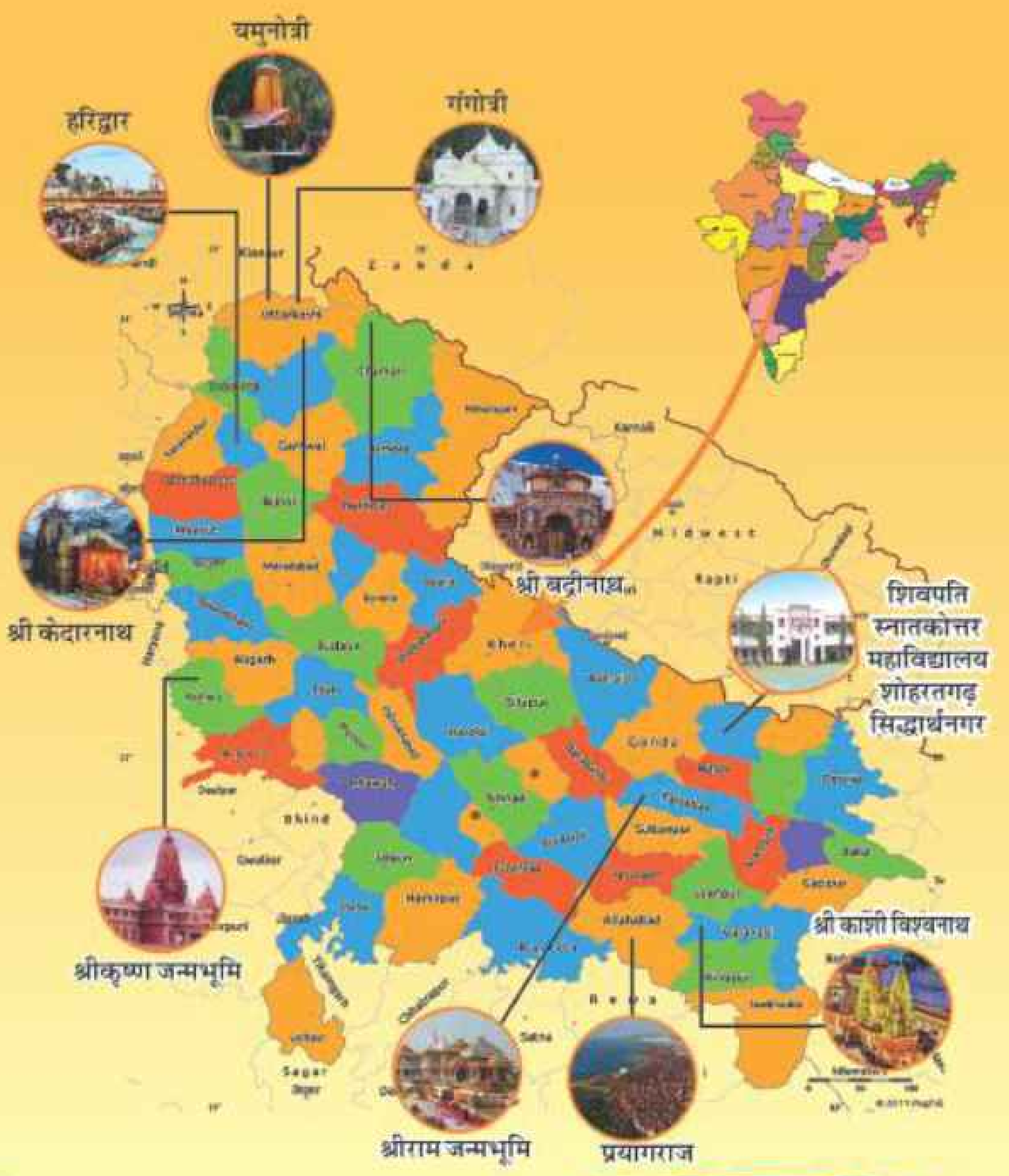

MISSION

उच्च शिक्षित, आत्म-सम्मानित एवं आत्म-विश्वासी
युवा-शक्ति का विकास जो सबल, अनुशासित और
गौरवशाली समाज की रचना में सहायक हो।

To Develop A Highly Educated, Self Respecting And Confidant Youth. Who Can Be Helpful In Construction Of Strong Disciplined And Proud Society.

VISION

तराई क्षेत्र में सबके लिए
उच्च शिक्षा की सुविधा हो।

Higher Education For All In Tarai Region.